

अत्त दीप

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया की ई-पत्रिका

वर्ष - 1

अंक - 1

अर्धवार्षिक (जनवरी-जून 2022)



मार्गदर्शक



डॉ. सी रा प्रसाद
प्राचार्य(प्र.)



डॉ. गीता पाण्डेय
वरीय व्याख्याता



नीतू सिंह
व्याख्याता



डॉ. पूनम कुमारी
व्याख्याता



आरती कुमारी
व्याख्याता



डॉ. मो. तनवीर खां
व्याख्याता



ग्रुप फोटो :

बीएड सत्र 2020-22
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
गया

दिनांक : 5 जनवरी 2022

अर्धवार्षिक (जनवरी - जून 2022)

प्रधान संपादक

डॉ सी रा प्रसाद

मार्गदर्शक

डॉ. गीता पाण्डेय, नीतू सिंह

डॉ. पूनम कुमारी, आरती कुमारी

डॉ. मो. तनवीर खां

संपादक

सुधाकर रवि

संपादन सहयोग

भास्कर प्रियंबुद

अभिषेक कुमार

रवि कुमार

कला संपादन

निधि वर्मा

अनुप्रिया वर्मा

सहयोग

अभय कुमार, नित्यानंद कुमार

उत्तम बर्णवाल, नदीम कौसर

पता : अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय
गया - 823001

वेबसाइट : ctegaya.in

पत्रिका ई-मेल :

ctegayapatrika@gmail.com

पत्रिका ब्लॉग :

attdip.wordpress.com



संपादकीय - 12

साक्षात्कार

डॉ. सी रा प्रसाद - 13

आलेख

ग्रामीण इलाकों में महिला सशक्तिकरण / सरिता कुमारी - 16

Peace education / Chandan Kumar - 23

साहित्य और समाज / संदीप कुमार गुप्ता - 24

जीवन परिचय : भीमराव अंबेडकर / स्वर्ण कमल - 26

कोरोना महामारी की शैक्षिक त्रासदी / कीर्ति कुमारी - 33

शिक्षा और नैतिकता / आशीष रंजन - 35

Impact of Social Media / Prashant Kumar - 36

कैसे बनेगा बिहार कृषि में निर्यातक / नीतीश कुमार सिंह - 39

प्रतियोगिता परीक्षा की समस्याएं / मुकेश कुमार - 39

How British exploited India / Jyoti Rashmi - 45

वर्तमान शिक्षा स्थिति एवं सुधार के उपाय / चंदन कुमार - 48

ईश्वर की खोज / राहुल गोस्वामी - 49

शहर, गांव और तनाव / राहुल देव वर्मन - 53

धर्म के नाम पर ध्वनि प्रदूषण / अभिषेक कुमार - 54

विविधता में एकता / जूही बाला कर्ण - 56

आत्मनिर्भर बनता भारत / मनोहर दत्त मिश्रा - 58

Education is power / Sugandha Priyadarshini - 60

यात्रा वृतांत

गेहलौर घाटी : प्रेम की अनोखी गाथा / संदीप कुमार - 29

A visit to Lotus Temple / Ashutosh Kumar - 59

व्यंग्य

नन्हक पांडे की बोर्ड परीक्षा / उज्ज्वल कुमार मिश्रा - 18

कहानी

A traveller's tale / Nidhi Verma - 31

कविताएं

At the summit / Rajeev kumar - 17

कोरोना का कहर / निधि वर्मा - 19

माँ / कृष्णा मुरारी शर्मा- 23

सीटीई कथा / दीपक कुमार - 27

मन की उलझन / खुशबू कुमारी - 28

आशा है मुझे / अभिषेक कुमार - 28

मातृभूमि बिहार / प्रियांशु राज - 28

मैं हूँ आम इंसान / कमलेश कुमार - 30

विज्ञान / विभा राय - 30

बेबसी / गौरव वर्मा - 32

नारी / दीक्षा रानी - 32

युद्ध होता बड़ा विभीषक / आनंद कुमार - 35

आ खुद को ढूँढ ले तू / जूही बाला कर्ण - 38

Memory / Ajay Kumar - 40

जिंदगी / मोहित कुमार ओझा - 42

जुस्तजू / चंदन कुमार - 42

जिंदगी उदास है / मनीषा कुमारी - 46

इतिहास तुम्हें क्यों माफ करे / राहुल कुमार - 47

उसकी राह / भास्कर प्रियंबुद - 25

कोई सामान नहीं वो / राज कुमार - 49

अच्छा है क्या / प्रिंस राज - 54

मेरे शिक्षक, मेरी प्रेरणा / अनुप्रिया वर्मा - 55

वृक्ष और हम / सचिन कुमार - 55

स्टाइल / मनीष कुमार - 44

मुझे पढ़ना है / अनुज कुमार - 44

क्यों? / राकेश कुमार - 42

प्रकृति बनाम मानव / अजीत कुमार -25

ऐ काश की यूँ होता / अवनीकान्त अनु -26

लफ़्ज़ आजाद है / अवनीकान्त अनु - 60

नदी / सुधाकर रवि - 61

संस्मरण

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण / अनुप्रिया वर्मा - 20

राष्ट्रीय एकता शिविर की यादें / रवि कुमार - 37

प्रेरणा

जीवन : संघर्ष और उड़ान / मो. निज़ाम - 41

खुद पर विश्वास रखें / गौरव भारती - 43

प्रेरणा : दशरथ माँझी / गुंजन कुमार - 50

पुस्तक वार्ता

मेघदूत - एक परिचय / आलोक कृष्णा - 47

Dark Horse / Sunny Raj - 51

फ़िल्म की बातें

जय भीम / रौशन कुमार - 52

पेंटिंग्स

निधि वर्मा - 62

अनुप्रिया वर्मा - 63

नीरजा कुमारी - 65

कीर्ति कुमारी - 64

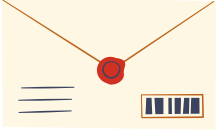
रौशनी कुमारी - 66

आलोक कृष्णा - 64

मानचित्र

राजकिरण कुमार पटेल - 70

फोटोग्राफी - 67



संदेश



डॉ. विनोदानंद झा
निदेशक

शोध एवं प्रशिक्षण, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

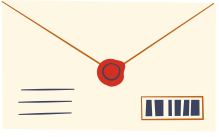
“

प्रथम अंक, 'अत्त दीप' मौलिक एवं रचनात्मकता का आरसी हो। पत्रिका विविधता में एकता, राष्ट्रीयता, शिक्षक शिक्षा के नए रास्ते बनाए, मेरी यह शुभकामना है। सीटीई, गया की पूरी टीम को मेरी ओर से हार्दिक बधाईयां !

सफलताओं का आकांक्षी...

”





संदेश

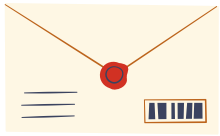


डॉ सी रा प्रसाद

प्राचार्य (प्र), अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया

“ अत्त दीप, दीपा , सुजाता, बुद्ध, विष्णुपद, बोधिवृक्ष, तर्पण, अर्पण , गयासुर, बोधगया, गया ; पहाड़ियों से घिरी घरती पर कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन की पत्रिका का प्रथम अंक ! कितना भाग्यशाली हूं मैं जिसे प्रकाशित कर पा रहा हूं। ई पत्रिका । जैसे डायट ' कुमार बाग ' (प. चंपारण) का प्रथमांक मुझे ही निकालने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डायट पिरौटा , भोजपुर (आरा) का प्रथम अंक का संपादक मैं ही रहा। 'शिक्षार्थी' के तीन शानदार अंक मैंने प्रकाशित कराये। पत्रिकाएं, लघु पत्रिकाएं... सब पुस्तकों शिक्षिकाओं की तरह पढ़ाती हैं। समस्याओं का निदान ढूंढती हैं, क्रियात्मक शोध करती हैं, तब सार्थकता प्राप्त होती है । शर्त यह है कि संस्थानिक पत्रिकाएं अपनी ताजगी बनाए रखें....टटकापन जरूरी है। बासीपन से ऊब की गुंजाइश बनती है, जो स्वास्थ्यकर नहीं। रचनाओं के संपादन में उसकी कसावट एवं मौलिकता का ख्याल संजीदगी से रखना लाजिमी होता है । गया साहित्यकारों की भी धरा है । यहां जानकी वल्लभ शास्त्री (मैगरा) मोहनलाल महतो 'वियोगी', हंस कुमार तिवारी, शैवाल, संजय सहाय (संपादक 'हंस', पटकथा लेखक) जैसे रचनाकारों का गढ़ रहा है । हिंदी साहित्य सम्मेलन, गया की गतिविधियां देशभर में चर्चित हैं । मुझे विश्वास है कि मेरी पत्रिका शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में अलख जगाएगी, एक नया रास्ता बनाएगी...! पर्वत पुरुष दशरथ मांझी(गया, गेहलौर) की तरह पर्वतों को काटकर रास्ता अस्पताल तक ले जाएगी। हमारे टीचर कैंडिडेट्स एवं टीचर एड्युकेटर्स इस कार्य के संपादन में समर्थ हैं।





संदेश



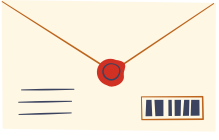
डॉ. गीता पाण्डेय

वरीय व्याख्याता, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया



यह पत्रिका सत्र 2020-22 के प्रशिक्षुओं द्वारा किये गए सार्थक प्रयासों का प्रतिफल है। यह प्रयास महात्मा बुद्ध की प्रचलित उक्ति “अत्त दीपो भव” को सार्थक करता है। साथ ही महात्मा गाँधी के प्रायोगिक ज्ञान की संकल्पना को भी फलीभूत करता है। दोनों ही महान विभूतियों द्वारा आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी गयी। इस पत्रिका का शीर्षक भी इन विचारों का ही प्रतिनिधित्व करता है। इस पत्रिका की संकल्पना दोनों के विचारों से प्रेरित हो कर ही की गयी और यह ध्यान रखा गया कि सभी प्रशिक्षु अपनी रुचि, क्षमता, कौशल के अनुरूप इस पत्रिका के अंग बने और इसके प्रकाशन में सहभागी भूमिका निभाएं ताकि उन्हें पत्रिका के प्रकाशन से सम्बंधित व्यावहारिक पक्षों का ज्ञान तथा अनुभव प्राप्त हो सके। यह प्रयोग प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के विकास में भी उपयोगी है। इसके द्वारा प्रशिक्षुओं में संपादन, लेखन, ग्राफिक डिजाइन से सम्बंधित क्षमताओं के साथ-साथ नेतृत्व क्षमता, आत्म-विश्वास, सृजनात्मकता, समूह निष्ठा, सहयोग भावना, आपसी समन्वय आदि से संबंधित मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक गुणों का विकास भी संभव है। इस कार्य के द्वारा हम छात्रों में सीखने की ललक पैदा कर पाए, सीखने के प्रति रुचि उत्पन्न कर पाए, यही हमारे कार्य की सफलता है और यही शिक्षण की सफलता है। पत्रिका का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े हर छोटे-बड़े कार्य प्रशिक्षुओं द्वारा स्वयं सम्पादित किये गए। यह पत्रिका प्रशिक्षुओं द्वारा आत्मनिर्भरता की दिशा में उठाया गया महत्त्वपूर्ण कदम है। यह हम सभी शिक्षकों को भी गर्व की अनुभूति प्रदान करता है। इस पत्रिका से जुड़े सभी पक्षों से सम्बंधित जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन करने के लिए सभी प्रशिक्षु बधाई के पात्र हैं। इस पत्रिका में साहित्य की सभी विधाओं को स्थान देने का सफल प्रयास किया गया है। कहानी, कविता, संस्मरण, पुस्तक वार्ता, प्रेरणास्पद लेख, कलात्मक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में अपनी दक्षताओं को इस पत्रिका के माध्यम से कुशलतापूर्वक प्रदर्शित किया गया है। इस पत्रिका ने संस्थान के लिए आधारशिला प्रदान की है। आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में संस्थान से जुड़ने वाले भावी प्रशिक्षुओं के लिए मार्ग निर्देशिका की भूमिका निभाएगी। मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी प्रशिक्षुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ और कामना करती हूँ कि उनके द्वारा किया गया यह प्रयास संस्थान के लिए मील का पत्थर साबित हो।





संदेश



नीतू सिंह
व्याख्याता, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया



"मेहनत इतनी खामोशी से करो कि
तुम्हारी सफलता शोर मचा दे।"

मेरे लिए यह बहुत ही प्रसन्नता तथा गर्व की बात है कि अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया के छात्राध्यापकों द्वारा ई-पत्रिका 'अत्त दीप' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका का शीर्षक ही अपने आप में एक पूर्ण संदेश है। अत्त दीप - अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो। गौतम बुद्ध के इस कथन का तात्पर्य ही यही है कि किसी दूसरे से उम्मीद लगाने के बजाय अपनी प्रेरणा खुद बनो, खुद तो प्रकाशित हो ही दूसरों के लिए भी प्रकाश स्तंभ बनो।

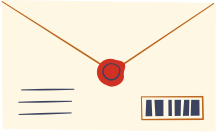
छात्राध्यापकों द्वारा इस प्रकार का रचनात्मक प्रयास न केवल उनके सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि उनके बाद की कक्षाओं के छात्राध्यापकों के लिए एक प्रेरणा स्रोत भी है। आज हम सब डिजिटल क्रांति की दहलीज पर खड़े हैं। कोविड-19 ने भी हमें डिजिटल शिक्षा की ओर उन्मुख किया है। हमें परंपरागत सोच एवं ढंग से बाहर निकलते हुए नवीन आयामों को शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से जोड़ने की दिशा में निरंतर सार्थक पहल करनी है। डिजिटल प्रक्रिया के माध्यम से महाविद्यालय के छात्रों द्वारा ई - पत्रिका 'अत्त दीप' का प्रकाशन इस दिशा में एक सार्थक पहल है।

महाविद्यालय के प्रतिभा संपन्न छात्राध्यापकों ने जिस मेहनत लगन से इतने अल्प समय में इस ई-पत्रिका 'अत्त दीप' का संकलन एवं संपादन किया है, पत्रिका के कवर को जो सुंदर कलेवर दिया है, इसके लिए उन्हें कोटिश: धन्यवाद देना भी कमतर प्रतीत हो रहा है। विभिन्न विषयों का जिस कलात्मकता से संयोजन किया गया है, वह भी प्रशंसनीय है।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किसी भी शैक्षणिक संस्था की महत्वपूर्ण गतिविधि होती है। इसमें छात्र-छात्राओं तथा अध्यापकों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ महाविद्यालय के शैक्षणिक, साहित्यिक, खेलकूद, सेमिनार, वेबीनार तथा अन्य गतिविधियों को प्रकट करने का अवसर प्राप्त होता है।

मुझे उम्मीद है कि पत्रिका में महाविद्यालय की श्रेष्ठ शैक्षणिक व अन्य गतिविधियों का प्रकाशन किया जाएगा, जिससे यह पत्रिका सभी के लिए उपयोगी साबित होगी। इसके निरंतर प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।





संदेश



आरती कुमारी

व्याख्याता, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया



"Education means that process by which character is formed, strength of mind is increased and intellect is sharpened as a result of which one can stand on one's own feet."

- Swami Vivekananda

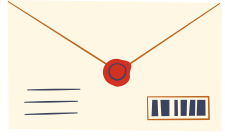
ज्ञान एवं मोक्ष की भूमि गया में अवस्थित अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षुओं द्वारा इस संस्थान की पत्रिका का प्रकाशन अत्यंत ही हर्ष एवं उल्लास का विषय है। इस पत्रिका का शीर्षक 'अत्त दीप' भगवान बुद्ध की शिक्षा का ही एक अंश है। जिसका अर्थ है कि अपना दीपक स्वयं बनो अर्थात् आत्मज्ञान के प्रकाश से ही सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ा जा सकता है। इस पत्रिका के प्रकाशन में सत्र 2020-22 के प्रशिक्षुओं द्वारा अत्यंत ही सराहनीय प्रयास किया गया है। जो उनकी प्रतिभा, लगन, सृजनात्मक एवं कलात्मक ज्ञान की अभिव्यक्ति का परिचायक है।

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान प्रशिक्षुओं ने प्रकाशन से जुड़े हर छोटे-बड़े पहलुओं पर अपना गंभीर प्रयास कर इस पत्रिका के हर पृष्ठ को शानदार बना दिया है। कविता, कहानी, लेख आदि के माध्यम से स्पष्ट कर दिया है कि प्रशिक्षु न सिर्फ अपनी व्यवसायिक शिक्षा बल्कि इससे आगे साहित्य की अन्य विधाओं में कलात्मक अभिव्यक्ति में दक्षता रखते हैं, जिसके लिए सभी प्रशंसा के पात्र हैं। प्रशिक्षुओं द्वारा इस पत्रिका का सफल संपादन एवं प्रकाशन न सिर्फ अभी बल्कि भविष्य में इस महाविद्यालय में आने वाले प्रशिक्षुओं हेतु एक प्रेरणा का स्रोत बनेगा एवं साहित्य की नई विधाओं जैसे नाटक, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत आदि को भी कलम बंद करने का आधार बनेगा। शिक्षा को परीक्षा से आगे अपनी प्रतिभा के चतुर्मुखी विकास एवं अपने मानसिक सृजनात्मक शक्ति को कलमबद्ध करने को तत्पर यह पत्रिका उज्ज्वल भविष्य के पथ का मार्गदर्शन करेगी। सभी प्रशिक्षुओं को इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं एवं शुभाशीष।

"The destiny of India is being shaped in her classroom."

- Kothari Commission





संदेश



डॉ. मो. तनवीर खां

व्याख्याता, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया

“

"जरूरी नहीं रौशनी चरागों से ही हो
इल्म (शिक्षा) से भी घर रौशन होते हैं "

लिखना जरूरी हो जाता है जब बात अपने शागिर्दों की हो, साथ ही साथ और लाजमी भी बन जाता है जब बात उनके हक और हुक्क की हो। आइए आज हम ई-पत्रिका के इस मौजूं पर बात करते हैं जिसका उनवान है अत्त दीप, जिसमें हमें इल्म को खुद रौशन करने की सीख और सलाहियत दोनों मिलती है।

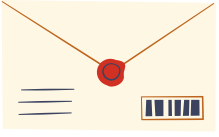
इल्म के दानिश्वर भी यही कहते हैं कि हकीकतन दूसरों को नसीहत देने से बेहतर है कि अगर जिंदगी में मौका मिले तो बात चाहे इल्म, फन, कयादत, सआदत, सोच, गौरो फिक्र, इखलाक, जज्बात, तरबियत और तजुर्बा की हो वो खुद में पैदा करनी चाहिए। जिससे की दूसरों के उपर मोहताज बनके मुफ्तिसी की जिंदगी न गुजारनी पड़े।

जिंदगी में जंग इबादत है पर वह जंग ना अपनों के साथ और ना ही गैरों के साथ हो। अगर जंग लाजमी है तो वह खुद के साथ हो, जिससे कि आप अपनी खयालात का इज़हार गौरो फिक्र के साथ कर सकें और साथ ही साथ एक अच्छी सोच पैदा कर सकें, जहां आप और आपका मुआशरा दोनों एक बेहतरीन मुकाम हासिल कर सके।

ये अंदाजे गुफ्तगू हमें अपने प्यारे बच्चों के तरफ ऐसे मोड़ता है जैसे ऊंची-ऊंची चट्टानों पर सुबह की पहली रौशनी या यूं कहें कि सुबह की पहली शबनम। समझदारों के लिए इशारा ही काफी होता है या यूं कहें इल्म से रूबरू। जिस इल्म और तरबियत की बात हम करते हैं, ये दोनों फन हमारे बच्चों की ई-पत्रिका 'अत्त दीप' में साफ तौर पर झलकता है। बात चाहे वाक्या, असार, अफसाना, निगार, तरनुम की हो, इसकी सुंदरता, नई-नई पहलुओं, अपनी-अपनी जिम्मेदारियों या कयादत की हो, बारीकियों के साथ इस ई-पत्रिका में देखने को मिल रही है।

”





“

जिक्र है कि चोट के घाव वक्त के साथ भर जाते हैं पर अल्फाज के नहीं। जाहिर है ये अल्फाज ना हमें चैन से जीने देते हैं और ना ही मरने देते हैं। अल्फाज की सही अदायगी ही आपको अपनी मुकाम तक पहुंचा सकती है। इस अत्त दीप ई पत्रिका में हम सभी इसकी चमक से खबरू हो रहे हैं।

कहते हैं - इल्म रूह की गिजा है और यह हासिल होता है तरबियत से , शिद्दत से, बेपनाह चाहत से, यानी आपको अपने बड़ों के साये में पलना होगा, तपना होगा तब जाके मुक्कमल रूह को इल्म की खुराक नसीब होगी और इस अत्त दीप में हमने रूह को जिस्म से मिलते देखा है।

डिजिटल दुनियां एक नई सोच है और साथ ही साथ फिक्र भी। हम इससे मुंह नहीं मुड़ सकते हैं। इतिहास गवाह है कि इंसानों ने जब-जब नई सोच और फिक्र को अपनाने से इनकार किया तब-तब वह घाटे का सौदा साबित हुआ और अपना वजूद भी खोया इसलिए हमें डिजिटल दुनियां में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। जिससे कि हमारी तरक्की मुसलसल हो सके। आज इस नई तकनीक का इस्तेमाल खेल में, विज्ञान में, अदब में, सेमिनार में और मुखतलिफ जगहों पर देखने को मिलता है।

मैं इस शे'र के साथ अपने बच्चों का हौसला अफजाई और शुक्रिया अदा करना चाहूंगा कि -

"आगाज़ से अंजाम का सफर जानता हूँ मैं
दुश्वारे कुन राहे गुजर जानता हूँ मैं,
मुझे न कभी प्यास की शिद्दत सताएगी
पत्थर निचोड़ने का हुनर जानता हूँ मैं।"

बहुत-बहुत शुक्रिया

- डॉ. मो. तनवीर खां

”

संपादकीय

इस साल बेस्ट अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म कैटेगरी के नॉमिनी में भूटान की एक फ़िल्म शामिल की गई है। यह नॉमिनेशन बेहद चौकाने वाला है। इस बार पांच देशों की फिल्मों को नॉमिनेशन में जगह दी गई है। दुनियां भर के अनगिनत फिल्मों के बीच इस कैटेगरी में जगह बनाने की होड़ रहती है। एक छोटे से देश भूटान, जिसका सिनेमा का इतिहास बहुत नया है, इस कैटेगरी में जगह पा जाता है। यह हुआ सिर्फ और सिर्फ अपने नयापन और मौलिकता के कारण।

आप कितना भी नया लिखना शुरू क्यों ना कर रहे हो। अगर आपकी लेखनी में नयापन और मौलिकता है तो वह बड़ी से बड़ी कृति जैसा सम्मान पाने का हकदार होती है। मौलिकता में ही वह शक्ति है जो हमें भीड़ के बीच से निकाल कर सबसे अगली पंक्ति में शामिल करवाती है।

अमूमन लिखना शुरू कर रहे लोगों में सवाल आता है कि लेखनी को कैसे शुरू करें? क्या लिखें? किस विषय पर लिखें? इस सवाल के जवाब में बहुत कुछ बोलने से बेहतर है कि मशहूर फिल्मकार मार्टिन स्कोर्सेसे का कथन ही बता दिया जाए, जो एक मुक्कमल जवाब है। "The most personal is the most creative." यानी सबसे व्यक्तिगत चीज़ सबसे ज़्यादा रचनात्मक होती है। यानी उन विषयों पर लिखना आसान है जो आपका निजी है। जिन भावनाओं को आप सबसे ज़्यादा महसूस किए हों उन्हें आसानी से शब्दों में ढाला जा सकता है। कभी भी यह सवाल मन में आए कि क्या लिखें? तो अपने मन के उन परतों को टटोलिए जिसका असर आप पर सबसे ज़्यादा है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि भाषा मानव सभ्यता का नायाब खोज है। यही वह चीज़ है जो पशु और इंसान के बीच स्पष्ट लकीर खींच पाती है। कभी सोच कर देखने पर कि भाषा ना होती तो जीवन कैसा होता? ऐसा लगता है कि पूरी सभ्यता ही ढह

जाती। इसलिए भाषा जब हमारे पास है तो इसका भरपूर इस्तेमाल होना चाहिए। इस संदर्भ में संस्कृत में एक कथन है 'वचनं किम् दरिद्रम्' अर्थात व्यक्ति धन से भले दरिद्र हो लेकिन शब्द और भाषा से दरिद्र नहीं होना चाहिए। इस धन का दिल खोल कर उपयोग होना चाहिए।

"शब्द किसी जादू से कम नहीं होते, इसमें अथाह शक्तियां होती है। यह घाव दे भी सकते हैं और घाव भर भी सकते हैं।" मशहूर नॉवेल हैरी पॉटर सीरीज का यह कथन हर लिखने-पढ़ने वालों के डायरी के पहले पन्ने पर लिखी होनी चाहिए। यह कथन हमेशा आपको एक जादूगर होने का अहसास कराएगी। लिखने-बोलने के लिए ऐसे शब्द चुनें कि सामने वाले पर जादू जैसा असर हो जाए। साथ ही यह जिम्मेदारी भी देगी कि आपको इन शब्दों का इस्तेमाल लोगों को प्रेरित करने, उनको सम्बल देने के लिए करना है।

दोस्तों, इस पत्रिका में प्रकाशित रचना आप में से बहुत की अपनी पहली रचना होगी। अपनी रचना के प्रति आत्मविश्वास जताते हुए निरंतर आगे भी लिखते रहिये। यहां छपी आपकी रचना पहली भले हो लेकिन आखिरी नहीं होनी चाहिए। अपनी रचना को हेय नहीं समझते हुए आगे भी लिखते-पढ़ते रहना चाहिए। हम सब जो कुछ भी लिख रहे उसका महत्व है। लिखना बहुत चिंतन और मेहनत का काम है। इसलिए आप जो कुछ भी लिख रहे हैं उस पर गर्व करें।

इस अंक के प्रकाशन में पत्रिका टीम ने काफी मेहनत की है। रचनाकारों ने काफी सहयोग किया। पत्रिका के मार्गदर्शक व महाविद्यालय के अभिभावक तुल्य शिक्षकों ने हर पल मार्ग दिखाया। सबका आभार। 'अत्त दीप' का कारवां यूं ही बढ़ता रहे।



- सुधाकर रवि

साक्षात्कार

महाविद्यालय की पत्रिका 'अत्त दीप' के लिए प्राचार्य सी रा प्रसाद का साक्षात्कार अभिषेक कुमार(87) और रवि कुमार(86) ने लिया। इस साक्षात्कार में प्राचार्य ने अपने बचपन के दिनों से लेकर शिक्षा से जुड़े अपने सुझाव एवं अन्य विषयों पर बातचीत की है। प्रस्तुत है उनसे हुई बातचीत का संपादित अंश:-

• आपकी प्राथमिक शिक्षा कैसे शुरू हुई?

उत्तर: मेरी शिक्षा गांव के प्राथमिक विद्यालय से शुरू हुई। छोटा-सा विद्यालय था, खपरैल छत, मिट्टी की दीवारें थीं। आंधी-पानी में हर साल छावनी उसकी उड़ जाती थी, दीवारें ढह जाती थीं। दीवारें ढहने के बाद हम लोग हर साल मिट्टी के लोंदे से दीवारों को बनाते थे और खगड़ा से उसको दबा के रखते थे, ताकि दीवारें गिरे ना। स्कूल में दो-तीन टीचर होते थे, खेल का मैदान बड़ा-सा था। स्कूल में बागवानी भी अच्छी होती थी। गिनती-पहाड़ा से हम लोग दिन की शुरुआत करते थे, इसी तरह से हमारी प्राथमिक शिक्षा शुरू हुई।

• शिक्षा के क्षेत्र में आने का विचार आपको कैसे आया?

उत्तर: गांव में जब मैं रहता था तो मुझे याद है कि मुश्किल से 6-7 वर्षों का होऊंगा, तब गांव में बसहा बैल लेकर एक बाबा आए तो मेरी मां ने पूछा कि 'बाबा यह बताइए मेरा बेटा पढ़ेगा कि नहीं?' तो बाबा बोले कि पढ़ेगा और पढ़ लिख कर शिक्षक बनेगा। मेरे मन में भी शिक्षक की एक गुरु वाली धारणा बनी हुई थी तो लगा कि मैं भी शिक्षक बन सकता हूँ। इसके बाद मैं जब हाई स्कूल में आया तो वहाँ सौभाग्य से एक ऐसे शिक्षक मिले (श्री रामविलास सिंह जी) जो अंग्रेजी के बहुत बड़े विद्वान थे और पूरे जिले में उनका नाम था। धोती कुर्ता पहनते थे और अंग्रेजी पर उनकी बहुत कमांड थी। मैं उनके चटाई का चेला हो गया। घर में पैसे इतने नहीं थे कि मैं उन्हें पैसे देकर पढ़ सकता था। लेकिन जो थोड़ा बहुत मिलता था दस-बीस रूपए हम गुरु जी की सेवा में दे देते थे, पर वह नहीं लेते थे। कहते थे 'कोई बात नहीं तुम मेरे पास आकर पढ़ो'।

वह हमारे शिक्षक ही नहीं थे बल्कि वह हमारे माता-पिता भी थे और हमारे दोस्त भी। एकदम दोस्ती का व्यवहार था उनके साथ और हर बात मैं बेझिझक उनसे पूछता था। उन्होंने कहा था कि बेटा देखो बीए कर लेना और उसके बाद बीएड कर लेना। बीएड कर लोगे ना तो दो पैसे की नौकरी कहीं ना कहीं मिल जाएगी। टीचर बन जाओगे। और सच में बीएड करने के बाद निश्चित रूप से हमको हाई स्कूल में नौकरी मिल गई। हाई स्कूल में भी मैंने लगभग दो वर्षों तक पढ़ाया और फिर मैं 'बिहार शिक्षा सेवा' में आ गया।



• प्रश्न: शिक्षा और शिक्षकों के बदलते रूप के बारे में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: देखिए, इस संबंध में मेरा यह कहना है कि सौभाग्य से मुझे अमेरिका में भी तीन महीने रहने का मौका मिला। वहां मैंने 'एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी' के कॉलेज में शिक्षण विधियों के बारे में जानकारी ली। मैंने महसूस किया कि अपने देश में जो तरजीह शिक्षा को दी जानी चाहिए, वह यहां नहीं मिल पा रही है। कारण जो भी हो। पचहत्तर साल हो गए आजादी के, आज हम अमृत महोत्सव मना रहे हैं। लेकिन यह अंदर से बहुत खलता है कि शिक्षा को वह प्राथमिकता नहीं दी जा रही है। बाहर के देशों में शिक्षा बहुत आगे हैं, वहाँ शिक्षक वे बनते हैं जो समाज के, देश के सर्वश्रेष्ठ लोग होते हैं। दूसरी बात यह है कि जो शिक्षण के पेशे में आते हैं मन से या बेमन से, मैं उनसे यही निवेदन करूंगा कि वह प्रयास यह करें कि जो उनका दायित्व है, जिसकी रोटी वे खाते हैं, उनका मोल समझे। खूनी रोटी ना खाएं।

बल्कि दूधवाली रोटी खाएं और उनका जो दायित्व है उसका पालन करें। इधर-उधर देखने का नहीं, दूसरे को दोषी कहने का नहीं। यह तय करें कि हमको क्या प्राथमिकता देना है? शाम को वह सोचे कि मैं कर रहा हूँ क्या इस भोजन पर मेरा हक है? इतना तो लोगों को करना ही चाहिए कि हम जो रोटी खा रहे हैं उस रोटी का कर्ज अदा करते चलें। थोड़ा सा उन्नीस-बीस ही अलग बात है, लेकिन अपने कर्तव्यों का निर्वहन हर हाल में मनुष्यों को करना चाहिए।

शिक्षक उतना कोई खास ध्यान देने वाले नहीं हैं, जैसा कि सूरत हैं।

• **प्रश्न: महाविद्यालय में शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिये अपने प्रयासों को जिक्र करें।**

उत्तर: इसके पहले तो मैं स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन क्षेत्र में था। आपको मालूम हो कि मैं मूल रूप से बिहार शिक्षा सेवा का पदाधिकारी हूँ। मैं एकेडमिक सेक्शन से नहीं हूँ। बावजूद इसके, मेरा रुझान शिक्षण की रही है। एक शिक्षक के रूप में मैं अपने को ज्यादा अच्छा महसूस करता हूँ और नया-नया कुछ करना मुझे अच्छा



• **कोरोना काल में शिक्षा के स्तर में काफी गिरावट आई है, विद्यालयी स्तर पर आप इससे कैसे निपट रहे हैं?**

कोरोना की इस महामारी के काल में हमने खास करके बीएड में, ऑनलाइन क्लासेज कभी रुकने नहीं दी, लेकिन यह तो मजबूरी थी हमारी। इसीलिए ऐसा चलता रहा। इसकी भरपाई के लिए करना यह होगा कि हमारे जो विद्यार्थी हैं, उनको अपने किताबों पर ज्यादा एकाग्रचित्त होना होगा। जहां वह प्रतिदिन चार घंटे पढ़ते थे या पांच घंटे पढ़ते थे तो एक घंटा और ज्यादा पढ़ना होगा। मूल तत्व यह है कि विद्यार्थी कितना अध्ययनशील है। ये तो उनको होना होगा। बाजार से किताब ले, लाइब्रेरी से किताब लें, अपने दोस्तों से किताब लें। अपने शिक्षकों से ज्यादा से ज्यादा सहयोग ले। करके यह काम हमारे बीएड के विद्यार्थियों को ही ज्यादा-से-ज्यादा करना होगा, वरना हमारे

लगता है। यह चीज मैंने बाहर में भी देखा। नयापन से अध्यापन में एक ताजगी आती है। एक टटकापन आता है। और बस घिसे-पिटे ढंग से हम किसी चीज को पढ़ा रहे हैं तो वह तालाब का पानी हो जाता है। और मेरा मानना है कि शिक्षा को नदियों का पानी होना चाहिए। बहती नीर जैसा। यह मेरी धारणा है। इसीलिए नव्यता उसमें बहुत जरूरी है। जो भी अध्यापन हो रहा है, शिक्षक उसे घिसे-पिटे ढंग से न पढ़ा दें बल्कि अपने किसी टॉपिक को इतने बढ़िया से दर्शाए कि छात्रों को मज़ा आ जाए। और सहसा छात्र 'वाह!' कह उठे। और वह पढ़ते हुए अच्छा महसूस करें।

• **आप खाली समय का उपयोग कैसे करते हैं?**

उत्तर: प्रकृति ने निर्धारित समय दे कर के मनुष्यों को इस धरती पर भेजा है। और, वह समय प्रतिदिन घटता जा रहा है। हम रोज बूढ़े होते जा रहे हैं, मौत की ओर

जा रहे हैं, जो हम भूल जाते हैं। इसको याद रखना बहुत जरूरी है। सही में शेक्सपियर ने बहुत अच्छा कहा था, मैंने उसे अपने टेबल पर भी लगाया हुआ है कि 'Time Kills its Own Killer'. हर एक छात्र को, हर एक शिक्षक को या हर एक इंसान को अपने समय की सर्वाधिक कद्र करनी चाहिए। हम कहते तो हैं कि 'Time is Money'. बहुत सारी बातें समय के विषय में करते हैं। लेकिन, सबसे ज्यादा अपव्यय इसे। हम तो समय का ही करते हैं। आदमी अगर समय को पैसा की तरह खर्चा करना शुरू कर दे और समय का ख्याल रखना तो ऊंचाइयों को छू सकता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। वह कुछ भी बन सकता है। उसमें ऐसी ताकत भरकर प्रकृति ने भेजा है, इसीलिए समय की इज्जत करना और एक-एक पल का सदुपयोग करना बड़े पुण्य का काम है। यह फर्ज है, यह आपका कर्तव्य है और यही जिंदगी का मूल्य है।

• **आप प्रतिदिन फेसबुक पर सामाजिक एवं शिक्षा के मुद्दों पर लिखते हैं, इसके लिए कैसे प्रेरित हुए?**

उत्तर: जैसा कि मैं आप लोगों को हमेशा बताता रहा हूँ हमेशा कि गुरु कोई भी बन सकता है, कहीं से भी शिक्षा पाई जा सकती है। ऐसे लिखता तो मैं बहुत दिनों से था। अभी हमारी 'प्राध्यापक' नामक नवीं पुस्तक प्रकाशित हुई है। एक पुस्तक है हमारी 'सवारों' उसमें मैंने यूएसए के अपने अनुभव के बारे में लिखा है, यानी लिखता तो मैं था लेकिन लिखने में नियमितता नहीं थी। मूड हुआ, दर्द हुआ, कहीं कुछ चुभा तो लिख लिया। लघु कथाएं वैसे मैं खूब लिखता रहा हूँ। कई लघु कथाओं के लिए पुरस्कार भी मिले हैं। राष्ट्रीय भाषा परिषद् ने अभी हाल में ही 'टीचर्सएजुकैटर की डायरी' पर साठ हजार रुपये का पुरस्कार दिया है। लेकिन, जब मैं डायट, भोजपुर में पदस्थापित था तो एक दिन शाम को हमारे साथ एक शिक्षक साथ में स्टेशन पर बैठे हुए थे। और बैठने के क्रम में फेसबुक पर उन्होंने दिखाया कि संजय कुमार नाम के बिहार शिक्षा सेवा के एक पदाधिकारी शिक्षा पर ही प्रतिदिन एक पेज लिख रहे थे। तो पता नहीं कैसे यह बात हमारे अंदर तक चली गई। और मैंने भी ये शुरू कर दिया। विगत डेढ़ वर्षों से मैं फेसबुक पर प्रतिदिन लिख रहा हूँ और चाहे जो हो जाए, एक पेज प्रतिदिन लिखने का मैंने प्रण किया है। मैं भी प्रेमचंद की तरह जब तक कुछ लिख ना लूँ तब तक रात का खाना नहीं खाता। मैं

अभी तक इस प्रण का निर्वहन कर रहा हूँ। और मुझे विश्वास है कि जीवन के शेष दिनों में भी मैं एक पेज लिखना कभी छोड़ूंगा नहीं। और ये सब भी पुस्तक के रूप में एक बार जरूर आएंगी।



अभिषेक कुमार
रौल - 87
सत्र - 2020-22



रवि कुमार
रौल - 86
सत्र - 2020-22



• **अंत में आप छात्राध्यापकों को क्या संदेश देना चाहेंगे?**

उत्तर: टीचर कैडिडेट को मैं यही संदेश देना चाहूंगा कि वह यह समझ लें कि वास्तव में आज भी अपने देश में तो शिक्षण जगत में अपार संभावनाएं हैं। जहां तक पैसे की बात है इसमें पैसा भी अकूत कमाया जा सकता है और शोहरत भी बहुत कमाया जा सकता है। शिक्षक का जो काम है वह आप खूब मनोयोग से करिए। आप एक अच्छे शिक्षक बनिए। आज नहीं तो कल इस देश में शिक्षा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान देना पड़ेगा और तभी हम एक विकसित राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं।

भारत के ग्रामीण इलाकों में महिला सशक्तिकरण का स्वरूप

आर्ट: अनुप्रिया वर्मा



सरिता कुमारी
रौल - 27
सत्र - 2020-22



अबला नहीं सबला हूँ मैं, कायर नहीं निर्भीक।
तोड़ दूँगी रुढ़िवादिता की बैड़ियाँ, जलाकर शिक्षा का दीप ॥

भारत के ग्रामीण इलाके में महिलाओं की संख्या पुरुष के मुकाबले ज्यादा है। इसके पीछे प्रमुख कारण है रोजगार के लिए पुरुषों का पलायन। भारत की विकासात्मक स्थिति ना केवल शहरी महिलाओं के सशक्तिकरण से सुनिश्चित होगी बल्कि ग्रामीण इलाकों में रहने वाली महिलाओं के सशक्तिकरण से ही पूर्ण होगी। महिला सशक्तिकरण की परिभाषा को धरातलीय स्वरूप देने के लिए कई योजनाएँ संवैधानिक रूप से लागू की। महिला सशक्तिकरण के लिए केवल किताबी बातों से महिला की स्थिति नहीं सुधारी जा सकती। इसके लिए अधिकारियों को योजनाओं को कानूनी रूप देने की आवश्यकता है

सामाजिक क्षेत्र के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण ग्रामीण स्तर पर

महिलाओं की स्थिति को उन्नत करने में सबसे ज्यादा भूमिका समाज की होती है। शहरी जीवन में कुछ हद तक महिला का सामाजिक जीवन विकासशील है। परंतु ग्रामीण इलाकों में महिला सशक्तिकरण अभी बहुत दूर की बात है। महिला सशक्तिकरण आज के युग की मांग है। हालांकि ग्रामीण स्तर पर फैली कुरीतियाँ जैसे पर्दा प्रथा कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह आदि को समाप्त करने की कोशिश के साथ ही महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण की शुरुआत मानी जा सकती है। महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण उनके शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा के द्वारा महिलाओं की आंतरिक शक्ति को बढ़ावा मिलता है जो कि उन्हें सशक्त करने में मदद करती है। हालांकि अभी भी भारत के कई राज्यों जैसे बिहार, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश आदि में महिलाओं का शैक्षिक स्तर बहुत नीचे है। जिससे

भारत में महिला सशक्तिकरण को पूरा नहीं किया जा पा रहा है।

ग्रामीण इलाकों में महिला सशक्तिकरण का उदय आर्थिक क्षेत्र के संदर्भ में

प्रारंभिक आर्थिक नीतियां ग्रामीण इलाकों की महिलाओं के उत्थान में अधिक कारगर साबित हुईं। स्वयं सहायता समूह ने महिलाओं को ना केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनाया साथ ही वित्तीय मजबूती प्रदान की। 2 फरवरी 2006 को महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम ने ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को आर्थिक रूप से सशक्त करने में मील का पत्थर साबित हुआ। मनरेगा की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसके कारण सामाजिक एवं आर्थिक समानता को बढ़ावा मिला। समान काम समान वेतन की परिभाषा पर खरा उतरा। इसके साथ ही महिला में आर्थिक सम्मान, समानता एवं आत्मविश्वास के विकास की शुरुआत हुई। ग्रामीण इलाकों में हस्तशिल्प उद्योगों के विकास से भी महिलाओं को रोजगार मिला जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त हुईं।

ग्रामीण इलाकों में महिला सशक्तिकरण का विकास राजनीतिक स्तर पर

महिला सशक्तिकरण के लिए उठाए सभी कदम धराशायी है, यदि उन्हें राजनीतिक रूप से सशक्त ना किया जाए। और सबसे प्रमुख कदम भारत में पंचायती राज की शुरुआत करने वाला 72वां संवैधानिक संशोधन है। इस संशोधन के तहत महिलाओं को स्थानीय विधानसभाओं और सरपंच के पद के एक तिहाई पद आरक्षित हैं। इस योजना ने महिलाओं को राजनीतिक रूप से सुदृढ़ करके उन्हें निर्णय लेने की शक्ति प्रदान की। इसके साथ ही देश के ग्रामीण इलाकों में लोकतंत्र की व्याख्या का विस्तार हुआ। साथ ही राजनीतिक रूप से देश की पूंजी और वहां के मानव और बौद्धिक संसाधनों पर समान नियंत्रण

प्रदान किया। इससे महिलाओं को अपने जीवन स्तर सुधारने और एक बेहतर जीवन जीने की शुरुआत हुई।

ग्रामीण इलाकों में महिला सशक्तिकरण को केवल और केवल शिक्षा के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है।

हम और हमारा समाज महिला शिक्षा की बात करते हैं। लेकिन, क्या शिक्षा की किताबी बातें करने से महिला शिक्षित हो सकती हैं? इसके लिए केवल केंद्र या राज्य सरकारों को अधिनियम बनाकर योजनाओं को लाना ही पर्याप्त नहीं है। इसे लागू करने और निचले स्तर पर लागू कराने के लिए केंद्र तथा राज्य सरकार के साथ-साथ हम और आप जैसे शिक्षित लोगों का योगदान अति आवश्यक है।

Poem

At the summit



Rajeev Kumar

Roll - 15

Session - 2020-22

I could scream
I could let my words be
acknowledged
I could let my voice record
Same in every direction
No aversion, no contradiction
As I wanted, ever,
throughout my existence
But instead
I set on a dusty stone
Palms jointed, fingers intertwined
Listening to the swishing breeze
And felt my silence
Resonating

नन्हक पांडे की बोर्ड परीक्षा

फरवरी का महीना था, ठंड अपनी लाव-लस्कर समेट कर प्रस्थान करने की तैयारी में लगी हुई थी। चार महीने का आलसपन उसे भी जकड़ रखा था। शायद विदाई की शुभ मुहूर्त की इंतजार में पलक पाँवड़े बिछाए राह देख रही थी। इसी शुभ मुहूर्त में गौतम छात्रावास के कमरे में तड़के सुबह मोबाइल की घंटी बज पड़ी। तीन बजे सुबह तक स्वाध्याय में लगे साथी मित्र ने आधी नींद में बड़बड़ाया 'फोन को साइलेंट करके काहे नहीं सोते जी, पूरा नींद खराब कर दिए' ! रजाई से अर्ध निद्रा की अवस्था में उठकर जैसे-तैसे फोन को ज्योंहि रिसीव किया। दूसरी तरफ से गांव के काका जी का मधुरमय ध्वनि कानों में गुंजित हुई - 'अभी तक सोए हुए हो का बबुआ'। अकबकाहट में अपने बचाव में दो-चार

कॉलेजिएट बैग में दो-चार कपड़े तथा दिखावटी के लिए तीन-चार किताबें ठूस लिया। घर पर पहुंचने के बाद काका जी के कथनी के सदृश्य.. नन्हे पांडे फोन में तल्लीन थे, परंतु अंतर यह था कि वह गेम की जगह अपने पाठ्यक्रम की चीजें देख रहे थे। यह दृश्य BYJU'S वाले शाहरुख खान की विज्ञापन की याद दिला गई। खैर सही था, दुनिया डिजिटल हो रही है।

काका जी विशेष प्रयोजन हेतु पास की मंडी में गए थे। रात में मंडी से आने के साथ ही नन्हे पांडे पर बरस पड़े- " भोज के दिन कोहड़ा रोपे से कुछ ना होतवा '। नन्हे पांडे मंद-मंद मुस्कुराए जा रहे थे। नन्हे पांडे के माथे पर परीक्षा की थोड़ी-सी भी शिकन नहीं नज़र आ रही थी।

हमें लगा शायद यह नई पीढ़ी का विश्वास है। परंतु यह भ्रांति जल्द ही दूर हो गई। सामान्य बातचीत के क्रम में नन्हे पांडे बोल पड़े 'तैयारी पूरी है भैया, पांच हजार में पूरी सेटिंग हो गई है, प्रश्न पत्र एक घंटा पहले आ जाएगा'। आश्चर्य भरी नजरों से हम उसे देखे जा रहे थे, क्या यह वास्तव में संभव है। परंतु नन्हे पांडे का विश्वास से भरे चेहरे की मुस्कान मेरे आश्चर्य को मात दिए जा रही थी।

सुबह की शुरुआत के साथ परीक्षार्थी महोदय के आत्मविश्वास पर धुंधली छाया नजर आ रही थी। परीक्षार्थी महोदय द्वारा तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं को सवा रूपए की घूस दी जा चुकी थी। पढ़ाई के अलावा पास होने की हर तरकीब पर तैयारी पूरी थी। परीक्षा केंद्र पर परीक्षार्थियों से ज्यादा अभिभावकों की भीड़ नजर आ रही थी। शायद पांच हजार वाली सेटिंग की जुगाड़ कमोबेश सब के पास थी। सभी लोग प्रश्न पत्रों के जुलूस के मांगलिक बेला का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। बको ध्यानम का अर्थ सही मायने में चरितार्थ हो रहा था। बस उसकी पृष्ठभूमि गलत थी।

थोड़ी ही देर में कठपुतली बन चुके लोगों में बिजली की तेजी कौंध पड़ी। नन्हे पांडे प्रफुल्लित होकर बोल पड़े- 'पांच नबररीवा आ गया है, थ्योरमवा साँल्व कर दीजिए, बाकी दोनों क्वेश्चन गेस पेपर में

उज्जवल कुमार मिश्रा
रौल - 16
सत्र - 2020-22



फालतू के शब्द चिपका दिए। परंतु बोलने के क्रम में लिए गए उबासीपन सब बयां कर रहा था। सत्यता तो यही थी कि अभी तक कुंभकर्णीके निद्रा में निर्लज्ज सोए पड़े थे। प्रणाम पाती हुई। औपचारिक समाचार का आदान-प्रदान हुआ ! फोन करने का विशेष प्रयोजन पूछने पर काका जी अपने कड़कपन वाले स्वर में बोल पड़े "ननक के बोर्ड परीक्षा हवा, दिनभर गांव के लंपटवन के साथ मुंह चौंधिया-चौंधिया के फोनवा में गेम खेले से फुर्सत ना हई, पता ना परीक्षा में का लिखतउ। थोड़ा आ जयते हलहू तो परीक्षवा में सहूलियत हो जयते हलई"। प्रतिउत्तर में कर्तव्य के निर्वाहन हेतु 'हां' की हुंकार भरनी पड़ी। अगले सुबह से परीक्षा की शुरुआत थी। संध्या बेला में अमेरिकन टूरिस्टर के थर्ड कॉपी वाले

मिल गया है। फाड़ के रख लेते हैं।” थोड़ी देर तक कोलाहल का वातावरण रहा। दो नंबररीवा फलना पेज में है, पांच नंबररीवा फलना पेज में है। एक नंबररीवा सॉल्व कर दीजिए। इत्यादि कर्कश ध्वनियाँ सुनाई पड़ती रही। शिक्षा की कुव्यवस्था देख कर मन बोझिल प्रतीत हो रहा था। स्तब्ध दिमाग यह समझ नहीं पा रहा था

कि "परीक्षा में कदाचार हो रहा या कदाचार में परीक्षा।" संपूर्ण परीक्षा के दौरान कमोबेश यही स्थिति रही। दिन बीतने के साथ सेटिंग बाज और सक्रिय हो गए। परीक्षा से नन्हे पाडे संतुष्ट थे। परिणाम का इंतजार था। बस एक ही भय था कि परिणाम मीडिया कर्मियों के घर आगमन लायक ना हो”

कविता

कोरोना का कहर



आर्ट : निधि वर्मा

एक ऐसी आंधी आयी,
जिसने दुनियां तबाह करनी चाही,
कई घर को सुना कर
दिन रात सिसकियां भराई।
उम्मीद की हर लौ को बुझाकर
सबको लाचारी की चादर में लपेट
इंसानियत को भी छुपा लिया,
पर मेरी सलामी है उन जांबाजों को
जिन्होंने इस बिपदा में साथ दिया।

अब हमें ऐसे ही जीना है,
अपने दर्द को तख्ते पर रख के

अपने खोये हुए के सपने को
पूरी दुनियां के सामने पिरोना है।
कितनी और चुनौतियां का सामना करना है हमें,
ये वक़्त हमें आगाह करते रहेगा।
पर वे हमेशा है न साथ में तो फिर क्या,
ये वक़्त की मार भी सर झुकायेगा।



निधि वर्मा
रौल- 61
सत्र - 2020-22

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2021 के तहत मुझे फील्ड इन्वेस्टिगेटर की जिम्मेवारी मिली थी। यह सर्वेक्षण देश भर के चुने गए विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि जानने के उद्देश्य से किए जा रहे थे। कोविड के दौरान विद्यार्थी की पढ़ाई और उसकी मानसिक स्थिति पर क्या असर हुआ सरकार यह भी जानना चाह रही थी।

12 नवंबर 2021 के दिन देश भर में यह सर्वे होना था। इसके तहत मेरी ड्यूटी गुलाबचंद हाई स्कूल, बथानी में दी गई थी। मुझे उस स्कूल में प्रातः 7:30 में रिपोर्ट करना था। मैं सुबह 5:30 के आसपास अपने मन में एक नया उत्साह लिए शहर से रवाना हुई। मन में उत्साह इस बात की थी कि यह मेरी जिंदगी की पहली ड्यूटी थी। एक अलग ही खुशी मिल रही थी दिल को। इस उत्साह और खुशी के साथ मैं निर्धारित समय से पहुंच गई बथानी। बथानी गया शहर से पूरब

अनुप्रिया वर्मा

रौल - 21

सत्र - 2020-22



दिशा की ओर है। यह गया से लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर है। जाने में ज्यादा परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। गांव तक जाने वाली सड़क भी पक्की थी। ऐसा लग रहा था जैसे हाल ही में बनी हो। कुछ समय में मैं विद्यालय के पास पहुंच गई। विद्यालय गांव के किनारे एक पहाड़ी से सटे रास्ते के दूसरी ओर था। विद्यालय के पास ही प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, बथानी प्रखंड कार्यालय, नर्सिंग प्रशिक्षण केंद्र और कुछ सरकारी आवास थे। गांव के घर वहां से थोड़ी दूर पर थे। विद्यालय के पास पहुंचकर देखा तो वहां बिल्कुल सन्नाटा था। कुछ लड़के थोड़ी दूर पर दिख रहे थे। उस समय वह जगह मेरे लिए थोड़ी असहज-सी लगी तो मुझे प्रखंड कार्यालय के पास रहना ज्यादा उचित लगा। वहाँ लोगों की चहल कदमी थोड़ी ज्यादा थी। मुझे अकेलापन-सा लग रहा था। समझ नहीं आ रहा

था कहां जाऊं? क्या करूं? पास से गुजरने वाले लोग एक अजनबी निगाह से देख रहे थे मुझे। लोगों का इस तरह देखना मुझे और अधिक असहज लग रहा था। मैं घर पर फोन कर पापा से बात करते हुए बगल की पहाड़ी के एक चट्टान पर बैठ गई। वीडियो कॉल पर मैं उन्हें गांव का दृश्य दिखा रही थी और अपना अब तक का अनुभव बता रही थी। उनसे बात करते हुए मुझे थोड़ा सहज-सा लगा जैसे वह मेरे साथ ही हों। पापा से बात करते हुए 7:15 हो गया तो मैं विद्यालय की ओर चल पड़ी।

विद्यालय के समीप पहुंचने पर कुछ बूढ़े व्यक्ति दिखे जो अपने मवेशियों के साथ अनजान निगाहों से देख रहे थे मुझे। विद्यालय के पास पहुंचकर मैंने विद्यालय के गेट पर नजर दौड़ाई। पर विद्यालय के नाम का कोई अता-पता नहीं था। मैं असमंजस से विद्यालय के कैम्पस में प्रवेश की तो तीन लोग दिखे। मुझे, जो मेरी ओर ही उत्सुकता से देख रहे थे। उन लोगों के पास पहुंच कर मैंने उनका अभिवादन किया और अपना परिचय दिया। वे लोग मेरे अभिवादन को स्वीकार करते हुए मुझे विद्यालय भवन की ओर ले गए। विद्यालय का भवन तीन हिस्सों में बंटा था। जिसमें एक ही भवन कार्य में लाया जा रहा था, बाकी दो खंडहर में तब्दील हो चुके थे जहां मवेशियों के मलबे पड़े थे। वे लोग मुझे विद्यालय के शिक्षक कक्ष में ले गए जहां मेज और कुर्सियों पर पड़े धूल की परतों ने मेरा स्वागत किया। एक शिक्षक ने एक कुर्सी को साफ करते हुए मुझे वहां बैठने का इशारा किया। एक दूसरे शिक्षक मुझे जानने के लिए कुछ प्रश्न करने लगे।

"मैडम आप कहां से आई हैं?"

"बहुत जल्दी आ गई मैडम नाश्ता तो नहीं ही की होंगी?"

"अकेले आई, बस से?"

"आप अभी कहां पढ़ाती हैं?"

आदि-आदि

कुछ ही देर में विद्यालय के प्राचार्य आए और अभिवादन करते हुए मुझे प्राचार्य कक्ष में ले गए। मेरा कुशल मंगल पूछ कर मुझसे अलॉटमेंट लेटर मांगा। उस पर अपना हस्ताक्षर और विद्यालय की मुहर लगाते हुए मुझे विद्यालय से संबंधित जानकारी देने लगे। तभी उनके मोबाइल पर मेरे साथ सर्वे करने के लिए नियुक्त ऑब्जर्वर का फोन आया। वह उन्हें लेने बस स्टैंड चले गए। क्योंकि बस स्टैंड से विद्यालय तक आने के लिए कोई सार्वजनिक वाहन न चलती थी। इतना समय में मैं विद्यालय के साथ थोड़ी सहज हो गई थी तो घूम-घूम कर विद्यालय का भ्रमण करने लगी। चार ही कमरे थे वहां पर जिसमें एक प्राचार्य कक्ष, एक शिक्षक कक्ष और दो वर्ग कक्ष थे। तभी वहां के एक सफाई कर्मी से मुझे पता चला कि इन दो वर्ग कक्ष में एक कक्ष उस क्षेत्र के विधायक के अधिकार में है और एक ही वर्ग कक्ष में नौवीं और दसवीं दोनों ही क्लास चलती है। बड़ा अजीब लगा मुझे यह जानकर और कुछ पूर्वानुमान भी हो गया उस विद्यालय के शिक्षा स्तर का।

तभी कुछ लड़कियां विद्यालय आ गईं। मुझे समझ नहीं आया यह लोग अभी ही क्यों आ गए, क्योंकि उनका सर्वे 10 बजे के बाद होना था और अभी तो 8 ही बजे थे। पूछने पर पता चला कि उन्हें यही समय बताया गया है आने को। उनलोगों से कुछ देर बात करके पता चला वे लोग बहुत कम विद्यालय आते हैं। विद्यालय न आने के कई कारण हैं- विद्यालय में वर्ग कक्ष की कमी, शिक्षकों द्वारा ना पढ़ाया जाना, विद्यालय में शौचालय का न होना आदि। यह स्थिति देखकर अजीब-सी कसक उठी दिल में। मन चिंतित हो गया यह स्थिति देखकर। मैंने भी नवमीं से बारहवीं तक की पढ़ाई सरकारी स्कूल से ही किया था पर मेरे विद्यालय की स्थिति तब भी इस स्थिति से बेहतर थी। बच्चे को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे हमारी भावी पीढ़ी के भविष्य के साथ कितना बड़ा खिलवाड़ किया जा रहा है। जिसका अंदाजा खुद उन बच्चों को भी नहीं है।

कुछ ही देर में विद्यालय के प्राचार्य ऑब्जर्वर को लेकर वापस आ गए। मैंने ऑब्जर्वर का अभिवादन किया और साथ मिलकर आज के क्रियाकलाप के बारे में चर्चा करने लगे। तब ही एक शिक्षक आते हैं और बोलते हैं कि जो बच्चे पढ़ाई में अच्छे हैं उनकी परीक्षा लीजिए और इस कार्य में हम आपका सहयोग कर देंगे। उनकी बातों को नकारते हुए मैंने उन्हें बताया कि परीक्षा लेने की जो पद्धति हमें बताई गई है वैसे ही परीक्षा ली जाएगी। वह भी विद्यालय के किसी भी कर्मी के हस्तक्षेप के बिना। मेरे ऑब्जर्वर ने मुझे सलाह दी कि मैं थोड़ा सख्त व्यवहार करूं ताकि सर्वे के सारे काम बिना विद्यालयी हस्तक्षेप के नियमबद्ध तरीके से पूरे हो जाएं।

ऑब्जर्वर मुझे परीक्षा से संबंधित वस्तुओं का एक बंद बंडल देते हैं जो उन्हें जिला प्रबंधक द्वारा विद्यालय लाने को दिया गया था। फिर हम व्यस्त हो जाते हैं अपने पूर्व निर्धारित कार्य में। मैंने बंडल को खोला और सारी वस्तुओं का निरीक्षण किया प्राचार्य प्रश्नपत्र पूरा कराने लगी जिसे स्कूल प्रश्नोत्तरी कहा जाता है। साथ ही हमने पांच शिक्षकों का सर्वे भी शुरू कर दिया जिसे शिक्षक प्रश्नोत्तरी कहा जाता है। एक अलग ही अनुभव रहा इस प्रक्रिया के दौरान। शिक्षकों को भी प्रश्न पत्र हल करने और ओएमआर भरने के लिए दिशानिर्देश तथा सहायता देनी पड़ रही थी। सोचकर बड़ी हैरानी हुई यदि शिक्षकों का यह हाल है तो बच्चों से क्या ही उम्मीद की जाए। फिर मैंने 10th का रजिस्टर मांगा। प्रशिक्षण के दौरान हमें बताया गया था कि विद्यालय के 10th का रजिस्टर देखकर एक विशेष पद्धति द्वारा 30 बच्चों का सर्वे करना है। शिक्षक रजिस्टर देने से कतरा रहे थे क्योंकि रजिस्टर अपडेट नहीं था। नवंबर के 11 दिन बीत गए थे जबकि रजिस्टर पर नवंबर माह का कोई अता-पता न था। इसके लिए मैंने शिक्षकों को फटकार लगाई। शिक्षकगण मुझे विद्यालय के उन कमियों को सुनाते रहे जो सरकार के नियंत्रण में है और अपना कर्तव्य भूलते गए। मैंने उन्हें निर्देश दिया कि कम से कम आप अपनी

जिम्मेदारी ही पूरा करें तो बहुत सुधर सकता है विद्यालय। शिक्षा अर्जन के लिए शिक्षार्थी और शिक्षक प्रथम जरूरत है। बाकी आधारभूत सुविधाओं का स्थान बाद में आता है।

रजिस्टर देख कर मुझे पता चला कि दसवीं में कुल 160 बच्चों का नामांकन है। जिसे दो सेक्शन में बांटा गया है सेक्शन (ए) में लड़कियों का नामांकन है और सेक्शन (बी) में लड़कों का। सेक्शन ए का रजिस्टर लेकर मैं चल दी लड़कियों के कक्ष में। वहां लगभग तीस लड़कियां थी। मैंने उनसे थोड़ी बातचीत शुरू की, उन्हें स्त्री शिक्षा का महत्व बताया। मैंने उनसे कुछ प्रश्न किये- बिहार की पहली महिला मुख्यमंत्री कौन हैं? देश की पहली महिला राष्ट्रपति कौन है? परन्तु मेरे हाथ निराशा ही लगी। ज्यादातर लड़कियां खामोश थी। कुछ एक ने उत्तर दिया तो वह भी गलत। यह देख कर मन बहुत आहत हुआ। समझ आ गया मुझे कि बिहार शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा क्यों है। ऐसा नहीं है कि बिहार में शिक्षा का पूरी तरह अभाव है। परन्तु कुछ लोगों की तरक्की से पूरे राज्य की तरक्की तो नहीं हो सकती ना। अभी-अभी मैंने समाचार पत्र में पढ़ा था 'विधानमंडल की आठ मंजिला इमारत आधुनिक सुविधाओं से पूर्णतः लैस'। आह निकलती है दिल से जब दोनों परिस्थितियों पर चिंतन किया जाए।

मन में निराशा का भाव लिए मैं लड़कों के कक्ष में गयी। जो विद्यालय के उस भाग में बैठे थे जो खंडहर में तब्दील हो चुका था। मैंने उनसे बातचीत शुरू की और उन्हें कुछ व्यावहारिक ज्ञान दिए। क्योंकि उनका व्यवहार मुझे अशिष्ट-सा लगा। उन्हें भविष्य में सफलता की ओर बढ़ने के लिए अभिप्रेरित किया।

समय की कमी थी मेरे पास तो अधिक समय ना दे सकी बच्चों को। सर्वे प्रारंभ करने का समय हो चुका था। मैं अपने ऑब्जर्वर के साथ मिलकर सर्वे का प्रबंध करने लगी। रजिस्टर से 30 बच्चों को क्रमांक संख्या के आधार पर चयन किया और उन्हें बैठने की जगह व्यवस्थित करने लगी। तदोपरांत सर्वे शुरू किया गया। ग्रामीण क्षेत्र के

इन बच्चों को शायद कभी शिक्षा का वह माहौल ना मिल पाया था कि प्रश्न पढ़कर वे खुद समझ सके कि प्रश्न में क्या पूछा गया है। जबकि प्रश्न पत्र का माध्यम हिंदी था। उन्हें ओएमआर भरने और प्रश्नपत्र समझाने में इतनी मशगूल हो गई कि कुछ और ध्यान ही नहीं आया मुझे। सुबह से कुछ नहीं खाई थी परन्तु मन में इतनी उथल-पुथल मची थी कि भूख का एहसास ही ना था मुझे। सर्वे की कार्यविधि को पूरा करते-करते और बच्चों को प्रश्न पत्र समझाते-समझाते मैं थक-सी गई थी। समय का पता ही ना चला और सर्वे पूरा

“ शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा क्यों है। ऐसा नहीं है कि बिहार में शिक्षा का पूरी तरह अभाव है परन्तु कुछ लोगों की तरक्की से पूरे राज्य की तरक्की तो नहीं हो सकती ना। अभी-अभी मैंने समाचार पत्र में पढ़ा था "विधानमंडल की आठ मंजिला इमारत आधुनिक सुविधाओं से पूर्णतः लैस।" आह निकलती है दिल से जब दोनों परिस्थितियों पर चिंतन की जाए। ”

होते होते एक बज गया। हमने सर्वे के बाद की सारी प्रक्रिया जल्दी-जल्दी पूरा की, हम दोनों ही भूख से व्याकुल हो रहे थे साथ ही मानसिक और शारीरिक थकान भी काफी हो गई थी। प्रक्रिया पूर्ण करने के उपरांत हम थोड़े विश्राम को बैठ इधर-उधर की बातें करने लगे। दोपहर के दो बज चुके थे और अब हमें वापस अपने निवास को लौटना था। प्राचार्य हमें बस स्टैंड छोड़ने आए। उन से विदा लेकर हम वापस लौट चले।

मुझे वहां से आए दो दिन हो गए हैं परन्तु अभी भी मेरा मन वहीं अटका है। वे सारे दृश्य, वह परिस्थितियां चिंतन का विषय बनी है मेरे लिए। हां, एक ख्याल और मुझे परेशान कर रही है - यदि उस विद्यालय में नियोजित शिक्षक के रूप में मेरा चयन होता तो क्या करती मैं उस परिस्थिति में? क्या अपने स्थानांतरण की अर्जी देती? क्या बाकी शिक्षकों की तरह बैठे-बैठे अपने वेतन का उपभोग करती? या कि उस विद्यालय की परिस्थिति सुधारने की कोशिश करती? परन्तु कैसे सुधारती उन परिस्थितियों को?

Peace education

Chandan Kumar
Roll - 49
session - 2020-22



Dear friends, we know that the greatest thing in everyone's life is peace. No one is present in this world who doesn't want peace. But sometimes for achieving peace, people start hating one another and increase enmity instead of loving. For getting peace, first we need to understand the real meaning of peace that comes through love. People want peace but they don't support love. But, Love is the mother of peace. We should always create a lovely environment in the place of an enmity environment because Love is the only enemy of violence.

We live in India, which is known in the world for peace. India always stands with peace, at the time when many countries of the world were divided into two groups, one was in favour of America and others were in favour of the USSR. But India was non-aligned.

A request to all the countries to stand with peace, solve the problems diplomatically. India is against the Ukraine - Russia war. Our PM says that India gives Buddha not yuddha. India has always been a peace loving country. Buddha is God of peace and being worshipped in the world. We should follow the preach of Buddha.

We are living in an advanced era. This era is known for education. Everyone wants a good education for their children.

Education is the equipment that we use to change life, society and the world also. If we want peace in the world, we include peace education in our education system. If it is taught in schools, our children will know about peace, how to create peace and the advantages of peace. Our next generation will be peace loving, they will solve their problems peacefully. Violence will be decreased. They will behave in a lovely way, so it is time to make peace a part of our education system.

माँ



कृष्ण मुरारी शर्मा
रौल- 52
सत्र - 2020-22

माँ तेरी पूजा, माँ तेरा वंदन,
माँ तेरी शुक्रिया, माँ तेरा अभिनन्दन।
तू ममता की मंदिर
तू खुशियों का समन्दर,
तू उम्मीदों की दुनिया,
तू आशा की किरण।
माँ तेरी दया से मिला है ये जीवन,
माँ तेरी कृपा से खिला है ये जीवन
वर्षों की मेहनत जो तूने की है,
मिला मुझको बस आसरा ही आसरा है।
तमन्ना है मेरी जहाँ भी रहूँ मैं
तेरी ममता के आँचल में लिपटा रहूँ मैं।
माँ दुआओं का दरिया हमेशा बहाना,
मेरे जीवन की बगिया हमेशा खिलाना।
हो गलती जरा भी, तू मुझको बताना,
पकड़ हाथ मेरा तू रास्ता दिखाना।
मैं बालक तेरा माँ, करूँ जो निवेदन,
स्वीकार करो माँ,
ये तुझको हैं अर्पण,
ये तुझको है अर्पण।

साहित्य और समाज

संदीप कुमार गुप्ता

रौल - 10

सत्र - 2020-22



साहित्य का अर्थ होता है सहित। साहित्य को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि हितेन सहितम। अर्थात् जो हित साधता है वह साहित्य है। सहित में यत् प्रत्यय के योग से साहित्य बना है। साहित्य का शाब्दिक अर्थ होता है-साथ होना। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार- 'साहित्य जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है। जनता की चित्तवृत्ति में परिवर्तन के साथ ही साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन होता चला जाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिणति के अनुसार होती है।'

समाज के साथ साहित्य का विशेष लगाव होता है। समाज का सुख-दुख, पीड़ा-कष्ट, आशा-निराशा साहित्य के साथ जुड़ा होता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य व्यक्ति और समाज में प्रगतिशील विचारधारा का उद्भव करता है। कोई भी साहित्य अपने समय में प्रगतिशील होता है। जैसे यदि हम पूर्व मध्यकाल में देखें तो समाज में बहुत सारी कुरीतियां, ढोंग, मान्यताएं प्रचलित थीं। इन कुरीतियों को दूर करने के लिए कबीर, संत रैदास, गुरु नानक जैसे कवियों ने अपनी कालजयी रचना के माध्यम से धार्मिक कट्टरता को दूर करके समाज में आपसी भाईचारा बनाए रखने का आह्वान किया। रामानंद जी ने लिखा- "जाति- पाति पूछे नहीं कोई हरि को भजे सो हरि को होई।"

साहित्य में व्यक्ति और समाज को प्रेरित करने की अपार क्षमता होती है। साहित्य आचरण को गढ़ता है, मनोविकारों पर अंकुश लगाता है, सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है।

साहित्य जनता और समाज को प्रेरित करता है। समाज की वास्तविकता की पहचान उसके साहित्य से होती हैं। साहित्य ही समाज का प्रेरक, निर्धारक, भाग्य नियंता होता है। ब्रिटिशकालीन भारत में देखें तो साहित्य ने जनता में देशभक्ति की भावना को जगा करके राष्ट्रहित में सोचने के लिए प्रेरित किया। इसमें प्रेमचंद, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा, आदि कवि एवं लेखकों ने अपनी रचना के माध्यम से लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया। मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है -

"हम क्या थे क्या हो गये हैं क्या होंगे अभी,
आओ मिलकर बिचारे सभी।"

इसी तरह आगे निराला ने भी भारतीय जनमानस में राष्ट्र के प्रति चेतना को जागृत करने के लिए लिखा -

"जागो फिर एक बार
शेर की मांद में आज फिर आया है सियार।"

प्रेमचंद के उपन्यास गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि आदि उपन्यास के साथ उनकी कहानियां ठाकुर का कुआं, सद्गति, कफन आदि में उन्होंने तत्कालीन ब्रिटिश भारत में जमींदारी प्रथा, शोषण व्यवस्था, सामंतवादी समाज का चित्रण किया है। प्रेमचंद ने लिखा है- साहित्य जीवन की आलोचना होता है।

साहित्य का जुड़ाव समाज से होता है और साहित्य का जुड़ाव श्रम से भी होता है। आज भी भारतीय समाज में लोग श्रम के साथ-साथ गीत गाते हैं और यह गीत उनके श्रम विभाजन का कार्य करता है। साहित्य समाज में राष्ट्रीय एकता, बंधुता, भाईचारा के साथ-साथ साहचर्य की भावना का विकास करता है। साहित्य समाज का उचित मार्गदर्शन करता है। साहित्य अपने अतीत को गौरवान्वित करते हुए वर्तमान को व्याख्यायित करते हुए भविष्य की रणनीतियां तैयार करने में सहायता प्रदान करता है। आज हम साहित्य के माध्यम से अपने अतीत को जान के अपने भविष्य की रणनीतियां बना सकते हैं।

उसकी राह

भास्कर प्रियंबुद
क्रमांक - 95
सत्र - 2020-22



लड़ना है उसे हर एक सवालों से,
कौन कहता है उसकी राह आसान है।

कांटे जो भर दिए हैं उसकी रास्तों में,
मुमकिन है हटाना,
पर क्या हटाना आसान है?
कौन कहता है उसकी राह आसान है!

कब तक सहेगी वो दुखों के मंजर,
जीने की चाह उसमें भी समान है।
कौन कहता है उसकी राह आसान है!

कहते हैं लोग- उसका यहां अपना कुछ नहीं!
हमसे ज्यादा हकदार,
खुद के लिए उसका सम्मान है।
कौन कहता है उसकी राह आसान है

पनप रहे अंकुर के बीज उसके भीतर भी,
सांस तो लेने दो आसमां में,
अभी वो नन्ही सी जान है।
कौन कहता है उसकी राह आसान है!

अवसर की तलाश में है वो,
उसे अवसर तो दो,
तुमसे भी अच्छी बना लेगी,
अपनी एक पहचान है।
देखना फिर सब बोलेंगे,
उसकी राह आसान है,
उसकी हर राह आसान है।

प्रकृति बनाम मानव



अजित कुमार
क्रमांक - 71
सत्र - 2020-22

यह गुरुर तुम्हारा टूटा है,
कुछ हुजूर तुम्हारा टूटा है।
तुम तो आधुनिक हो रहे हो,
यह सुरूर तुम्हारा टूटा है।
आधुनिकता के चक्कर में
मानवता को छोड़ा तुमने।
आसमान में उड़ने को,
पंछी का पर तोड़ा तुमने।
शुद्ध नदी का जल छोड़ा,
और खुले गगन की वायु भी।
हम श्रेष्ठ हैं के चक्कर में,
सज्जनता को छोड़ा तुमने।

तुम दूर बैठे को मना रहे,
तेरे बाग के पंछी रुठे हैं।
एक रिश्ते के कारण,
यहां कितने रिश्ते टूटे हैं।
कोयल की मीठी तान गई,
और सुबहों की मुस्कान गई।
उस बुलबुल के चक्कर में,
इस बुलबुल के गुंजन छुटे हैं।
प्रकृति अपने दोहन का,
हिसाब हम सब से मांग रही।
हम क्या बोले कुछ पता नहीं,
वो जवाब हम सब से मांग रही।

इतने जंगल को काटकर,
कितने आधुनिक हो गए हो।
यह सब कुछ जिसमें लिख रखा था,
वह किताब हम सब से मांग रही।
आज हम फिर जाग रहे,
मानवता की अंगड़ाई लेकर।
हम श्रेष्ठ नहीं प्रकृति से,
यह सारी सच्चाई लेकर।

ऐ काश की यूँ होता

ऐ काश की यूँ होता,
तुझमें मैं और मुझमें तू होता।
मैं ढूँढ़ तुझे और तू मेरे आस-पास होता,
मैं कुछ कहूँ इससे पहले तू
मेरे मन का जानकार होता।
मेरे नाम का एक तू ही हकदार होता,
ऐ काश की यूँ होता।

जहाँ तुम होते वहीं मैं होता,
ना ये दूरियाँ होती ना ये गम होता।
अगर तुम बस मेरे और मैं बस तुम्हारा होता
ऐ काश की यूँ होता।



अवनीकान्त अनु
रौल नंबर - 47
सत्र - 2020-22

जीवन परिचय : भीमराव अंबेडकर



भीमराव अंबेडकर बीसवीं सदी के महानतम लोगों में शामिल थे। इनका जन्म आज से करीब 130 साल पहले 14 अप्रैल 1891 में मध्यप्रदेश के इंदौर जिले के महु कस्बे में हुआ था। उनका जन्म दलित वर्ग के महार जाति में हुआ था। भीमराव अंबेडकर के पिता का नाम रामजी मलोजी सकपाल तथा माता का नाम भीमाबाई था। वे अपने माता-पिता के 14वीं संतान थे। उनके पिताजी ब्रिटिश सेना में सूबेदार के पद पर कार्यरत थे जिसके कारण में उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। बाबा साहेब का पूरा नाम डॉ भीमराव रामजी अंबेडकर था। एक गरीब, शोषित तथा दलित वर्ग में जन्म लेने के

कारण बाबा साहेब का बचपन बेहद कठिनाइयों में गुजरा। वे अपने जीवन के अधिकांश समय दलितों, शोषितों तथा महिलाओं अल्पसंख्यकों के हक की लड़ाई में बिताए। वे समाज में फैले जातीय भेदभाव धार्मिक राष्ट्रवाद तथा सामाजिक और सांस्कृतिक बुराइयों के घोर आलोचक थे। डॉ आंबेडकर भारतीय समाज में समरसता, समानता तथा धर्मनिरपेक्षता के पैरोकार थे।

डॉक्टर अंबेडकर बचपन से ही पढ़ाई में बहुत होशियार थे। अपने परिवार में सिर्फ वे ही पढ़ लिखकर सफल हुए। बाबासाहेब ने मैट्रिक की परीक्षा 1860 में गवर्नमेंट हाई स्कूल मुंबई से प्राप्त की। वे गवर्नमेंट हाई स्कूल मुंबई के पहले दलित छात्र थे। मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद वे मुंबई विश्वविद्यालय के एलिफिंस्टन कॉलेज में



स्वर्ण कमल
रौल नंबर - 81
सत्र - 2020-22

दाखिला लिया। 1912 में उन्होंने राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र में मुंबई विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उनकी शिक्षा से प्रभावित होकर बड़ौदा के शासक सयाजीराव गायकवाड ने अमेरिका में पढ़ने के लिए पच्चीस रुपया महीना की छात्रवृत्ति प्रदान की। 1916 में

उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से पीएचडी की डिग्री हासिल की। 1923 ईस्वी में लंदन विश्वविद्यालय के द्वारा उन्हें डॉक्टर ऑफ साइंस से नवाजा गया। अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे। उन्हें किताब पढ़ने का बहुत शौक था, उनके पास 50 हजार पुस्तकों का संग्रह था।

भीमराव अंबेडकर के राजनैतिक कैरियर की शुरुआत 1926 में विधान परिषद् के सदस्य के रूप में हुई। 1927 में छुआछूत के खिलाफ सत्याग्रह में हिस्सा लिया। उन्होंने दलितों के उद्धार तथा मंदिरों में प्रवेश के अधिकार के लिए कई आंदोलन किए। 8 अगस्त 1930 को उन्होंने शोषित वर्ग सम्मेलन का आयोजन किया। दलितों को राजनैतिक हक दिलाने के लिए 24 सितंबर 1932 को उन्होंने महात्मा गांधी के साथ पूना समझौता किया। जब देश आजाद हुआ तो उनको देश के भावी निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कार्य दिया गया।

29 अगस्त को संविधान सभा द्वारा संविधान निर्माण के लिए उन्हें संविधान मसौदा समिति का अध्यक्ष चुना गया। उन्होंने संविधान निर्माण की भूमिका को भली-भांति निभायी। वे भारत के पहले कानून मंत्री थे। 1951 में संसद में उन्होंने हिंदू कोड बिल पेश किया। हिंदू कोड बिल पर विवाद के कारण उन्होंने कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया। बचपन से ही जातीय भेदभाव के शिकार होने के कारण उन्होंने 1956 में अपने लाखों समर्थकों के साथ हिंदू धर्म त्याग कर बौद्ध धर्म अपना लिया। उनकी मृत्यु 6 दिसंबर 1956 को नई दिल्ली में हुई थी। 1990 में मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

भीमराव अंबेडकर ने अपना संपूर्ण जीवन दलितों गरीबों तथा शोषित के हक की लड़ाई में लगा दिया। उन्होंने कहा, "हमें अपना रास्ता खुद बनाना होगा। राजनीतिक शक्ति शोषितों की समस्याओं का निवारण नहीं हो सकती। उनका उद्धार समाज में उनका उचित स्थान पाने में निहित है।"

कविता

सीटीई कथा



दीपक कुमार

रौल - 46

सत्र - 2020-22

कचहरी का इलाका है
डीएम का कार्यालय है
दिग्धी तालाब की हरियाली है
जिला स्कूल का कैम्पस है
सुजाता छात्रावास से शुरु हुआ
सीटीई का यही नया प्रासाद है।
कोविड की महामारी में भी
ऑफलाइन-ऑनलाइन,
ऑनलाइन -ऑफलाइन
क्लास सदैव जारी है।

प्रिंसिपल सर की डांट फटकार
गीता मैम का बच्चों से प्यार
नीतू मैम हैं ज्ञान का भंडार
पूनम मैम की बात ही अलग है
सीधी रेखा बनानी हमने अभी तक सीखी नहीं
फिर भी फूल पत्ते बनवाना जारी है।
तनवीर सर का खेल-खेल में
पढ़ाई करवाना बहुत ही आनंदकारी हैं।
रामप्रवेश और रामचंद्र सर को
स्वच्छता की मिली जिम्मेदारी है।

नदीम भैया, उतम भैया,
नित्या और अभय सर उनके
सहयोग के लिए हम सब बहुत आभारी हैं।
मनोज सर, ब्रह्मचारी सर, शिवदत्त सर और
चहेते सौरव सर का दिया हुआ
ज्ञान अनुकरणकारी है
अब आई हमारी बारी है
शिक्षक बनकर राष्ट्र निर्माण सह
जन सेवा करने की जिम्मेदारी है।

मन की उलझन

खुशबू कुमारी
रौल - 26
सत्र - 2020-22



जैसे खामोशी के पल भी
कुछ कहने के लिए मचल रहे हो ।
मन की स्थिरता में भी
कुछ हलचल-सी हो।
सैकड़ों की भीड़ में भी
जैसे कोई अकेलापन हो।
घनेरी रात के अंधेरे में
कोई गुमसुम-सा सुकून हो।
दिन के उजियारों में भी
कुछ अंश अंधेरे का हो।
धूप की श्वेत किरणों में भी
कोई शुभम-सी हो
जीवन के हर स्वप्न में भी
जैसे कुछ अधूरा-सा हो
चारों और पैर पसारे सन्नाटे में भी
जैसे कोई कौंधने वाला शोर हो।

कविता

मातृभूमि बिहार

मैंने जन्म लिया उस धरती पर,
जहां बुद्ध को ज्ञान मिला,
जहां महावीर को निर्वाण मिला,
जहां से भारत को अशोक महान मिला।
मैं जन्म लिया उस धरती पर,
जहां शून्य का आविष्कार हुआ,
जहां सिकंदर का भी हार हुआ,
जहां विश्व प्रसिद्ध नालंदा से
शिक्षा का प्रसार हुआ।

आशा है मुझे

अभिषेक कुमार
रौल - 87
सत्र - 2020-22



आशा है मुझे, हवा में महल होगी
एक दिन, आवाज़ मेरी ग़ज़ल होगी
बिन बादल बरस रही थी
उस चांदनी रात में
रात अंधेरी न थी, रौशनी थी
बिन वक़्त चली थी, किसी की चाह में
हर तरफ जज़्बात महरूम न होता
मेरे बदरंग सपनों का सुकून न खोता
मेरी तो चांदनी रात में बादल छा गयी
ना जाने कब बरसात होगी
दो पल की चांदनी थी
अब तो गमों की बारात होगी
कल याद आएगी हर शाम
मेरे साथ समय जो बीता है
कल ग़ज़ल होगी
जो होती मेरी कविता है



प्रियांशु राज
रौल - 83
सत्र - 2020-22

मैं जन्म लिया उस धरती पर ,
जहां वृद्ध वीर कुंवर की तलवार उठी,
जहां सत्याग्रह की शुरुआत हुई,
जहां संपूर्ण क्रांति की धारा में,
सिंहासन की भी हार हुई।
हां, मैं जन्म लिया उस धरती पर,
जहां के स्वर्णिम इतिहास में अनेक महान हुए,
बिहार के इस पावन भूमि को
मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

गेहलौर घाटी : प्रेम की अनोखी गाथा



संदीप कुमार

रौल - 36

सत्र - 2020 - 22

आज सुबह मन में कौतूहल था। सुबह के नाश्ते के उपरांत मैंने दोपहर का खाना पैक कर लिया। मैं सरपट तैयार होकर गांव की सड़क की ओर चल दिया। क्योंकि आज दोस्तों के साथ गेहलौर घाटी घूमने जाने वाला था। गेहलौर घाटी हमारे गांव से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सारे दोस्त जब इकट्ठा हुए तो हमलोग एक ऑटो पर सवार होकर बस स्टैंड की तरफ चल दिए। लगभग आधे घंटे के बाद हम लोग बस स्टैंड पहुंच गए।

बस स्टैंड से हम लोग एक बस पर सवार हो गए हैं जो हमें वजीरगंज तक पहुंचाएगी। रास्ते में सड़क के दोनों तरफ धान की फसल लहलहा रही थी। फसल प्राकृतिक छटा का अनुपम दृश्य बिखेर रही थी। जिसे देखकर हमारा मन प्रफुल्लित हो उठा। प्राकृतिक दृश्य को निहारते-निहारते कब वजीरगंज पहुंच गए, पता ही ना चला।

वहां से गेहलौर घाटी जाने के लिए दोबारा ऑटो पर सवार हो गए। ग्रामीण रास्तों से होते हुए करीब आधे घंटे की यात्रा के बाद गेहलौर घाटी पहुंच गए। वहां पहुंचने के बाद हम लोग घाटी की ओर चल दिए। घाटी की शुरुआत में एक प्रवेश द्वार बना है जिसका नामकरण 'दशरथ मांझी द्वार' किया गया है। वहां से ही कुछ दूर पर हमें पहाड़ दिखाई दे रहा था। हम लोग उत्सुकता के साथ आगे बढ़े, वहां करीब 25 फीट ऊंचा पहाड़ स्थित है, जिसके बीच से पहाड़ का सीना चीरती हुई पक्की सड़क गुजरती है। हमें तो यह देखकर आश्चर्य लगा कि कोई अकेला व्यक्ति बिना किसी मशीनी सहायता के बिना मात्र छेनी हथौड़ी की सहायता से इतना ऊंचा पहाड़ कैसे तोड़ सकता है। परंतु यह आश्चर्य 'माउंटेन मैन' कहे जाने वाले एवं पद्मश्री से सम्मानित दशरथ मांझी ने कर दिखाया है। उनके लगातार 22 वर्षों के अथक परिश्रम से यह कारनामा हो पाया।

घाटी के पास एक पार्क स्थापित किया गया है। पार्क में दशरथ मांझी की स्मृति में उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है। साथ ही साथ इस के नजदीक में दशरथ मांझी समाधि स्थल स्थित है। दोपहर हो चुकी थी तो हम लोग एक पेड़ की छाया में भोजन करने के लिए बैठ गए, भोजन के दौरान ही हम लोगों ने पहाड़ पर जाने का निश्चय किया। कुछ देर बाद हमलोग पहाड़ की ओर प्रस्थान कर गए। आसमान में छिटपुट बादल छाने लगे थे। जब पहाड़ की ऊंचाई पर आए तो प्रकृति का एक अद्भुत दृश्य देखने को मिला। चारों ओर हरियाली के बीच ऐसा लग रहा था कि खुद प्रकृति धरा पर उतर आई हो। मेरा मन मंत्रमुग्ध हो

गया। लेकिन अचानक बादलों की गर्जन ने वापस लौटने की ओर इशारा कर दिया क्योंकि कुछ ही समय पश्चात बारिश होने वाली थी। पार्क में वापस आने के कुछ देर बाद ही बारिश शुरू हो गई। वहां आसपास काम करने वाले कुछ ग्रामीण भी ठहरे हुए थे, हम लोग भी वहीं ठहर गए। उन्हीं लोगों के बीच एक बुजुर्ग व्यक्ति भी बैठे हुए थे हम लोगों ने उनसे कुछ और अधिक जानकारियां लीं।

उन्होंने बताया कि - दशरथ मांझी कोई विशेष व्यक्ति नहीं थे, वे आम जनता की तरह दिखने वाले एक साधारण व्यक्ति थे, परंतु जिद्दी थे। उनके जिद्दीपन ने ही उन्हें विशेष बनाया। उन्होंने बताया कि वह अपनी पत्नी फाल्गुनी देवी से बहुत प्रेम करते थे। उनकी पत्नी की मृत्यु पहाड़ से गिर जाने के कारण हो गई थी। उसी घटना को लेकर इस पहाड़ को काटने की जिद पर अड़ गए और अपने 22 वर्षों के अथक प्रयास से इस आश्चर्य

को कर दिखाया। बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा कि ” यह कोई ताजमहल से कम नहीं है ।” फिल्म निर्माता केतन मेहता ने दशरथ मांझी को ‘गरीबों का शाहजहां” कहा है । हमें भी लगता है कि शाहजहां द्वारा मुमताज की याद में बनाए गए ताजमहल से कहीं बढ़कर मांझी की यह ‘गेहलौर घाटी’ है।

मैं हूँ आम इंसान

कमलेश कुमार
रौल - 79
सत्र - 2020-22



पूरे देश का पेट भरता हूँ साहब
पर खुद अपना पेट न भर पाता
सरकार की गलत नीतियों से लड़ता हूँ
कुछ लोग हमें उपद्रवी कहते हैं
पर मैं अपने हक के लिए
अंतिम समय तक लड़ता हूँ
और सरकार के फैसले को बदलवाने वाला
मैं हूँ आम इंसान

बेरोजगार हूँ साहब
पर अपनी बेरोजगारी से कितनों के
रोजगार चलाता हूँ
पर अपनी रोजगार का कुछ पता नहीं
घर छोड़े तो जमाने हो गए साहब
अपने ही घर में मेहमान हो गए
गांव वालों के ताने तो गाने जैसे हो गए हैं
सरकार की गलत नीतियों का मारा हूँ साहब
बेरोजगार हूँ साहब

बारिश रुकने के बाद हम लोग वापस अपने घर की ओर चल पड़े। आज आवश्यकता है गेहलौर घाटी को एक प्राकृतिक एवं प्रेरणादायक पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने की। ताकि, लोग उनसे प्रेरणा ले सकें कि अथक परिश्रम से कुछ भी करना संभव है।

विज्ञान



विभा राय
रौल - 76
सत्र - 2020-22

सोया जग तब जागा
जब विज्ञान चारों दिशा छाया।
आज हर सांस है प्रदूषित
परंतु उसका भी निराकरण आया।
बिलखती आस तक मुस्कुरायी
जब विज्ञान ने नया सवेरा दिया।
सिमट कर हम थे पृथ्वी पर
जिसने चांद से भी जोड़ दिया।
कैंसर और एड्स पर भी
एक नया उपाय निकाला।
हमारी सोई हुई जनता को
फिर से उठने का राह दिखाया।
विज्ञान मानव की शान है,
जिसके द्वारा मानव भी बना भगवान है।
विज्ञान ही कल्याण है,
और उसी से अब निदान है।
अंधविश्वासों को तोड़कर
एक नया मोड़ दिखलाया
हमारा विज्ञान ने एक सवेरा
हम सब को दिखलाया
सोया जग तब जागा
जब विज्ञान चारों दिशा छाया।

A traveller's tale

Nidhi Verma

Roll no. - 61

session - 2020-22



It was one of those winter days when you want to spend your morning time with a cup of tea while enjoying the chilly vibes of nature and adore the rising of the sun for giving its energy to make you swing in your work. Though, on leisure days, you would better wrap yourself in a blanket and don't even want to get up.

But, it was not that chill morning for her in either way. She was in a hurry to pack her bags, even three layers of woolen clothes were not enough to provide her that warmth in that cold breeze of air. Somehow she managed to make herself comfortable and departed for completing her goals which she had found no opportunity in her hometown.

It was her first time with those heavy luggage which she alone hardly managed to walk with. But it was her release from the responsibility of home and focus of her aim which kept her at a fast pace. But, At the same time, that liberation was not releasing her from the responsibility of her parent whom she was leaving behind.

Finally, she reached the station and took her seat with those heavy thoughts. Then the interesting yet peculiar surroundings of her compartment captured her sight. She noticed that the whole group of people was making a circle of life.

On one side, A young man was busy talking on his phone about his business enhancement and matters related to money. On the other side, a couple was trying to calm their two kids who were fighting for chocolates. On one of the berths, An old couple was sitting silently and his middle aged son was making them comfortable by providing them blankets and tea. All these scenarios were making her more confused and raising the question that 'will all these responsibilities never gonna finish ever?' And then a few lines took rhythm in her mind -

Sometimes i skip reality

To relieve myself.

This takes me to illusion

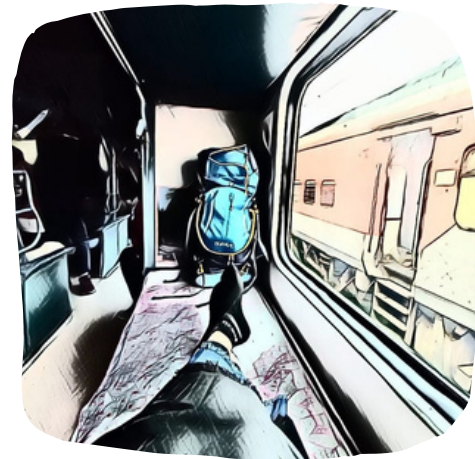
And then it fills me with lots of confusion.

Can't reality be that satisfying

Which can stop me from traveling in mind?

What's the purpose of mine?

Are all my actions fine?



She was busy in her thoughts when that young busy man struck a conversation with her. He was astonished at her traveling alone and kept speaking about the girl's safety issue. He then praised her for her courage to travel by herself. She was happy to hear that but again questions flashed in her mind.

Isn't it normal to take your own responsibility? So why are girls questioned or tagged extraordinary for doing the same? Or perhaps, I am becoming more independent than the mindset of the society.

And then She felt a sudden spark of freedom in herself and some lines flowed in her mind vanishing all her confusions-

Be a free bird in the sky
And take your own wings to fly
Go to the infinity,
Setting yourself free for eternity.

So why running away
Accept everything that comes your way.
Take your each fly with joy
Then this world'll be yours
and you'll reach high.

After a while, The train horn interrupted her and took her in the moment. And the train started to move slowly taking her to the journey of life, the journey of herself.

नारी

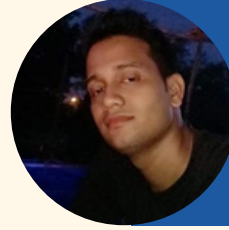
दीक्षा रानी
रौल - 24
सत्र - 2020-22



नारी है इस जग मे प्यारी
फिर अत्याचार क्यूँ झेल रही है नारी
माँ है नारी, बहन है नारी
बेटी है नारी,पत्नी भी नारी
घर की लक्ष्मी है नारी
लगती है सबको प्यारी
पर खुद को पाती अधूरीनारी
माँ सीता भी नारी
माँ दुर्गा भी नारी
माँ काली भी हैं नारी
हमारी पूजनीय है नारी
जीवन का आधार है नारी
घर को सशक्त है बनाती नारी
जग में नारी ,जग है नारी
सबसे विनती करती है नारी
विपती में रक्षा करना हमारी
आंसू नहीं बहने देना हमारी

बेबसी

गौरव कुमार वर्मा
क्रमांक- 67
सत्र- 2020-22



गांव से बुधवा, आया शहर था
गाढ़े की चादर थी, लूंगी लपेटे था
खींचे था रिक्शा, फुके था बीड़ी
फुके था बीड़ी, निकले थे दम
गांव से बुधवा, आया शहर था ।

छप्पर थी ,छानी थी, बीवी थी,बच्चे थे
अम्मा की खांसी थी, बापू का दम्मा था
छाई बेकारी थी, पेट भी खाली थी
गांव से बुधवा आया शहर था ।

आकाश के नीचे था, घरती के ऊपर था
अलाव की आग भी ठंडी पड़ी थी
ओस की बूंदे बदन पर पड़ी थी
आकाश की आंखें भी शायद छलकी थी
गांव से बुधवा आया शहर था ।

कोरोना महामारी की शैक्षिक त्रासदी

कोरोना महामारी के कारण जो देशव्यापी लॉकडाउन लगा उसमें हमारे जीवन की रफ्तार थम-सी गई थी। सब कुछ पहले जैसा नहीं था, लेकिन फिर भी कुछ काम तो बंद हो चुके थे और कुछ अति आवश्यक कार्य अभी भी चल रहे थे, जो मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण थे।

इस महामारी के दौरान सबसे अधिक शिक्षा प्रभावित हुई। जिनके पास सुविधाएं उपलब्ध थी, वह तो ऑनलाइन क्लास के माध्यम से अपने पढ़ाई को जारी रख सके। और, उनके अभिभावकों ने भी पूर्ण सहयोगात्मक वातावरण प्रदान किए। लेकिन गाँव के गरीब परिवार के बच्चे शिक्षा से दूर होते गए। महामारी के कारण विद्यालय बंद होने के बाद सर्वप्रथम बच्चों के मन में यह बात घर कर गई कि विद्यालय बंद यानी पढ़ाई बंद। गर्मियों के दिन में वे बच्चे सुबह से शाम तक अपना समय खेल में ही बर्बाद करने लगे। गर्मियों में चमकी बुखार ने भी कुछ बच्चों को अपना ग्रास बना लिया। कुछ बच्चे जो पढ़ना चाहते थे, उनके ना तो माता-पिता पढ़े थे ना ही उनके पास कोई सुविधाएँ जैसे कि टीवी, मोबाइल या इंटरनेट उपलब्ध थे जिसके द्वारा वह अपनी पढ़ाई जारी रख सकते थे।

लगभग 10 माह के पश्चात जब विद्यालय में कक्षाएँ पूर्ववत चलने लगी तो यहां सबसे बड़ी समस्या बच्चों की उपस्थिति की आई। बच्चे जो हमेशा खेलकूद में लगे रहते थे, उन्हें विद्यालय आना पसंद नहीं आया। बच्चों को अब सिर्फ खेल से लगाव था, साथ ही साथ पाठ भूलने के बदले मिलने वाली सजा का डर भी सता रहा था। दूसरी ओर वैसे बच्चे भी थे जो विद्यालय जाना तो चाहते थे, लेकिन अभिभावकों ने उन्हें वहाँ जाने ही नहीं दिया। इसका भी एक कारण था – बच्चे जो काम में हाथ बंटाते थे या खेतों में काम करते थे, वह अब अपने परिवार की आर्थिक रूप से मदद कर रहे थे। या यूनं कहेँ लॉकडाउन के बाद आर्थिक मंदी के शिकार हो गए थे।

इस तरह लगभग 50% बच्चे विद्यालय से दूर थे शेष 50% बच्चे जो विद्यालय में उपस्थित थे उनकी दशा बहुत ही दयनीय है। कक्षा आठवीं के बच्चे अच्छे से किताब को पढ़ नहीं पा रहे या जो बच्चे पढ़ भी रहे हैं तो उसका अर्थ नहीं समझ पा रहे हैं। अभी जो बच्चे कक्षा पांचवीं में नामांकित हैं वह हिंदी और अंग्रेजी के सभी अक्षरों को पहचानने में भी असमर्थ हैं। इस कारण शब्दों या वाक्यों को लिखना भी इनके लिए चुनौती भरा ही प्रतीत होता है।

कितने ही बच्चे हैं जो अभी भी विद्यालय में नामांकित नहीं हैं। इन बच्चों की शिक्षा को मुख्यधारा में लाना सरकार के लिए चुनौती है। हालांकि सरकार के द्वारा इस महामारी के दौरान 'मेरा दूरदर्शन मेरा विद्यालय' और 'मेरा मोबाइल मेरा विद्यालय' जैसे कार्यक्रमों के द्वारा बच्चों तक शिक्षा की पहुँच बनाने का सराहनीय प्रयास किया। लेकिन बुनियादी सुविधाओं के अभाव के कारण या आर्थिक तंगी के कारण बच्चे शिक्षा से दूर ही रहे। इसका प्रभाव बच्चों पर लंबे समय तक देखने को मिल सकता है।



कीर्ति कुमारी

रौल – 12

सत्र – 2020-22

इस महामारी ने कितने ही लोगों के जीवन को तबाह कर ही दिया। साथ ही साथ कितने ही बच्चों का भविष्य अंधकारमय बना दिया। ऐसी परिस्थिति में शिक्षकों का यह परम कर्तव्य है कि वह उन 50% बच्चे जो विद्यालय से दूर हैं उन्हें विद्यालय तक पहुँचने में सहायता प्रदान करें और शेष 50% बच्चे जिनकी स्थिति दयनीय है उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की कोशिश करें। वे बच्चे जो किसी कारणवश सवालियों के उत्तर देने में असमर्थ हैं उनके साथ भी मैत्रीपूर्ण व्यवहार करें। उन्हें खेल – खेल में विषय – वस्तु को

समझाएँ जिससे बच्चे कम समय में अधिक सीख पाए। पिछले दो सालों से प्रारंभिक स्तर के बच्चों को अगली कक्षाओं में प्रोन्नति दिया जा रहा है और अब इन विद्यालयों में वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाना है। परीक्षा के दिन बच्चों की उपस्थिति कितने प्रतिशत होगी और परीक्षा उपरांत उनके प्राप्तांक कितने प्रतिशत होंगे, यह तो आने वाला समय ही तय करेगा। इसके लिए जरूरी है कि प्रश्नों का स्तर परिस्थिति को देखते हुए रखा जाए और बच्चों

के लिए अधिक से अधिक प्रश्नों के विकल्प के तौर पर रखा जाए जिससे बच्चों को उत्तर लिखने में कठिनाई ना हो।

हमारे देश का भविष्य बच्चे हैं। इसीलिए हम सभी नागरिकों का यह कर्तव्य है कि अपने दिनचर्या में से कुछ घंटे उन बच्चों के लिए भी रखें जो पढ़ाई में पिछड़ रहे हैं। क्योंकि इस महामारी ने शैक्षिक रूप से भी बहुत क्षति पहुँचाई है और इसे दूर करने के लिए हम सभी को प्रयासरत रहना चाहिए।

शिक्षा और नैतिकता

आलेख

आज का हमारा समाज जो कहने को तो शिक्षा के सर्वोत्कृष्ट शिखर पर खड़ा है, परंतु नैतिकता की कसौटी पर परखा जाए तो यह पाताल में अपना मुँह छुपाए नजर आता है।

आज हमारा समाज धर्म के आदर्शों को छोड़ नैतिक रूप से गलत चीजों को आत्मसात करता जा रहा है। चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार और रिश्तखोरी हमारे जीवन की रोजमर्रा में इस कदर शामिल हो गए हैं कि अब यही आदर्श प्रतीत होते हैं। सत्य और नैतिकता का पालन करने वाले को मूर्ख समझा जाता है।

आशीष रंजन

रौल - 8

सत्र - 2020-22



क्या कारण है लोगों के नैतिक अवमूल्यन का?

वास्तविक शिक्षा से कभी नैतिकता का हास नहीं हो सकता। लोग व्यक्तिगत स्वार्थ में अंधे हैं। खुद का विकास मगर किस कीमत पर? आज भाई-भाई से लड़ रहा है छोटी-सी जमीन के लिए। यह तो कुछ भी नहीं, यहां तो मां-बाप के भी बंटवारे होते हैं। 'मां मेरे पास तो पिताजी तुम्हारे पास'। कदापि ही यह व्यंग्य नहीं है जरूरत है। इसके अंदर छुपी वेदना पहचानने की।

साम्राज्य का विस्तार दूसरे की जिंदगी की कीमत पर। युद्ध, परमाणु, जैविक एवं रासायनिक हथियार ये सारी चीजें भला कौन-सी शिक्षा का फल है? शिक्षा तो हमें 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः' सिखाता है। यह तो वसुधैव कुटुंबकम्, अहिंसा परमो धर्म और संतोषम् परम सुखम् का पाठ पढ़ाता है।

परंतु यह शिक्षा लोगों के आदर्शों तक ही सीमित रह जाती है, हम व्यवहार में नहीं उतर पाते हैं।

इसका कारण क्या है?

इसका कारण है आत्मचेतना का शून्य होना, नैतिक शिक्षा का ना होना। शिक्षा से ज्ञान देना जरूरी है मगर उतना ही जरूरी है उस ज्ञान को सही दिशा देना, वरना उसी शिक्षा का उपयोग मानवता का विनाश में हो सकता है। जैसे विज्ञान का सही आविष्कार बल्ब पूरी दुनिया को प्रकाशित कर सकता है तो परमाणु बम दुनिया का विनाश भी कर सकता है। शिक्षा का उपयोग सर्वत्र मानव कल्याण के लिए ही होना चाहिए। जरूरत है हमें जियो और जीने दो के सिद्धांत का पालन करने की।

लोग पैसे की चकाचौंध को ही सफलता मानने लगे हैं और उस सफलता को पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। फिल्म भी नेगेटिव किरदार को रोल मॉडल के रूप में प्रस्तुत करती है। जिसका किशोरों के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। नशा को भी आदर्श के रूप में चित्रित किया जाता है। बहुत दुख होता है अखबार में

खबर पढ़कर की नौवीं दसवीं कक्षा का विद्यार्थी अपना शौक पूरा करने के लिए और शौक भी उनका क्या है महंगी गाड़ियां, महंगा मोबाइल आदि के लिए चोरी करता है।

क्या विचारधारा गढ़ी है हमने उनके मन में जाने या अनजाने में?

कतई गलती उनकी नहीं है। गलती है समाज की, शिक्षा की जो कि महंगी गाड़ियों, बड़े बंगलों को ही सफलता और आदर्श मानते हैं। गलती है उस शिक्षक की जो विद्यार्थी के माता-पिता का

पेशा पूछ कर उसके प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित हो जाते हैं। यह मानसिकता आखिरकार हमने खुद ही गढ़ा है वक्त के साथ।

बदलाव के लिए जरूरी है धार्मिक शिक्षा को औपचारिक शिक्षा में शामिल करने की। इस शिक्षा को व्यवहार में कार्यों द्वारा समाहित करने एवं शिक्षा में योग एवं दर्शन को शामिल करने की। इसी के द्वारा सद्ज्ञान, आत्मज्ञान तथा आत्म संतुष्टि को पाया जा सकता है जो अगले पीढ़ी के लिए नैतिकता की एक नई नींव रखेगा।

कविता

युद्ध होता बड़ा विभीषक

आनंद कुमार
रौल - 82
सत्र - 2020-22



त्वरित त्याग दो मानव ,
जरूरी है परिधान नहीं
युद्ध होता बड़ा विभीषक,
समस्या का समाधान नहीं।
द्वेष और बर्बरता से,
मानवता का करो अपमान नहीं
यहां राम बुद्ध पूजे जाते हैं,
रावण का होता सम्मान नहीं।
गांधी ने अहिंसा से जग जीता,
क्या इसका तुमको ज्ञान नहीं
हिंसा सदैव होती विनाशक,
क्या ज्ञात तुम्हें परिणाम नहीं।
सुख रहे जख्म जो मुश्किल से,
उसमें डालो अब प्राण नहीं,

हिरोशिमा नागासाकी की तरह,
बनाओ दूजा श्मशान नहीं।
मानवता की रक्षा में लूट जाए,
अनमोल उससे कोई प्राण नहीं,
तड़प उठे पर पीड़ा देख,
उस हृदय से विशाल कोई आसमान नहीं।
मानव सेवा ही सर्वोपरि है,
इससे ऊंचा कोई शान नहीं।
शांति प्रेम से जग होगा स्वर्ग,
द्वेष घृणा से धरा का कल्याण नहीं।
त्वरित त्याग दो मानव ,
जरूरी है परिधान नहीं
युद्ध होता बड़ा विभीषक,
समस्या का समाधान नहीं।



Impact of Social Media on Youth

Prashant Kumar
Roll – 92
Session – 2020–22



In today's world, we are increasingly getting dependent on science, technology, and innovation. People use technology to connect to their friends, family, and loved ones. Social media platforms have facilitated easy connections among people. Being in virtual reality excites people more. But the overuse and addiction is the real problem here. People are in a false sense of being busy. For unversed, examples of social media applications are Facebook, Instagram, Twitter, Whatsapp, Tumblr, Snapchat, etc. to name a few. People like to spend more time on these platforms rather than being present in real surroundings. They care more about being pretty or handsome on social media platforms by editing and using filters. The only thing that matters to them is the number of likes and comments on their post. Things like how much their follower base is or how many social media friends they matter more than their actual friends. People stay online all the time on their phones and pretend to be busy. Young boys and girls are more prone to the side effects of social media. At a time when young

students should focus more on their careers, they tend to waste time on social media platforms. They are more likely to fall prey to the world of virtual reality. This will mean no time to study and fewer athletic activities.

The launch of cheap smartphones, data, and 4G technology has worsened this problem. The real reason may be attributed to not educating and creating awareness about the ill effects of social media. The Indian school curriculum should include a chapter on social media and its effects on young minds. From class 6 onwards, a chapter on this matter will work wonders. Various online crimes arising out of social media have left children and adolescents prone to depression and self-harm. Crimes such as cyber bullying, harassing, stalking, making threats, leaking of private photos, etc. have a toll on the physical and mental well-being of a person. Teaching ways to deal with the aforementioned threats is the most suitable way to avoid crimes. Spending time with friends and family will help people to be genuine and healthy. Various researches have shown that physical connection is more important for the overall development of people, especially children. So, it is safe to say that restricting the usage of social media is the best for everyone.

राष्ट्रीय एकता शिविर की यादें

राष्ट्रीय सेवा योजना हर साल राष्ट्रीय स्तर पर शिविर का आयोजन करता है। जिसका उद्देश्य होता है विभिन्न राज्यों की संस्कृतियों को समझने का अवसर देना। वर्ष 2017 में राष्ट्रीय सेवा योजना के दस दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर में भाग लेने के लिए मेरा चयन ए.एन. कॉलेज, पटना से हुआ था। मैं बहुत खुश था। राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन श्री रामचंद्र मिशन, अमलेश्वर जिला – दुर्ग (रायपुर) छत्तीसगढ़ में भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा किया गया था। इस राष्ट्रीय शिविर में भाग लेने के लिए पूरे बिहार राज्य से मात्र 10 छात्रों का चयन किया गया था। मैं अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ जो इस राष्ट्रीय शिविर का हिस्सा बन सका।

रवि कुमार

रौल – 86

सत्र – 2020-22



हमारी दस सदस्यीय टीम की यात्रा पटना के राजेंद्र नगर टर्मिनल से प्रारंभ होकर रायपुर जंक्शन पहुंची। रायपुर जंक्शन के बाहर ही हमारी मुलाकात अन्य राज्यों के छात्रों से हुई। 16 राज्यों के छात्र-छात्राओं को इस शिविर में भाग लेने के लिए बुलाया गया था। यह हम सबकी पहली मुलाकात थी। रात्रि का समय था, हम सभी एक दूसरे को देख रहे थे परंतु किसी से बात नहीं हो रही थी। सभी अपने-अपने समूह के साथ बस का इंतजार कर रहे थे। रामचंद्र मिशन की एक बड़ी वोल्वो बस हमें ले जाने के लिए आयी। स्टेशन से आश्रम के रास्ते में रात्रि के समय का दृश्य बहुत ही रोमांचित कर रहा था। रात्रि के लगभग नौ बजे रामचंद्र मिशन आश्रम पहुंचे तो, वहाँ हम सबका भव्य स्वगत किया गया।

वैसे तो राष्ट्रीय शिविर की शुरुआत सुबह की योगा सत्र से हो थी परंतु आधिकारिक तौर पर शिविर की शुरुआत उद्घाटन-सह-स्वागत समारोह से हुई। शिविर के शुरुआती दिनों में सभी छात्र अपने-अपने समूह में ही रहा करते थे, कोई किसी दूसरे समूह से मिलजुल नहीं रहा था। नए लोगों से मिलना हमेशा शुरु में असहज होता है, और छत्तीसगढ़ में उन दिनों

हुए नक्सली हमलों के तुरंत बाद हम वहाँ गए थे तो एक डर उसका भी था। हमारे पूरे दिन के क्रियाकलापों का मॉनिटरिंग हो रहा था शायद इसलिए सभी छात्रों के डर को दूर करने के लिए दूसरे दिन वहाँ के जिला पदाधिकारी का भाषण हुआ जिसमें उन्होंने अपने शब्दों से हमारे मन के भ्रम को दूर किया तथा राष्ट्रीय एकता शिविर के महत्व को समझाया। उन्होंने याद दिलाया कि इस शिविर का थीम 'एक भारत – श्रेष्ठ भारत' है, आप सब को एक-दूसरे के साथ घुल मिलकर इस कार्यक्रम को श्रेष्ठ बनाना होगा। उसके बाद सभी खुल के उस शिविर का आनंद उठाने लगे। शिविर का मुख्य मकसद था हमारे देश की एकता को और मजबूत बनाया जाए।

शिविर की शुरुआत हर दिन सबसे पहले योगाभ्यास होती थी जिसके बाद पंद्रह मिनट का ध्यान सत्र होता था। योग सत्र के बाद सफाई अभियान चलाया जाता था। सभी राज्यों के छात्रों ने मिलकर वहाँ एक तालाब को फिर से जीवित कर दिया, जो गंदगी के कारण मृत पड़ा हुआ था। शिविर की सबसे आकर्षक बात यह थी कि हर रोज पूरे दिन के क्रियाकलाप किन्हीं दो राज्यों के द्वारा परफॉर्म किए जाते थे। सभी राज्य अपने राज्यों के खान-पान, वेशभूषा, बोलियाँ, खेल एवं सभ्यता- संस्कृति की खास विशेषताओं का प्रदर्शन करते थे और रात्रि में सत्र का समापन राज्य विशेष के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ

“

हमारी दस सदस्यीय टीम की यात्रा पटना के राजेंद्र नगर टर्मिनल से प्रारंभ होकर रायपुर जंक्शन पहुंची और रायपुर जंक्शन के बाहर ही हमारी मुलाकात अन्य राज्यों के छात्रों से हुई। 16 राज्यों के छात्र-छात्राओं को इस शिविर में भाग लेने के लिए बुलाया गया था। यह हम सबकी पहली मुलाकात थी। रात्रि का समय था हम सभी एक दूसरे को देख रहे थे परंतु किसी से बातें नहीं हो रही थी। सभी अपने-अपने समूह के साथ बस का इंतजार कर रहे थे।

”

होता था। हर रोज बेहद ज्ञानवर्धक होता था। हर दिन अलग-अलग राज्यों की सभ्यता संस्कृति देखने को मिलती थी। बंगाल का मातृ-पितृ दिवस हो, राजस्थान का घूमर नृत्य, गुजरात का ढोकला तथा



जूही बाला कर्ण

रौल - 73

सत्र - 2020-22

डांडिया का नृत्य, आंध्र प्रदेश का सांभर, डोसा, वड़ा और वहां की वेशभूषा बेहद आकर्षक थी। छत्तीसगढ़ का शैला तथा पंजाब का भांगड़ा नृत्य सभी को आकर्षित कर रहा था। गुजरात का गरबा, महाराष्ट्र की लावणी, मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य तथा आंध्र प्रदेश की कुचिपुड़ी प्रथम बार देखने को मिली। जिस दिन हमारे बिहार की बारी आई उस दिन हम लोग सुबह से ही बहुत उत्सुक थे। हम लोग अपने पारंपरिक वेशभूषा में थे। लड़कियां साड़ी तथा लड़के धोती-कुर्ता पहने हुए थे। नाश्ता में लिट्टी-चोखा तथा दोपहर के भोजन में बिहारी स्वाद चखाया गया। खेल में कबड्डी तथा रुमाल झपट्टा का आयोजन किया गया। रात्रि में हम सभी ने बिहारी लोकगीत प्रस्तुत किए। हमारे एक साथी ने जब 'जिया हो बिहार के लाला' पर डांस किया तो पूरा हॉल झूमने लगा।

एक जट-जटिन गाना पर सभी ने समूह नृत्य प्रस्तुत किया तथा अंत में बिहार की स्पेशल छठ पूजा की झांकी प्रस्तुत की गई। जब छठ पूजा की झांकी प्रस्तुत की गई तब सभी ने हॉल में खड़े होकर अर्घ्य देते समय प्रणाम अर्पित किए।

एक दिन सफाई अभियान के दौरान अमलेश्वर के थाना अध्यक्ष से हमारी मुलाकात हुई। वह सफाई के काम को देखकर हमसे अत्यंत प्रसन्न हुए। उनसे बातचीत के दौरान पता चला कि वो भी बिहार से ही हैं। उन्होंने अपने थाने में आने को निमंत्रित किया। वे वहां के प्रशासनिक कार्यों के बारे में बताए। एक थाना में बैठकर जलपान करना तथा वहां के कार्यों को समझना हमेशा याद रहेगा।

शिविर के अंतिम दो दिन हमें छत्तीसगढ़ के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कराया गया। पुरखैती मुक्तांगन, इस्कॉन मंदिर, और रायपुर का मरीन ड्राइव घूमकर मज़ा आ गया। साथ ही इन ऐतिहासिक स्थलों के बारे में जानकारी भी बढ़ी। शिविर के अंतिम दिन समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सभी प्रतिभागी को प्रमाण पत्र तथा शील्ड प्रदान किए गए। इस कैंप में हम सभी ने पूरे भारत को एक साथ एक स्थान पर देखा और गांधीजी का सपना 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' को साकार करने का प्रण लिया।

आ खुद को ढूँढ ले तू
चल उठ खड़ी हो स्वयं के लिए,
माथे पर क्यूँ हो चिंता की लकीरें लिए ?
वो चिंताएँ जो तुझ पर जमाने ने थोप दिए,
क्यूँ तू है इसे सँजोये हुए ?
मैं जानती हूँ कि प्रवृत्ति ऐसी नहीं तेरी
जो सब कुछ छोड़कर भाग जाए,
भले ही तू खुद को मिटाकर उनका भला कर जाए।

जरा सोँच उन आंखों की खुशी,
जिन्हें ख्वाइश थी सिर्फ उड़ान की तेरी।
अंकुर-सी नई अंगड़ाई भरकर,
नयन जग में खोल ले तू
आ खुद को ढूँढ ले तू

जिस दृढ़ता से तूने जमाने के है सितम सहे,
उन हिम्मतों को फिर बटोरकर खुद को दे दिशाएँ नए
लगा लगन ऐसी अपनी चाहतों से,
जैसे प्रीत है धरती को बारिशों से।

जरा गौर कर उन अद्भुत
मिलन के साक्ष्य होते हैं कैसे,
गडगड़ाती चमकती हुई बिजलियाँ
मिलन के प्रमाण देते हैं ऐसे।
ये प्रमाण भी स्वयं में है अपवाद लिए,
कि वायु जैसी हीन चालक ने भी
बिजलियों को रास्ते दिए।

बना अपना व्यक्तित्व तू भी ऐसा विशेष
कि तेरी जीवनी भी रख दे सबको झकझोर कर।
गगनचुंबी शिखरों को चूम ले तू
आ खुद को ढूँढ ले तू।

प्रतियोगी परीक्षा की समस्याएं

मुकेश कुमार
रौल नंबर - 31
सत्र - 2020-22



कर्मचारी चयन आयोग भारत सरकार द्वारा बनाई गई भर्ती एजेंसी है। यह आयोग भारत सरकार के विभिन्न विभागों को सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। हर साल यह आयोग भारत सरकार के तहत कई पदों पर नियुक्ति के लिए पर्याप्त संख्या में योग्य उम्मीदवारों की भर्ती करता है। यह भारत सरकार के मंत्रालयों और विभागों के अधीन और अधीनस्थ कार्यालयों में सभी चयनित उम्मीदवारों को नियुक्त करता है। घोषित पदों के लिए सबसे उपयुक्त एवं प्रतिभाशाली उम्मीदवारों के चयन के लिए यह आयोग विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं जैसे सीजीएल, सीएचएसएल, एमटीएस, सीपीओ आदि आयोजित करता है। इन सभी परीक्षाओं में आवेदकों की संख्या अधिक होने के कारण इन्हें कई स्तर व तिथि में आयोजित की जाती है तथा उन परीक्षाओं में नॉर्मलाइजेशन की भी व्यवस्था की जाती है। कई स्तर व तिथि में परीक्षा होने, प्रश्नपत्र का स्तर ऊंच नीच होने के कारण तथा नॉर्मलाइजेशन लागू करने से कुछ उम्मीदवार के प्राप्तांक बहुत ज्यादा बढ़ जाते हैं और कुछ का घट जाते हैं जिससे एक योग्य उम्मीदवार भी चयन की रेस से बाहर हो जाता है और एक अपेक्षाकृत कम योग्य उम्मीदवार अपना स्थान बना लेता है जिससे हताश होकर योग्य उम्मीदवार या तो उसकी तैयारी छोड़ देते हैं या डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं।

अतः हमारी राय में परीक्षा को एक ही दिन आयोजित किया जाना चाहिए या प्रश्नपत्र का लेवल एक समान रखना चाहिए। वर्तमान युग में

बेरोजगारी दर बहुत ज्यादा है जिससे इन आयोग द्वारा ली जाने वाले परीक्षाओं में आवेदन करने वालों की संख्या बहुत ज्यादा होती है। इसलिए आयोग को अपनी परीक्षा प्रणाली में सुधार करना चाहिए तथा विभिन्न लेवल की ली जाने वाली सभी परीक्षाओं की जगह एक परीक्षा ली जानी चाहिए जिससे उम्मीदवार का समय तथा आर्थिक बचत हो सके। समस्या यह भी है कि एक ही आयोग द्वारा विभिन्न प्रकार की परीक्षा आयोजित करने के कारण सभी प्रकार की परीक्षाओं तथा उनके मूल्यांकन तथा परिणाम जारी करने में काफी समय लग जाता है जिससे कई उम्मीदवारों को आवेदन करने की उम्र सीमा भी समाप्त हो जाती है। उन्हें परीक्षाओं में आवेदन करने का ज्यादा से ज्यादा मौका नहीं मिल पाता है। अतः सरकार को भी इन आयोग को ज्यादा परीक्षाओं के बजाए कुछ ही परीक्षा आयोजित करनी की चाहिए। ताकि वह समय से भर्ती विज्ञापन, परीक्षा, मूल्यांकन तथा परिणाम जारी करे तथा योग्य एवं कुशल उम्मीदवार का चयन कर सके।

कैसे बनेगा बिहार कृषि में निर्यातक?

नीतीश कुमार सिंह
रौल - 28
सत्र - 2020-22

बिहार में कृषि एक मुख्य व्यवसाय है। कृषि के क्षेत्र में सूबे में अपार संभावनाएं हैं। परंतु इच्छाशक्ति के अभाव में बिहार के किसानों की दुर्गति किसी से छिपी नहीं है। फिर भी कृषि बिहार में आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। लगभग 76% आबादी कृषि कार्य में लगी है। पूरे बिहार में भौगोलिक क्षेत्र लगभग 93.60 लाख हेक्टेयर है, जिसमें केवल 56.03 लाख हेक्टेयर शुद्ध खेती योग्य क्षेत्र है और सकल खेती क्षेत्र 79.46 लाख हेक्टेयर है। जिसमें लगभग 33.51 लाख हेक्टेयर सकल क्षेत्र विभिन्न स्रोत से सिंचाई प्राप्त करते हैं। जो कि कम है और सरकार को असिंचित क्षेत्रों में नहरों का विकास करना होगा जिससे किसानों को लाभ हो सके।

आज पूरे देश और दुनियां में बिहारी फसलों की मांग में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है जैसे हाजीपुर के केले, मुजफ्फरपुर की शाही लीची, मिथिला क्षेत्र का मखाना और भागलपुर के जर्दालू आम। हमारे राज्य के सोनम और गोविंद भोग चावल की किस्मों की भी मांग अत्याधिक बढ़ी है। प्रमुख कृषि फसलें चावल, धान, गेहूं, जूट, मक्का और तिलहन हैं। फूलगोभी, गोभी, टमाटर, मूली, गाजर आदि राज्य में उगाई जाने वाली कुछ सब्जियां हैं। गन्ना, आलू और जौ कुछ गैर-अनाज फसलें उगाई जाती हैं। परंतु इन फसलों के लिए बाजार और उचित मूल्य (एमआरपी) की व्यवस्था का अभाव है। हालांकि बिहार एक स्थलरुद्ध राज्य है फिर भी कोलकाता के बंदरगाह के माध्यम से समुद्र के लिए आउटलेट दूर नहीं है। साथ ही बिहार में पशुपालन की भी असीम संभावनाएं हैं परंतु प्रशासन की नीरसता के कारण इस क्षेत्र में भी बिहार लगातार पिछड़ता जा रहा है। हाल ही में बिहार जहां दूध उत्पादन में पूरे देश में तीसरे स्थान पर रहता था अब वह फिसल कर नौवें स्थान पर जा चुका है। आज हम किसानों की आय को दुगनी करने की बात करते हैं, यह पशुपालन विकास के बिना असंभव है।

दुर्भाग्यवश अच्छी मिट्टी, पर्याप्त वर्षा, उत्तम भूजल के बावजूद बिहार को अपनी पूर्ण कृषि क्षमता का एहसास नहीं हुआ है। इसकी कृषि उत्पादकता देश में सबसे कम है, जिसके कारण ग्रामीण गरीबी, कम पोषण और श्रम का पलायन होता है।

प्रकृति ने बिहार को ढेर सारी नदियां उपहार में दी है। परंतु वर्षा के मौसम में यही उपहार अभिशाप में बदल जाते हैं। लगभग पूरा उत्तरी बिहार मानसून के समय बाढ़ में डूबा रहता है। इस बाढ़ के पानी को बांध बनाकर कृषि हेतु उपयोग में लाया जा सकता है। तो वहीं दक्षिणी बिहार सूखा से ग्रसित रहता है।

अतः मेरा सुझाव यह है कि

i) किसानों को उनके फसलों का उचित मूल्य एवं

बाजार की व्यवस्था होनी चाहिए।

ii) किसानों को सरकारी योजनाओं से अवगत कराना भी जरूरी है ताकि योजनाओं का लाभ किसानों तक पहुंच सके।

iii) सरकार द्वारा कृषि प्रशिक्षण चलाएं जानें चाहिए ताकि किसानों को कृषि कार्यों में दक्षता हासिल हो सके।

iv) किसानों को उच्च उत्पादकता एवं संकर किस्म के बीज उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना।

v) किसानों के खाद्य एवं उर्वरकों की समस्या का निवारण।

यदि उपरोक्त समस्याओं का समाधान हम कर लेते हैं तो अवश्य ही हम कृषि क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे और एक दिन हमारा बिहार भी एक निर्यातक राज्य बनेगा।

Poem

Memory



Ajay Kumar

Roll - 64

Session - 2020-22

I am quick to learn,
My memory is a stern.
It is powerful and strong,
Thus, always right no wrong.
The sight I get by heart,
To listening to smart.
the readings I enjoy,
I am a super toy.
All for me to easy,
My mind is always busy.
I am the all for ever,
I am innocent and clever.
Learn more is my pleasure,
It helps my knowledge treasure.
Exams are fun for me
I recall so quickly.
So, I am self confident,
Unique and quite different.

बाज जिसे आसमान का बादशाह भी कहा जाता है, लेकिन उसकी बादशाहत जीवन पर्यंत निश्चित नहीं होती। उसे अपनी बादशाहत कायम रखने के लिए उसे जीवन के प्रति संघर्ष करना पड़ता है। फिर से उड़ान भरने की उम्मीद रखनी पड़ती है। मौत से भी लड़कर जीतने का हुनर सीखना पड़ता है और जिंदगी की नई शुरुआत करने का दृढ़ निश्चय ही, उसे नई जिंदगी और उसकी बादशाहत फिर से उसे दिलाती है।

मो. निज़ाम

रौल - 42

सत्र - 2020-22



दोस्तों, वैसे बाज अमूमन 70 वर्ष जीता है लेकिन 40 वर्ष की अवस्था आते-आते वह शिथिल एवं निष्क्रिय होने लगता है। उसके पंजे बड़े और लचीले हो जाते हैं, चोंच आगे से मुड़ जाता है तथा उसका पंख भी भारी हो जाता है। ऐसी अवस्था में वह न तो दूर तक उड़ सकता है और ना ही शिकार कर सकता है तो ऐसी स्थिति में उसके पास तीन रास्ते (उपाय) होते हैं-

- वह अपना शरीर त्याग दे और मृत्यु को प्राप्त हो जाए या
- अपनी प्रवृत्ति (अस्तित्व) को छोड़कर गिद्ध की तरह त्यक्त भोजन करे या फिर
- स्वयं को पुनर्स्थापित करे।

बाज ने तीसरा विकल्प चुना एवं अपने आप को पुनर्स्थापित करने में लग गया। सबसे पहले ऊंची पहाड़ी पर एकान्त में अपना घोंसला बनाया। कुछ दिनों बाद स्थिर होकर उसने पहले अपने चोंच को पत्थर पर मार-मार कर तोड़ा फिर अपने पंजे को भी उसी पत्थर पर पटक-पटक कर तोड़ लिया और जब ये दोनो थोड़ा-थोड़ा निकल आए तो फिर उसने अपने सारे पंख भी नोच डाले। इस सब में लगभग 5 महीने लगे। लेकिन पूरे 150

दिनों की पीड़ा एवं प्रतीक्षा के बाद मिलती है उसे वही भव्य व ऊंची उड़ान पहले जैसी।

यदि देखें तो बाज पहले वाला दो सरल विकल्प चुन सकता था लेकिन उसने सबसे कठिन तीसरा विकल्प चुना एवं फिर से वही गौरव एवं सम्मान के साथ आसमान में अपनी बादशाहत कायम की। और जिन्दगी के बाकी पल पूरी ऊर्जा, क्षमता एवं आत्मसम्मान से गुजारे।

दोस्तों, इसी तरह आज हम सभी अपने-अपने जीवन में कहीं न कहीं संघर्षरत हैं। हां कितनी बार हमें असफलताओं का भी सामना करना पड़ता है लेकिन जरूरत है कि हम धैर्य न खोएं, एवं पूरी ईमानदारी, त्याग और लगन के साथ प्रयास करते रहें तब तक कि जब तक हम अपने लक्ष्य को प्राप्त न कर लें।

दोस्तों, हम यह इंतजार कतई न करें कि सफलता हमें मिलेगी। हम यह प्रयास करें कि हम अपने लक्ष्य को पाकर ही दम लेंगे, हम सफलता लेकर ही रहेंगे। तभी हमलोग भी दे पाएंगे अपने जिन्दगी को नई उड़ान।

दृढ़ निश्चय एवं इच्छा शक्ति हो तो कुछ भी मुश्किल नहीं।

इसी संदर्भ में कवि वृंद का एक दोहा है
“करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरि आवत -जात ते सिल पर परत निशान”

इसी संदर्भ में शायर अल्लामा इक़बाल कहते हैं -

“खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बंदे से खुद पूछे कि बता तेरी रजा क्या है”

Impossible say: “I’m possible”

क्यों?

राकेश कुमार

रौल - 90

सत्र - 2020-22



आज यहां हर कोई अनजान क्यों है?
योजनाएं बड़ी - बड़ी पर तन कंकाल क्यों है?
आपस में मचा यह घमासान क्यों है?
आज यहां हर कोई अनजान क्यों है?

प्रकृति ने रचा यह कोहराम क्यों है
वादियों में थमी जिंदगी, यह विराम क्यों है?
हर ओर बिछी लार्शें यहाँ श्मशान क्यों है?
आज यहां हर कोई अनजान क्यों है?

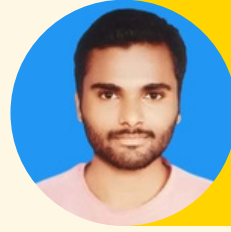
सरहद पर तनाव, कफ़न लाल क्यों है?
हमारा ही अक्स आज शैतान क्यों है?
कुछ पाने की मजबूरी का यह मकड़जाल क्यों है?
आज यहां हर कोई अनजान क्यों है?

अर्थव्यवस्था की गतिशीलता को लगा विराम क्यों है?
ढेरों बदलाब हुए पर जन-जन बदहाल क्यों है?
विदेशी चालों का देश शिकार क्यों है?
आज यहां हर कोई अनजान क्यों है?

जुस्तजू

सदियों बाद एक
मोहलत से आ रहे हैं,
खुद को लुटा के
कितनी शोहरत से आ रहे हैं।
एक ख़्वाब है जो अब भी दहक रहा है,
एक बेचैनी है जो दफन कर के आ रहे हैं,
लेप दिया है हमने खुद को भीत में
मां बीमार है घर में
और हम इफ्तार मना के आ रहे हैं।
एक जुस्तजू तो हमारे आहट की हो,
उसकी साए तले
अपनी परछाइयां डूबों के आ रहे है।
उम्र छोटी, ख्वाहिशें बड़ी है चंदन,

जिंदगी



मोहित कुमार ओझा

रौल नंबर - 80

सत्र - 2020-22

वक्त के साथ-साथ
चलने का नाम है जिंदगी।
अपनों को खुश रखने का
वादा है जिंदगी।
वह पल हो सुख का या दुःख का
साथ उसके कदम मिला कर
चलते जाने है जिंदगी।
संघर्ष के समय में
जीतने का हौसला है जिंदगी।
बीत गया कल हो
या आने वाला कल
हमेशा मुस्कुराने का काम है जिंदगी।
हर कदम कदम पर
एक एहसास है जिंदगी।

फिर भी कुछ नादानियां भुला के आ रहे हैं।
मेरे हिस्से में वह नहीं है तो कुछ भी नहीं
हम अपने ही हिस्से का जनाजा बना के आ रहे हैं।
सोचा था कि मशालें जलाएंगे
इस चाहरदीवारी पर,
पर कुछ बुज़दिल मोमबत्तियां
तो कुछ अगरबत्तियां
जला के आ रहे हैं।



चंदन कुमार

क्रमांक - 34

सत्र - 2020 - 22

खुद पर विश्वास रखें और आगे बढ़ें

मैं कोई लेखक या कोई कवि नहीं हूँ। मगर अभिव्यक्ति की तमन्ना आज मुझे कुछ कहने को प्रेरित कर रही है। इसलिए आज अपने मन के विचारों को आपसे साझा करना चाहूँगा। आप सब से आशा करता हूँ कि आप सब को मेरा विचार सार्थक प्रतीत होगा।

दोस्तों, आप सभी को पता है कि हम-सब देश के भविष्य हैं, आपको प्रेरणा की आवश्यकता नहीं, आप तो खुद एक प्रेरणा हो। उमंग से भरी आपकी निगाहें, उनमें कुछ करने का नया उत्साह आपकी रगों में बहने वाला रुधिर, हर पल खुद को साबित करने की कवायद, क्या आपको लगता है कि ये सब आपको अपने लक्ष्य से दूर कर देंगे?

गौरव भारती

रौल - 38

सत्र - 2020-22



नहीं दोस्तों, हमारा जीवन उतार-चढ़ाव की एक नियमित अवस्था है। किसी ने सच ही कहा है कि "परिंदो को भी मिलेगी मंजिल एक दिन, ये फैले हुए उनके पर बोलते हैं"। वही लोग अक्सर आपको खामोश मिलेंगे, जिनके शब्द नहीं जिनके हुनर बोलते हैं।

ये शब्द हम-सब को हमेशा याद रखना है कि कभी भी खुद की प्रतिभा पर हमें संदेह नहीं करना है। हम सब में कुछ नया है, हम सब में कुछ बेहतर है। जो लोग हमारा कुछ नहीं बदल सकते, भला उनकी आलोचनाएं हमें कैसे बदल देंगी, हमें अपने कार्यों से ज्यादा पहले अपनी सोच को नियमित करना है। हमें हमेशा इस बात का आभास होना चाहिए कि जितनी जद्दोजहद से हम सभी ने अपने ज्ञान के लिए प्रमाण-पत्र हासिल किया है, ये तथाकथित डिग्रियों के रूप में, क्या इन्हें व्यर्थ होने देना ही हमारे युवा होने की निशानी है? क्या हमने इसके लिए ही इतने इम्तिहान दिए थे ?

सर्द रातों में जागे थे, तपती दोपहरी में भागे थे। सारी बाधाओं को पार करते हुए, प्रवेश पत्र पर अंकित समय से पहले पूरी तैयारी के साथ परीक्षा भवन में पहुंच जाते थे। तैयारी आज क्यों नहीं ? जब जिंदगी में असली इम्तिहान देने का समय आ गया है। यह डिग्रियां जब हमारे सब ओर त्याग का प्रमाण हैं, तो

इन्हें अपने लफ्ज बोलने दो, खुलने दो अपने हुनर को। कहा जाता है कि वह प्रतिभा कैसी प्रतिभा, जिसे आप प्रदर्शित नहीं कर सकते। आज इस नकारात्मक घड़ी में देश को हमारी बहुत अधिक आवश्यकता है, हमें बिना किसी के सुलझाए, सुलझना होगा, बिना किसी के बताये अपने हुनर के बल पर अपना लक्ष्य निर्धारित कर उसे हासिल करना होगा। अगर हम सब ही एक उम्मीद रखेंगे औरों से, तो हम किसी की उम्मीद कैसे बन सकेंगे? याद रखिए मंजिल की तलाश में अगर हम निकले और मंजिल ना मिले, कुछ हो न हो दोस्तों फासले तो जरूर कम हो जाएंगे, तो फिर हम सब एक बार फिर प्रयास करेंगे, मगर हारने की उम्मीद से नहीं, दुनिया जीतने की उम्मीद से।

स्वामी विवेकानंद के वो शब्द हमेशा हमें याद रखना होगा कि युवा वो नहीं जो मार्ग चुने, युवा तो वो है जो मार्ग बनाए, जिनसे लोगों को उम्मीदें होती हैं, उन्हें त्याग को अपना लेना चाहिए, क्योंकि बिना इसके हमारे कार्यों में समर्पण का भाव नहीं आएगा। हमें किसी की आस नहीं देखनी, दशरथ मांझी की तरह एक मार्ग पर पूरे धैर्य के साथ लगे रहना है। और जब कोशिशें सार्थक न प्रतीत हों तो हमें अपनी कुशलता को नए तरीके से इस्तेमाल करना है, कार्यप्रणाली बदलनी है लक्ष्य नहीं।

हमें कोई बिना समझे, बिना जाने एक शब्द उपहार में दे जाता है, जैसे हमारा समाज, हमारे प्रियजन और कभी-कभी हमारे मित्र भी। बस हमें

उस वक़्त यही सोचना है कि इन्हें क्या पता हमारे अन्दर कैसी आग जल रही है? एक तमन्ना है जो मन के अंदर-ही-अंदर मचल रही है। हमें कभी भी परिस्थितियों से निराश नहीं होना है, क्योंकि दुनियां में वो इंसान सबसे ज्यादा अभागा होता है जो कभी असफल नहीं हुआ, जिसने कभी आलोचनाएं नहीं सुनी, जिसे किसी ने उसके बेवजह होने का एहसास न दिलाया हो, क्योंकि ऐसा इंसान कभी इस बात को नहीं समझ पायेगा कि असफल होने के बाद हमें जिंदगी से कैसे अनुभव मिलते हैं, वहां पर सभी चीजें हमें यथार्थ दिखने लगती हैं। हमें खुद के कार्यों का हिसाब दिखने लगता है, और इसी में सृजन होता है एक तपती प्रतिभा का।

हमने जितना भी ज्ञान अर्जित किया हो, कोई बात नहीं, अब हमें उसके सही जगह पर इस्तेमाल करने

का समय आ गया है, ये नहीं देखना कि हम कितना जानते हैं। बल्कि इस बात के लिए प्रयासरत रहना है कि इसमें नया आयाम कैसे आये, कैसे हम इसे और एक नया स्वरूप दे सकें। जब हमें जीवन के कड़वे अनुभव होंगे, समझ लीजिए तभी हम कुछ कर पाएंगे। दोस्तों ! याद रखिए जिनकी छत नही टपकती , उन्हें बारिश का एहसास नहीं होता। हमें अपने खुद के आधार पर आगे बढ़ना है और लक्ष्य को हासिल करना है , किसी की राह नहीं देखनी।

एक अनवरत प्रयास के लिए अपने कदम उठा लेने हैं, रास्ते में आने वाली मुश्किलों से निपटने की एक अभिलाषा लिए हुए।

स्टाइल

मनीष कुमार

रौल - 03

सत्र - 2020-22



फटी जींस हो या फटे कपड़े,
आज ये जो स्टाइल में शुमार है,
पहनते हैं पहले से ही गरीब बस्ती वाले,
फिर स्टाइलिश वो क्यों नहीं कहलाए !
माना धन की कमी के कारण,
उनके कपड़े थोड़े गंदे हैं,
तूने नए पहन लिए तो क्या,
स्टाइल तो वही है !
एक ओर गरीबी, बेबसी है
लाचारी है, फटेहाली
दूसरी तरफ शौक पूरे हो रहे हैं,
अमीरों की बस्ती में !
ना जाने ये कैसा जमाना है,
तौल दिया लोगों को एक कपड़े से,
दोनों हैं फटे हाल में,
फिर भी अंतर कितना है !

मुझे पढ़ना है

मुझे पढ़ना है,
चाहे कुछ भी हो जाए।
मैं बड़ा ज़िद्दी हूं, मैं हार नहीं मानूंगा।
चाहे कोई कितना भी पढ़ ले
मुझे उनसे अधिक पढ़ना है।
परिस्थिति चाहे जैसी भी हो,
उनसे हर हाल में लड़ना है।
जागते रहना है, पढ़ते रहना है।
मां- पिताजी के सपनों को
हकीकत में जो बदलना है।
जितनी बार मैं गिरूंगा,
उतनी बार उठूंगा और उसका सामना करूंगा
चाहे कुछ भी हो जाए मैं हार नहीं मानूंगा।
निराशा से भरे मन को मुझे खाली करना है,
उस खाली पड़े मन में मुझे आशाओं को भरना है।
मेरी हिम्मत मेरी लड़ाई से जानी जाएगी,
मेरी किस्मत मेरी पढ़ाई से जानी जाएगी।
जो लोग मुझसे कहते हैं मैं कुछ नहीं कर सकता,
उन्हें कुछ कर दिखाने की मैंने मन में ठानी है।
मैं बड़ा ज़िद्दी हूं अभी तक मैंने हार नहीं मानी है।



अनुज कुमार

रौल - 30

सत्र - 2020-22

जब खबर गई

जब खबर गई
मां बिखर गई।
पति की मौत
पत्नी की दुनिया उजड़ गई।
भाई की मौत से
बहन सिहर गई।
पिता की तो मानो
हिम्मत ही मर गई
चिराग बुझते ही
दुनियां ठहर गई।

How British exploited India

Jyoti Rashmi

Roll – 22

Session – 2020-22



India remained colony of Britishers for about two centuries. Previously too, India faced many invasions and transgressions on her land but it was British rule which proved most exploitative for India. In 1600, when East India company got its first charter, its prime objective was to earn profit. But the trade was mostly unilateral, as Britishers only imported Indian goods like spices, cotton, indigo, silk etc. But they had nothing which could be exported to India. The position, however, changed after 1757, as Britishers acquired political power after battle of Plassey. This was the beginning of era of exploitation.

Now, after gaining political powers, land revenue became an instrument of plundering peasants. The permanent settlement which was introduced by Cornwallis in 1793, earned revenue of £34,00,000. Surprisingly, revenue earned was not meant for public welfare. It was repatriated to England. Corrupt officers of the company also accumulated large wealth. For instance, Clive had nothing when he came to India but within a short

period of 2 years he generated a wealth of £2,50,000. This all drained the wealth of India to England.

Another phase of exploitation started after the onset of the 19th century, with the start of industrialisation in England. That time Indian clothes were in great demand in England, but the British government levied a heavy custom duty of 78% on imports of Indian products. However, their goods were kept duty free in India. This made India a market of British goods, and ruined our industry. The British capitalists were little interested in establishing industries in India but some industries, like jute industries, were set up due to geographical reasons. Plantation of tea, coffee and indigo were also of main interest. But these industries were not established to improve India's fortune. Capitalists had monopoly in supplies of these products and they earned huge profits. Plantation industries only exploited Indian workers.

For imperialist pursuits, the British government maintained a big army. It accounted for roughly one-third of government expenditure. These expenditures were also borne by poor Indians. Mid-nineteenth century saw massive investment by British

capitals in India. One such investment was in railways, but everything for this investment was imported from England, thus, local resources remained unused and the burden of interest was imposed on Indians. Capitals imported for Indian railways gave impetus to industrialization in England, and its benefits were denied to Indians. The British government charged Indians for such expenditures for which they were not even remotely concerned. For example, the cost of mutiny, the price of transfer, the transfer of company's rights to crown, war expenses with China etc.

कविता

ज़िन्दगी उदास है

ज़िन्दगी उदास है, जीने की अब न आस है
हथियार सबके पास है, खतरों का भी एहसास है।

गैरों की क्या बात करें,
अपने ही अपनों के शोषक है
अकेलापन हावी है सब पर,
चिंता ही दुख के पोषक है।
दुख के कांटों से छलनी है मन,
सुख की बस तलाश है
ज़िन्दगी उदास है, जीने की अब न आस है।

क्या करें या क्या न करें,
उलझने अब भी बहुत है
दर्द सीमा से परे है,
रास्तों में कांटे भी बहुत है
थक गई हूँ अब चलते-चलते,

After detailed discussions on every exploitative aspect of Britishers, we can say that, it was extreme economic exploitation which made British rule different from other invasions which India faced in past. Other invaders looted and plundered India and returned their homeland. Some of them settled in India and ruled but didn't drain the wealth of India to their motherland. But Britishers plundered and looted India continuously for two centuries. But, now we are fortunate as we are living in a true sovereign nation. But we should infer lessons from the history and keep our motherland safe and secure.



मनीषा कुमारी
रौल - 01
सत्र - 2020-22

कुछ भी नहीं अब मेरे पास है
जिंदगी उदास है, जीने की अब न आस है।
आंसुओं की बहती धारा, मत पूछो कि किसने मारा।

सुख तुम्हारा दुख हमारा, जीत तुम्हारी हार हमारा।
अब जैसे जिंदगी बेबस और लाचार है।
जिंदगी उदास है, जीने की अब न आस है।

डर-डर के अब मैं जीती हूँ, गम के आंसू भी पीती हूँ।
नहीं किसी को चाह मेरी, खुद ही खुद में जीती हूँ।
अब मेरी जिंदगी एक अनबुझी-सी प्यास है।
जिंदगी उदास है, जीने की अब न आस है।

मेघदूत : एक परिचय

संस्कृत जगत में 'मेघदूत' खंडकाव्य का बहुत बड़ा स्थान है। कालिदास की काव्य प्रतिभा और उनकी काव्य शैली इस खंडकाव्य में दिखती है। खंडकाव्यं भवेत्काव्यैकदेशानुसारि च-साहित्य दर्पण।

खंडकाव्य वैसे काव्य को कहते हैं, जिसमें जीवन के किसी एक पहलू को दिखाया जाता है। इसमें किसी एक रस की प्रधानता होती है। खंडकाव्य को ही गीतिकाव्य कहा जाता है, क्योंकि इसे गाया जा सकता है।

'मेघदूत' नामक काव्य में संस्कृत साहित्य के कविकुलगुरु दीपशिखा कालिदास ने अपनी काव्य शैली की प्रतिभा का लोहा सभी से मनवाया है। इसमें कवि का प्रकृति वर्णन, काव्य की मधुरता एवं उनके द्वारा उपमा का तर्कसंगत प्रयोग उनकी इस रचना में चार चांद लगा देता है। मेघदूत में कवि ने एक यक्ष को नायक के रूप में प्रस्तुत किया है। यह एक विरही यक्ष की वेदना भरी कहानी है। इस काव्य को कवि ने मंदाक्रांता छंद में लिखा है, जिससे यक्ष की उत्कंठा प्रतिबिंबित होती है।

मेघदूत का कथानक यह है कि इसमें एक यक्ष अपने स्वामी द्वारा प्रदत्त कार्य को करने में त्रुटि कर देता है। इसके कारण अपने स्वामी कुबेर द्वारा एक वर्ष के लिए निर्वासित होकर राम गिरी पर्वत पर रहता है। किसी प्रकार आठ मास व्यतीत करने के बाद आषाढ़ मास में काले- काले उमड़ते मेघ को देख अपनी प्रियतमा के वियोग से उत्कंठित हो उठता है और मेघ के द्वारा अपनी प्रिया तक संदेश पहुंचाने की प्रार्थना करता है।

यक्ष द्वारा मेघ को दिशा निर्देश करने के बहाने कवि ने प्रकृति, जनमानस की मेघ के प्रति सोच को बड़े ही रोचक ढंग से उभारा है। इसमें कवि का प्रकृति वर्णन काव्य का रसास्वादन करने वाले का मन मोह लेता है। उन्होंने प्रकृति को जड़ के रूप में नहीं अपितु एक जीते जागते चेतना युक्त मानव की ही भांति सुख- दुःख, आशा- निराशा आदि



आलोक कृष्ण
क्रमांक-35
सत्र- 2020-22

की अनुभूति करने वाले प्राणी की तरह दर्शाया है। कवि ने पूरे काव्य में कहीं भी जटिल एवं कलिष्ठ शब्दों का प्रयोग नहीं किया है। उनकी भाषा सरल है जो कि पढ़ने वाले को उनके काव्य रूपी सागर में डुबकी लगाने पर भाव विभोर एवं अह्लादित कर देता है। उनकी उपमा तो जगत प्रसिद्ध है। कहा भी गया है - 'उपमा कालिदासस्य'। वे इसमें सिद्धहस्त हैं। उन्होंने उपमा का इस काव्य में अनूठा प्रयोग किया है, जिससे काव्य की छटा देखते ही बनती है। 'मेघदूत' सरस्वती के वरद पुत्र दीपशिखा कालिदास की अनुपम कृति है। यह संसार के सभी गीतिकाव्यों में श्रेष्ठ तथा उन्नत है। इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।

इतिहास तुम्हें क्यों माफ करें?



राहुल कुमार
रौल - 68
सत्र - 2020 - 22

हाय यह नीचता कैसी,
यह मानवता कैसी,
जो मदद करें वह आहें भरे
इतिहास तुम्हें क्यों माफ करें
डॉक्टर-पुलिस के कर्मों पर
हर हिंदुस्तानी सदैव ही गर्व करे
और तुम जो परिचय देते हो
क्या पाप-अभिशाप न लेते हो
इन करतूतों पर कौन भला न शर्म करें
इतिहास तुम्हें क्यों माफ करें?
घर परिवार सब त्याग कर
हर पल मदद को खड़े रहे
उनकी बदौलत तुम आराम से घर में पड़े रहे
और जब बारी आई आभार की
तुम डंडे लेकर चढ़े रहे
इतिहास तुम्हें क्यों माफ करें?
बता बेशर्म करतूतों को
गंगा भी भला क्यों साफ करें
इतिहास तुम्हें क्यों माफ करें?

वर्तमान शिक्षा स्थिति एवं सुधार के उपाय

हम सभी यह जानते हैं कि शिक्षा का अधिकार मौलिक अधिकार है। इसे संविधान के भाग 3 के तहत अनुच्छेद 21 (क) में रखा गया है। इसमें 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की बात कही गई है। आज जब हम लोग आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं अर्थात् आजादी के 75 वर्ष पूरे होने को है, तब भी सभी बच्चों को शिक्षा तक पहुंच नहीं हो पाई है। बात और जटिल तब हो जाती है जब छोटे-छोटे बच्चे सड़क किनारे कचरा उठाते या होटलों में जूठन धोते नजर आते हैं। बच्चे आज तक बाल मजदूरी करने को विवश हैं।

हम सभी यह भी जानते हैं कि आज देश और दुनिया को चलाने के लिए जिस ताकत की जरूरत है, वह है मस्तिष्क की ताकत, ना की मांसपेशियों की ताकत। और नहीं पैसे की ताकत। अर्थात् हम सभी के जीवन में ऊंचाइयों को छूने के लिए, अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सबसे जरूरी तत्व है शिक्षा। हमारा ध्यान, हमारी सरकार का ध्यान सबसे पहले उचित एवं अनुकूल शिक्षा व्यवस्था पर होनी चाहिए। इसके लिए विद्यालय की व्यवस्था, शिक्षकों की संख्या, विषयवार शिक्षक एवं भाषा का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि सभी बच्चों को विद्यालय से जोड़ा जाए। एक भी बच्चा छूट न जाए। बच्चों में अमीर-गरीब एवं ऊंच-नीच का भेदभाव ना किया जाए।

आज हम सबके बीच सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय के विकल्प रहते हैं। हम लोग अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में भेजना पसंद करते हैं और गरीब लोग अपने बच्चों को सरकारी विद्यालय में भेजना पसंद करते एवं अपने मजबूरी का तर्क देते हैं। सभी लोग जानते हैं कि राज्य सरकार की सरकारी विद्यालय में अनुकूल

व्यवस्था, वातावरण एवं शिक्षक नहीं होते इसमें सुधार लाने की अत्यंत आवश्यकता है।

मेरा यह मानना है कि संपूर्ण देश में एक तरह की शिक्षा व्यवस्था लागू हो तभी सारे बच्चे विकास कर पाएंगे। हां, भाषा अपनी जगह पर अलग है लेकिन जैसी व्यवस्था केंद्रीय विद्यालयों में है, वैसी ही राज्य सरकारें भी अपने विद्यालयों में करें। राज्य सरकार की सरकारी विद्यालयों को भी उतना विकसित किया जाना चाहिए जितना एक अच्छा निजी विद्यालय रहता है। ऐसे में लोग



चंदन कुमार

रोल नंबर - 49

सत्र - 2020-22

अपने बच्चों को सरकारी विद्यालय में भेजने में संकोच नहीं करेंगे और सरकारी और निजी का अंतर भी नहीं रहेगा। राज्य सरकार को अपनी राजभाषा के साथ-साथ अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय भी खोले जाने चाहिए जिससे लोग अपनी पसंद के विद्यालयों में छात्रों को भेज पाएंगे। साथ ही सरकारी विद्यालय के शिक्षकों को वेतन संबंधी समस्याएं नहीं होनी चाहिए और ना ही उन्हें गैर शैक्षणिक कार्यों में लगाया जाए। राज्य सरकार भी शिक्षकों की नियुक्ति एवं वेतन केंद्र सरकार की तरह ही करें।

इस प्रकार संपूर्ण देश में एक प्रकार की शिक्षा व्यवस्था लागू की जाए। सरकारी कर्मचारी, नेताओं, समाज सुधारकों के लिए यह सख्त नियम होने चाहिए कि उनके बच्चे सरकारी विद्यालय में ही पढ़ें। इससे शिक्षा व्यवस्था पर ध्यान जाएगा एवं इसको उत्कृष्ट बनाया जा सकेगा। यदि ऐसा नहीं किया गया तो शिक्षा जगत का कायाकल्प मुश्किल है। साथ ही शिक्षा जगत को कभी भी राजनीति से ना जोड़ा जाए।

ईश्वर की खोज

आदि-अनादि काल से यह यक्ष प्रश्न सदैव मानव जाति को उद्वेलित करता रहा है कि ईश्वर कैसा है? और कहां है? सिंधु घाटी सभ्यता में ईश्वर की खोज कभी उर्वरता की देवी पृथ्वी के रूप में की गई तो कभी वैदिक सभ्यता में यज्ञों में हवन देकर हिरण्यदंत अग्नि को मानव और देवताओं के मध्य मध्यस्थ मानकर भौतिक सुखों के लिए प्रार्थना की गई। आगे चलकर छठी शताब्दी के जैन और बौद्ध आंदोलनों में महावीर और बुद्ध के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया गया। यह वह दौर था जब ईश्वरीय सत्ता से अधिक इहलोकिक सुख और संतोष पर बल दिया गया। परंतु प्रश्न आज भी वहीं का वहीं खड़ा है कि क्या ईश्वर की खोज व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण है? हमारे दिल और दिमाग में हमारी जाति और धर्म के अनुसार हमारे पूर्वजों के द्वारा आदि - अनादि काल से अपने अपने धर्मों के ईश्वर की छवि गढ़ दी गई है।

राहुल गोस्वामी

रौल - 05

सत्र - 2020 - 22



हिंदू धर्म में राम को धनुष के साथ दिखाया गया तो वही कृष्ण को मुरली मनोहर मोर मुकुट धारी बताया गया। यहां तक कि इस्लाम में तो ईश्वर की मूर्ति को ही प्रतिबंधित कर दिया गया क्योंकि उन्हें लगता है कि जिसने सबको बनाया उसे कोई कैसे बना सकता है? परंतु हिंदू धर्म में इस बात की छूट दी गई कि जिसने हमें बनाया हम उसे बनाकर उसके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित कर सकें। परंतु प्रश्न अब भी वही है कि जिसने पूरी कायनात बनाई क्या उसे खोजना इतना आसान है? जिस व्यक्ति ने अभी तक आत्मज्ञान प्राप्त नहीं किया अर्थात् स्वयं के बारे में नहीं जाना, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है ? क्या वह व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व और उसके उद्देश्य को समझने में सक्षम होगा ? मंदिर के मंत्रोच्चार, मस्जिद की अजान और चर्च की घंटियाँ सदियों से यह संदेश दे रही है कि ईश्वर का

अस्तित्व विद्यमान है और हमारे मानने ना मानने से इस बात पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। बेहतर होगा हम उस अनंत विराट स्वरूप को बुलाने से पहले अपने अंतरात्मा का सिंहासन स्वच्छ और खाली करें। ताकि जब वह आए तो उसे हम अपने मन-मस्तिष्क , दिल-दिमाग में सर्वोच्च स्थान देकर सम्मानित कर सकें।

कविता

कोई सामान नहीं है वो



राज कुमार

रौल - 44

सत्र - 2020 - 22

कोई सामान नहीं है वो
जो उसको देखने जाओ
किसी के घर में घुसकर तुम
निगाहें देखने जाओ
नुमाइश कोई लगी है क्या?
जो इतना हक से जाते हो।
किसी के ऐब गिनते हो
किसी पर शक जताते हो
सुनो इंसान है वो भी
उसे सब महसूस होता है
बस एक विकल्प बनने पर
उसका मन भी रोता है।
अरे इतना पढ़े हो तो
ज़रा-सा सोच कर देखो
समय की धूल से सना
यह चश्मा पीछ कर देखो
दिखेगी फिर तुम्हें सचमुच
सहमी-सी एक लड़की
आत्मसम्मान छिनने से
जिंदा बुत बनी लड़की
अगर सच में तुम्हें अपने,
घर लक्ष्मी हैं लाना
तो उसको देखने नहीं,
उससे मिलने जाना

प्रेरणा : दशरथ मांझी



यूँ तो दुनिया में कितने ही प्रेमी हुए जिनकी कहानियां सुनी और सुनाई जाती हैं। पर कुछ ऐसे भी प्रेमी हैं जिनकी कहानी से यह प्रतीत होता है कि प्रेम से बढ़कर कोई ताकत नहीं।

यह कहानी है ऐसे शख्स की जिसके प्रेम की मिसाल ताजमहल से कहीं ज्यादा चमकदार है। यह कहानी है ऐसे शख्स की जिसका निश्चय पहाड़ों से भी ज्यादा अटल था। हम बात कर रहे हैं 'द माउंटेन मैन' यानी दशरथ मांझी की।

दशरथ मांझी एक निष्ठावान, परिश्रमी, अटल निश्चय और सच्चे प्रेमी का नाम है। इनका जन्म गया जिला के गेहलोर गांव में एक गरीब और अनुसूचित जाति जाति में हुआ था। गरीबी होने के कारण शिक्षा-दीक्षा नहीं हो पाई। साथ ही इनका बाल विवाह पास के गांव की एक लड़की फाल्गुनी से करा दिया गया। घर में बदहाली की स्थिति रहने के कारण बहुत छोटे से उम्र में ही उन्होंने अपना घर काम के लिए छोड़ दिया। सात साल बाद वह वापस अपने गांव आए जहां अभी छुआछूत की प्रथा अपनाई जाती थी। उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों को पैरों तले दबा कर रखते थे। साथ ही उनके अशिक्षित होने का भी फायदा उठाते थे।

गेहलौर एक छोटा-सा कस्बा था जिसमें बहुत कम संसाधन मौजूद थे। पास में ही वजीरगंज शहर था परंतु एक विशाल पहाड़ होने के कारण लोगों को शहर पहुंचने में बहुत अधिक समय लग जाता था।

दशरथ मांझी अपनी पत्नी की एक मुस्कुराहट के लिए कुछ भी कर जाने का हौसला रखते थे। सन 1959 ई. की बात है, फाल्गुनी देवी किसी कार्य से पहाड़

पार कर रही थी तभी अचानक उनका पैर फिसल गया और वह पहाड़ से गिर पड़ी। वह बुरी तरह जख्मी हो चुकी थी। मांझी अपने कुछ साथियों के साथ अपनी पत्नी को लेकर डॉक्टर के पास चल दिए। परंतु पहाड़ पार कर वजीरगंज शहर आते-आते इतना समय लग गया कि रास्ते में ही फाल्गुनी देवी दुनिया से चल बसी। इस घटना ने मांझी को अंदर तक झकझोर कर रख दिया और उन्होंने निश्चय किया कि वे पहाड़ का सीना चीर कर रख देंगे। उन्होंने पहाड़ को काटकर एक सड़क बनाने का दृढ़ निश्चय किया जिससे उनके गांव का जुड़ाव शहर से आसानी से हो जाए।



गुंजन कुमार

रौल - 04

सत्र - 2020-22

यह निश्चय ऐसा था मानो जैसे कोई आदमी आकाश में सीढ़ियां लगाने की बात कर रहा हो। परंतु वे अपने निश्चय के साथ बने रहे और चल दिए छेनी हथौड़ी लेकर पहाड़ तोड़ने। लोग उनका मजाक उड़ाते थे, उन्हें पागल समझते थे।

जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, उनके प्रेम की ताकत ने रंग दिखाना शुरू कर दिया। बाइस साल के अथक परिश्रम व तमाम कठिनाइयों को अंगूठा दिखाते हुए आखिरकार दशरथ मांझी ने वह पहाड़ (110 मीटर लंबा, 7.7 मीटर गहरा, 9.1 मीटर चौड़ा) को काटकर रास्ता बना डाला। इससे उनके गांव और वजीरगंज की दूरी 55 किलोमीटर से घटकर 15 किलोमीटर हो गई। यह उनके सच्चे और गहरे प्रेम की ही ताकत थी जिससे वे असंभव लगने जैसे कार्य को लोगों की उपेक्षा सुनने के बाद भी संभव कर पाए।

उनकी मृत्यु 17 अगस्त 2007 ईस्वी में हुई और जाते-जाते दुनिया को एक बड़ी सीख दे गए - 'अटल निश्चय और अथक परिश्रम से व्यक्ति हर असंभव कार्य को संभव कर सकता है। राह में आने वाली चुनौतियों का सामना कर विपरीत परिस्थितियों में भी सफलता पाई जा सकती है।'

Book Talk : Dark Horse

Sunny Raj

Roll – 65

Session – 2020-22



I am fond of reading various kinds of books like novels, story books, historical books, biography, autobiography and many more in my leisure time. Recently I read a book named 'Dark horse' written by Nilotpal Mrinal.

When we talk about Nilotpal Mrinal, he is 'Sahitya Akadami Young Winner' winning writer from Bihar.

'Dark horse' talks about the struggle of men and women during their life. What do they face?

What do they do to resolve their problems? To whom do they consult to counter their problems? In this book we got to know the story of a boy who went to Delhi for the preparation of Civil Services and met a few known people who helped him in the starting days. He joined coaching, bought books and started studying.

During study he faced too many distractions like partying, visiting places, killing time with friends, love and all. In the first two attempts he was unable to crack even the preliminary exam. His parents were not that much able to give him free hand because of the financial crisis, finally they gave up. He decided to try once more and gave his 100% , used his all time for

study and cracked prelims. After that he isolated himself from all distractions and left his friends and he didn't even call his friends unless he finished his examinations. He cracked civil services this time

and became an IPS officer made his parents proud. His friends didn't crack the exam this time either. They went to their respective places and started doing something for their livelihood. They were successful now. Each character possesses a different quality, zeal, and crave what we have to do is to recognize this and follow it. Ultimately we'll land ourselves wherever we want.



फ़िल्म की बातें: जय भीम

रौशन कुमार

रौल - 58

सत्र - 2020-22



कानून और संविधान ऐसी चीज हैं, जिसकी वजह से हम शांति से रह पाते हैं और चैन की नींद सो पाते हैं। यह सोच कर कि कुछ गलत हुआ तो हमारा कानून और संविधान हमारी रक्षा करेंगे। लेकिन जब कानून ही किसी इंसान को बर्बाद करने का हथियार बन जाए और संविधान के रक्षक ही उसके भक्षक बन जाएं तो क्या होगा?

‘जय भीम’ एक ऐसी फिल्म है जो समाज के वास्तविक मुद्दों को लाने के लिए सिनेमा का सबसे बढ़िया इस्तेमाल करती है। ‘हेबियस कार्पस’ एक कानून है जब किसी इंसान को पुलिस या कोई अन्य संस्था बिना किसी सबूत के गैर कानूनी रूप से गिरफ्तार कर लेती है तब इस कानून के द्वारा कोर्ट पुलिस को उस इंसान को कोर्ट के सामने प्रस्तुत करने के लिए आदेश देती है।

फ़िल्म जय भीम में गांव के एक बड़े आदमी के घर चोरी हो जाती है और शक जाता है एक निम्न जाति के आदमी पर जो सांप पकड़ने का काम करता है। यहां निम्न जाति का जिक्र करना बहुत जरूरी है क्योंकि शक करने का पहला कारण ही यही होता है कि ‘वे लोग’ ही चोरी कर सकते हैं, जो अपने पेट भरने के लिए सांप और चूहे पकड़ने का काम करते हैं।

यह तो सिर्फ शुरुआत थी उस कानूनी प्रक्रिया की जिसमें पुलिस अपनी शक्तियों का गलत इस्तेमाल कमजोर को जबरदस्ती चोर साबित करने के लिए करती है। आदमी हो या औरत, हर किसी को कपड़े उतार कर जेल में डाल कर दिन-रात सिर्फ मारा-पीटा जाता है।

यह कबूल करने के लिए कि चोरी करना इन ‘छोटी जात’ वालों की आदत है और लालच इनके खून में है। पुलिस का यह सपना पूरा हो जाता अगर एक सच्चा दिल और तेज दिमाग का एक वकील इस केस को अपने हाथों में ना लेता। चंद्रु, एक वकील है जो हमेशा न्याय के लिए लड़ते हैं। सामने ऊंची जाति वाला है या निम्न जाति का, इससे उनको कुछ फर्क

नहीं पड़ता। इनके लिए भीमराव अंबेडकर सिर्फ एक तस्वीर नहीं है, बल्कि एक सच्चाई है और सोच है, पूरी दुनिया को साथ में जोड़ने के लिए। फ़िल्म के एक दृश्य में वकील चंद्रु के घर के दीवार पर तीन तस्वीरें टंगी होती है। एक डॉ. भीम राव अम्बेडकर की, दूसरी पेरियार की और तीसरी कार्ल मार्क्स की। फ़िल्म अपने मूल संदेश इस दृश्य की माध्यम से साफ कर देती है। ये तीनों लोग शोषितों के पक्षधर रहे हैं। यह फ़िल्म भी उनकी ही हक की बात उठाती है। केस में अनोखा मोड़ आता है जब चंद्रु जिनका केस लड़ रहे होते हैं, वे लोग अचानक से पुलिस स्टेशन से गायब हो जाते हैं। पुलिस के लिए तो बस एक अपराधी भागा लेकिन एक परिवार के लिए उनका सब कुछ खो गया। फिर यहां ‘हेबियस कार्पस’ की मदद ली जाती है जिसके बाद केस के ऐसे-ऐसे छुपे हुए सच बाहर निकलते हैं जो सिर्फ एक केस को नहीं बल्कि हजारों केस में होने वाली गड़बड़ियों और भेदभाव को सामने रख देते हैं।

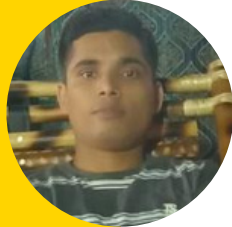
इस फिल्म को आज के समय में बनाना जितना महत्वपूर्ण है उससे कई गुना मुश्किल भी है। क्योंकि कानूनी व्यवस्था और समाज को आईना दिखाने के लिए हिम्मत चाहिए। इस फिल्म को इतने सामान्य तरीके से बनाया गया है कि अंत होते होते इस फिल्म के सभी किरदार आपके अपने हो जाते हैं। उन पर की गई यातनाएं आपको महसूस होती हैं। किरदारों के नाम पर भेदभाव को पूरी तरह से सामने लाया गया है। फिल्म में पुलिस और सरकार दोनों के ऊपर सवाल उठाए गए हैं। जो कानूनी तरीके केस कहानी में दिखाये गये हैं वह इतना वास्तविक है कि दिल और दिमाग पूरी तरह से फिल्म से जुड़े रहते हैं। शुरुआत से ही फिल्म जिन अभिनेताओं को सामने प्रस्तुत करती है, उनके कमाल के अभिनय के कारण फिल्म नवीन और ऑथेंटिक लगती है। सबसे बढ़िया है कोर्ट रूम का दृश्य जिसको बिना बढ़ाएं-चढ़ाए एकदम सामान्य तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

यह फ़िल्म मूल दक्षिण भारत की फ़िल्म है। हिंदी में ऐसी फिल्में शायद बनना बंद हो गई है। पिछले कुछ सालों में दक्षिण भारत की फिल्में जैसे कर्णन, असुरन, जय भीम, काला दलित अस्मिताओं का परचम बुलंद करते हुए आंख में आंख डाल कर इस समाज को उनकी हकीकत बताने का काम कर रही है। हिंदी फिल्में दक्षिण की फिल्मों के सामने बौना साबित हो रही हैं।

शहर, गांव और तनाव

भारत की आत्मा गांवों में निवास करती है। आज भी हमारे देश की अधिकतर आबादी को कृषि में रोजगार गांव में ही मिल जाती है। जब भूख खत्म करने की बारी आती है तो हमारे अन्नदाता ही याद आते हैं, पर आधुनिक युग में आर्थिक समस्या के कारण गांवों से शहरों की ओर लोगों का पलायन होने लगा। उनकी आवश्यकताएं बढ़ने लगीं, उनके मन में नए-नए तरह के सपने हिलकोरे भरने लगे जिसकी पूर्ति के लिए उन्होंने शहरों की ओर पलायन करना शुरू कर दिया। जब तक गांव के लोगों की जरूरत कम थी उनमें भाईचारा, मानवता और परोपकार का भाव था। उनमें सहने की क्षमता अधिक थी। लोग अपने समाज और संस्कृति से जुड़े हुए थे। क्षमा, दया और त्याग का भाव ज्यादा था। लोग एक दूसरे के प्रति मर्यादित थे। अपने-अपने कर्तव्यों को समझते थे। संबंधों में मिठास थी। गांव का वातावरण स्वच्छ और सुदृढ़ था। वहां अहंकार, भ्रष्टाचार, दुर्यवहार का कोई स्थान नहीं था। अलग-अलग मकानों में रहने के बाद भी लोगों में प्रेम और सद्भावना की झलक थी।

राहुल देव वर्मन
रौल - 13
सत्र - 2020-22



इसके ठीक उल्टा जब लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए शहरों में गए, तब हमारी जरूरतों की कुछ आवश्यकताएं पूरी तो हुईं पर हमारी समस्याओं ने उस पूर्ति के बदले मस्तिष्क में स्थान बना लिया। मुश्किल चीजों को सहने की क्षमता कम होती गई। गांव में इसका हमें अभ्यास था। पर शहर की चकाचौंध ने हमारे स्वभाव को बदल दिया। जब तक हम गांव में थे बीमारियां कम थी। बचपन मुश्किल में जरूर था पर बाकी जीवन स्वच्छ था। रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरतें तब भी थी जो मुश्किल से आज के समय के मुकाबले पूरी हो पाती थी, किंतु गांव हमें उन अभावों में भी संघर्षशील रहने की क्षमता को बखूबी विकसित करती था।

शहरों ने रोजगार तो दिए लेकिन लोगों में मानवता, क्षमा, दया और त्याग का भाव छिन लिया। शहर ने कुछ बीमारियां तो दूर की, साथ-साथ बहुत सारी बीमारियां उपहार में भी हमें दे दिया। हमारी सेहत सही करने के बजाय और विकृत कर दिया। लोगों में मिलजुल कर रहने की आदतें भाग-दौड़ के समय में खत्म होती गईं। बड़े छोटे की मर्यादा या तो खत्म हो गई या निरंतर इसका अंत होता रहा। लोगों में भागदौड़ के कारण इतने मानसिक तनाव आ गए कि उनके दिलों में क्षमा, दया और त्याग के जगह ईर्ष्या अहंकार, दूरियां और धन लोभ ने ले लिया। धन कमाने के लिए कुछ लोग बड़े-बड़े पदों पर तो आसीन हुए पर उनके सपनों ने उनकी मानवता को खत्म कर दिया। तनाव में वह ईर्ष्यालु और अहंकारी होते गए। कुछ लोगों में सर्वोत्तम होने की प्रकृति ने उनके मस्तिष्क में घर कर लिया फल स्वरूप व स्वदेशी होते हुए परपोषी हो गए। चकाचौंध की माया ने उन्हें अपने जाल में फंसा लिया। नतीजा यह हुआ कि जहां लोग ऐसे लोगों की पूजा करते उनसे नफरत करने लगे। इन्होंने प्रकृति के खिलाफ अपने लिए एक अलग दुनिया बना ली। जहां इनका अस्तित्व होते हुए भी यह अस्तित्व विहीन नजर आने लगा। यह सब बड़े सपने देखने और तनाव का ही तो एक परिणाम था जो शहरीकरण ने उन्हें दिया।

मैं मानता हूं कि विज्ञान का विकास शहरों ने किया पर साथ में हमें कई तरह के प्रदूषित बीमारियां भी उपहार में दी। हम एक दूसरे के प्रति इतने व्याकुल हो गए कि हमने मानवता की रक्षा के लिए कोई विकास नहीं किया पर युद्ध की रक्षा के लिए बड़े-बड़े बमों का विकास कर लिया। जिसके विस्फोट होने पर शायद मानव समाज का अस्तित्व ही खत्म हो सकता है। इसलिए मानवता के होते हुए शहरों में इस हास को खत्म करने के लिए अपने अंदर जनचेतना क्षमा, दया और त्याग के विचार को पुनः जिंदा कीजिए। जिससे आपके अंदर उत्पन्न तनाव आपके मन मस्तिष्क में घर ना बना सके। गांव और शहरों के बीच की दूरियां कम की जाए और प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित किया जाए। ताकि मानव अपनी सभ्यता बनाए रखने में सफल हो।

धर्म के नाम पर ध्वनि प्रदूषण करना

अभिषेक कुमार

रौल - 85

सत्र - 2020-22



सच्चे धर्म से निकलने वाली ध्वनि सदैव ही प्रदूषणकारी नहीं अपितु कल्याणकारी होती है। इस ध्वनि से ही जन-जन तक धार्मिकता का प्रभाव होता है, जो उसे सन्मार्ग पर सतत अग्रसर करती है। विज्ञान द्वारा तथ्यों के आधार पर धर्म की ध्वनि को नकारात्मक सिद्ध करने का प्रयास किया जाता रहा है, किंतु मानवीय मूल्यों ने सापेक्षित आधार पर सकारात्मक ही बनाया है। इसी प्रकार जहां औद्योगिक प्रतिष्ठानों से निकलने वाला धुआं हमारी प्रकृति एवं वातावरण को विषाक्त बनाता है, वहीं पर धार्मिक अनुष्ठानों व यज्ञ आदि से निकलने वाला धुआं दूषित वातावरण को स्वास्थ्यप्रद बनाता है।

यदि इतिहास का दार्शनिक वर्णन किया जाए तो यह उजागर होता है कि शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन हो या सन्यासी विद्रोह हो, धर्म की ध्वनि के आधार पर ही भारत ने लोगों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। फाहियान, व्हेनसांग आदि भारत आकर अपने अनुभवों के आधार पर अपने देश समाज में व्याप्त कोलाहल को शांत कर पाए इसीलिए भारत 'जगतगुरु' कहलाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारा संविधान प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार प्रदान करता है कि वह अपने धर्म, जाति और समुदाय का प्रचार एवं प्रसार करे। यह प्रदूषण नहीं बल्कि एक दूसरे धर्म

के प्रति जो भ्रम है उसे दूर करता है। धर्म की ध्वनि के आधार पर ही सांप्रदायिक सौहार्द कायम रखा जा सकता है। विकास के नाम पर अंधाधुंध प्रदूषण से इसे अलग कर देखा जाना चाहिए।

संविधान में भी स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्गत भाग-3, अनुच्छेद-19 में धर्म को प्रचारित करने की स्वतंत्रता सभी नागरिकों को प्रदान की गई है। वास्तव में सच्चा धर्म सदैव ही कल्याणकारी होता है।

अच्छा है क्या?



प्रिंस राज

रौल 2

सत्र - 2020-22

संविधान की पूजा करते
फिर उसी के घर के सामने जलाना
अच्छा है क्या ?
जो समाज का पेट है भरते
उसी से भूख हड़ताल करवाना,
अच्छा है क्या ?

जो समाज को शिक्षित करते
फिर उसी पे डंडे चलवाना,
अच्छा है क्या ?
जो समाज की सफाई करते
फिर उसी की उपेक्षा करना,
अच्छा है क्या ?

जिसके बल पे तुम
अपनी सीना चौड़ा करते
उसी को बेरोजगार रखना,
अच्छा है क्या ?

जाति को खत्म करने की बात है करते
फिर जाति के नाम वोट माँगना,
अच्छा है क्या ?

मेरे शिक्षक, मेरी प्रेरणा

अनुप्रिया वर्मा

रौल नं- 21

सत्र - 2020-22



जब भी कहीं शिक्षक का जिक्र आए,
आपकी ही छवि याद आती है मुझे।
आपके दिए ज्ञान पर चलकर ही,
मिलती है संतुष्टि मुझे।
आज भी याद है मुझे आपकी वह छवि,
खुद टूटी साइकिल से चलना,
फटे पुराने कपड़े पहनना,
पर दूसरों की सेवा को हमेशा तत्पर रहना,
और एहसान की भावना तक न रखना।
आप ही से तो सीखा मैंने,
किताबी ज्ञान का सीमित है मोल,
पर व्यावहारिक ज्ञान कहीं ज्यादा है अनमोल।
इस बदलती दुनिया में चाहे हो
झूठ का बोल बाला,
पर आज भी सच्चाई और
अच्छाई का नहीं है कोई तोड़।
हां याद है मुझे आज भी वो पल,
आपने ही दिखाया था एक सपना मुझे,
भरी थी आग मुझ में, उसे पूरा करने को,
अफसोस मैं पा न सकी उस मंजिल को।
समय के साथ संजोया है मैंने एक सपना नया,
आपके जैसे ही बनूं एक शिक्षक खास।
आपके दिए ज्ञान पर चलकर,
लाऊंगी रक्षाजग में एक नया प्रकाश।



आर्ट : अनुप्रिया वर्मा

वृक्ष और हम



सचिन कुमार

रौल - 75

सत्र - 2020-22

आओ मिलकर पेड़ लगाए,
दुनिया को हम स्वच्छ बनाये।
इस आधुनिक जगत को
वृक्षों की महता बतलाए।
वृक्ष की ऐसी परिभाषा दे हम,
जिससे सागर भी हो नम।
जुड़ा है जिससे श्वास का बंधन,
जिसकी तुलना मे धन भी है कम।
बिना वृक्ष संसार नहीं है,
सृष्टि का आधार यही है।
आओ मिलकर वृक्ष लगाए,
धरती से सोना उपजाएँ।
कुछ भी न मांगे वृक्ष ये हमसे,
फिर भी ये मानव क्यों न समझे!
प्रकृति का वरदान है वृक्ष,
पर्यावरण की जान है वृक्ष।
प्राण वायु हर क्षण ये देते,
उसकी कुछ कीमत भी न लेते।
निस्वार्थ सब कुछ दे देते,
ये कितने उपकारी है।
इस पूरे संसार मे क्या कोई पेड़ों सा हितकारी है!
फिर भी इन पेड़ों के ऊपर मानव का अत्याचार
जारी है।
आओ मिलकर कसम ये खाएं,
पेड़ न हमसे अलग हो पाएँ।
नव युग के निर्माण की खातिर,
पेड़ों की संरचना न ढाएँ।
आओ मिलकर पेड़ लगाए,
दुनिया को हम स्वच्छ बनाये।

जूही बाला कर्ण
रौल नंबर - 73
सत्र - 2020-22



विविधता में एकता मात्र एक वाक्यांश नहीं अपितु यह हमारे राष्ट्र में सहस्र शताब्दियों से चली आ रही संस्कृति, शिक्षा, मानवता एवं धारणा का द्योतक है, साथ ही यह हमारे राष्ट्र को इंगित करने वाली विश्वव्यापी पहचान है।

“विभिन्न रंगों से सुशोभित, दमकती एवं विविधताओं को खुद में समेटती तितली, विश्व मंच पर विश्व गुरु भारत की है पहचान कराने निकली।”

जिस प्रकार तितली का आकर्षण हमारे मन को हर लेता है, ठीक उसी प्रकार विविधताओं से भरा हमारा देश विश्व के अन्य लोगों का मन हरकर उसे अपने पास आकर्षित करता है। तितली रूपी विविधता खुले आसमान में विचरती, घूमती एवं स्वयं में मगन हुई खिलती ही मनोहर होती है परंतु यदि हम इसे अपनी मुट्ठी में स्वार्थ की पराकाष्ठा में, लालच की जंजीरों में जकड़ने का प्रयास करते हैं तो यह अपना दम तोड़ देती है। यह आकर्षक रूप विध्वंसक व भयावह हो जाता है। विभिन्न धर्म, भाषा, वेशभूषा, स्थान, रूप, रंग आदि विविधताओं से परिपूर्ण देश भारत की ओर, जब शत्रु आंख उठाकर देखता है तो इन सभी लोगों को भारतीय झंडे के नीचे खड़ा पाता है। विविधता में एकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण भारत की आजादी के समय देखने को मिला।

यहां के लोग राष्ट्र की एकता एवं अखंडता बनाए रखने हेतु अपने प्राण न्यौछावर करने को तत्पर रहते हैं।

विविधताओं को समेटता भारतीय इतिहास

भारत एक सहिष्णु देश है और सभी को समाहित करने की इसकी संस्कृति रही है। बाहर से काफिले आए, यहां आकर बसे और फिर यहीं के

होकर रह गए। तभी तो कहा गया है - "काफिले बस्ते गए हिंदुस्तान बनता गया।" तमाम आने वाले भारत आए तो आक्रमणकारियों के रूप में किंतु यहां आकर यहां की संस्कृति में ऐसा रच बस गए कि वे यहीं के होकर रह गए और भारतीय कहलाने लगे। यही से हमारी विविधताओं से भरी मिली-जुली संस्कृति का सूत्रपात हुआ। विदेशियों ने जहां भारतीय संस्कृति को अंगीकृत किया वहीं अपनी संस्कृति की छाप भी छोड़ी। इस प्रकार हमारी संस्कृति परिष्कृत और परिमार्जित भी हुई तथा इसी मेल-जोल से भारत की विविधताओं से भरी संस्कृति विकसित व समृद्ध हुई।

विविधता में एकता का धार्मिक दृष्टिकोण

जहां कुछ देशों के शासकीय नामों में शामिल हैं किसी धर्म विशेष का स्थान, वहीं भारत के हर गलियों में श्री राम, ईसा मसीह, अग्नि देव, अल्लाह एवं वाहे गुरु का नाम है गुंजायमान।

भारत में धार्मिक विविधताओं में एकता इसके शासकीय नाम 'गणतंत्र' भारत से ही झलकती है, जहां भारतीय संविधान में किसी धर्म विशेष को स्थान नहीं दिया गया है वहीं पड़ोसी देश पाकिस्तान का शासकीय नाम 'इस्लामिक स्टेट ऑफ पाकिस्तान' है।

भारत में अनेक धर्मों, समुदायों, जातियों एवं कबीलों के लोग एक साथ रहते हैं तथा अपने धार्मिक अनुष्ठानों को शांति पूर्वक एवं मिलजुल कर, एक दूसरे की संस्कृतियों की अच्छाइयों को आत्मसात करते हुए विभिन्न रीति-रिवाजों एवं त्योहारों का आनंद उठाते हैं। ऐसी मानवता एवं सुव्यवस्था सदियों से चली आ रही है तथा भारतीय संविधान ने धर्मनिरपेक्षता का जिक्र कर ऐसी व्यवस्था में चार चांद लगा दिया है।

शैक्षिक दृष्टिकोण से विविधता में एकता

“भारत की शैक्षिक नीति मिसाल बनी जिसकी ऐसी है खासियतें, कि यहां के ज्ञानी भी अल्प शिक्षित अतिथियों के पांव हैं पखारते।”

चूँकि भारत विविधताओं से भरा देश है अतः यहां के शैक्षिक स्तर एवं गुणवत्ता में भी भिन्नताएं दृष्टिगोचर होती हैं। ये भिन्नताएं ना सिर्फ अलग-अलग समुदाय, धर्म, जातियों में हैं बल्कि एक ही वंश के विभिन्न सदस्यों में भी दृष्टिगोचर होती है।

तमाम विविधताओं के बावजूद भारत का प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की भावनाओं को आहत न करते हुए भारत में प्रदान की जा रही शिक्षा के अतुल्यनीय महत्वों मूल्यों एवं शिक्षा के वास्तविक अर्थ को प्रदर्शित करता है। भारत में शिक्षा का मूल मंत्र मानवता है जिससे यहां विविधताओं में एकता बरकरार है।



क्षेत्रीय दृष्टिकोण से विविधता में एकता

**"यहां कोस कोस में बदले मिट्टी व पानी
पांच कोस में बदले खानपान व वाणी।"**

भारत के लोग ही नहीं बल्कि यहां प्रकृति भी विविधता में एकता का संदेश देती है। जल स्थल मंडल एवं नव में सभी तरह के जीव विविध होते हुए भी एक समुदाय पारिस्थितिकीय तंत्र में रहते हैं। रंग रूप स्वभाव आकार भोजन गुण आदि में भिन्न होने के बावजूद विविधता में एकता प्रकृति की पहचान है।

भारतीय भूमि अनेक विविधताओं जैसे बर्फ से लदी ऊंची पर्वत, घाटियां, महासागर, नदियां, जंगल, मैदानें, रेगिस्तान, अनेक प्रकार की मिट्टियों आदि से शोभायमान है। तथा इस भूमि पर अनेक भाषाएं बोलने वाले लोग इसकी शोभा बढ़ाते हैं तथा ऐसी मनमोहक व्यवस्था से चहुँओर एकता का गान विद्यमान रहता है जिस कारण विदेशी अपने जीवन काल में भारत के दर्शन को ललायित रहते हैं।

विविधता में एकता को बनाए रखने की चुनौतियां

"विभिन्न उपयोगिता के बर्तन जब

एक स्थान पर रखे जाते हैं,

तब उनकी स्वाभाविक टकराहट

अप्रिय एवं कर्णवेधन शोर मचाते हैं"

भौगोलिक विविधताओं से भरे भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवां बड़ा देश है तथा मानवीय विविधताओं से भरा विश्व का दूसरा बड़ा देश है। अतः इन सभी में समरसता एवं एकता बनाए रखने के लिए अनेक कठिनाइयों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये भिन्नताएं निम्न कारणों से बढ़ती हैं: शिक्षा के स्तर एवं गुणवत्ता में कमी, बेरोजगारी, भूखमरी, धार्मिक कट्टरपंथी, विशाल जनसंख्या के आवश्यकताओं की पूर्ति ना कर पाना, जात-पात, रंग रूप, शारीरिक बनावट, भाषा, बोली एवं लिंग आदि के आधार पर भेदभाव आदि है। इन सभी कार्यों में सर्वश्रेष्ठ कारक शिक्षा के स्तर एवं गुणवत्ता में कमी है, साथ ही यहां की राजनीतिक पार्टियां अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु इन दरारों और टकराव को और भी अधिक गहरा कर देती हैं।

विविधता में एकता को संजोए रखने के उपाय

विविधता में एकता को संजोए रखने के लिए हमें हमारी शिक्षा व्यवस्था को सरल, सुदृढ़ एवं लचीला तथा गुणवत्तापूर्ण बनाए रखना होगा। यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति ना केवल शिक्षित हो बल्कि वह शिक्षा के महत्व एवं मूल्यों को भी समझता हो। सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में विविधता में एकता बनाए रखने का एकमात्र मूल मंत्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है, जिसकी मदद से व्यक्ति एवं पूरा विश्व सहिष्णु बन सकता है तथा एकता के पथ पर आगे बढ़ सकता है। अपनी कट्टरपन के कारण अपवाद बने लोगों एवं देशों को नजरअंदाज करने हेतु कवि रहीम के निम्न दोहे में बताई गई बातों का पालन करना चाहिए।

"जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।

अर्थात् हमें किसी भी परिस्थिति में अपने नैतिक मूल्यों को नहीं खोना चाहिए तथा विषम लोगों एवं परिस्थितियों में भी विविधता में एकता को बढ़ावा देना चाहिए।

आत्मनिर्भर बनता भारत

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व आर्थिक मंच के दावोस एजेंडे को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये संबोधित किया जहां उन्होंने कोविड, क्रिष्टो करेंसी, जलवायु परिवर्तन तथा सुधार की बातें की।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में व्यापार करने की सुगमता के लिये सरकार ने कई प्रयास किये हैं अतः भारत अभी विश्व भर में सबसे बेहतरीन निवेश का स्थान है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि सम्पूर्ण विश्व अभी कोविड-19 की महामारी से जूझ रहा है तथा उसके कारण हुए आर्थिक, संरचनात्मक तथा अन्य दुष्प्रभाव से दो साल बाद भी निकलने का भरसक प्रयास वैश्विक स्तर पर किया जा रहा है। ऐसे में प्रधानमंत्री का वैश्विक मंच से विदेशी निवेशकों को भारत में निवेश के लिए आमंत्रित करना एक साहसिक तथा स्वागत योग्य कदम है।

मनोहर दत्त मिश्रा

रौल - 74

सत्र - 2020-2022



2020 में जब कोविड महामारी ने भारत में कदम रखा था तब प्रधानमंत्री ने 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की शुरुआत की थी जो कि कोविड के बाद सुधार की दिशा में भारत का पहला प्रयास था। दावोस में भी प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भरता तथा दीर्घकालिक दृष्टि की तरफ सबका ध्यान आकृष्ट किया है। कोई भी निवेशक जोखिम भरे आर्थिक माहौल में निवेश नहीं करना चाहता है। वह हमेशा लंबी अवधि के लिए कहीं भी निवेश करता है ताकि बेहतर लाभ मिल सके। प्रधानमंत्री ने साफ तौर पर कहा कि वो उत्पादन को देश में प्रोत्साहित करेंगे साथ ही साथ 14 क्षेत्रों में पीएलआई स्कीम को लागू किया गया है। प्रधानमंत्री जी के 25 वर्षीय योजना से यह बात स्पष्ट है कि आने वाला वक्त निवेशकों के लिए बेहतरीन वक्त साबित होगा। कोविड-19 महामारी के बाद से भारत सरकार ने सुधार की प्रक्रिया को तेज

कर दिया है मसलन भूमि सुधार, कर सुधार, व्यापार सुधार, श्रम कानून में सुधार। भारत में विश्व की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है तथा वैश्विक अनवीकरणीय ऊर्जा का मात्र 5 प्रतिशत इस्तेमाल करती है जिससे यह साफ स्पष्ट होता है कि भारत जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या का समाधान संपोषणीय विकास के तरीके से करना चाहता है। जाहिर है इसका लाभ निवेशकों को भी मिलेगा। इसके अतिरिक्त फार्मा के क्षेत्र में भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश है जो कि बेमिसाल मूल्य और बेहतरीन गुणवत्ता के दवाइयां विश्व भर में मुहैया कराता है। इसका जीता-जागता उदाहरण हमने तब देखा जब भारत ने सभी ज़रूरतमंद देशों को कोरोना वाइरस के खिलाफ जंग लड़ने के लिए प्रचूर मात्रा में टीके उपलब्ध करवाए। इस कारण पूरा विश्व अब कोविड महामारी से लड़ने के लिए भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा है। अतः भारत फार्मा क्षेत्र में निवेश हेतु सबसे बेहतरीन स्थान है। यदि हम रक्षा क्षेत्र की बात करें तो पहले हम रक्षा उपकरणों के आयातक थे किंतु अब हम इसके निर्यातक बन गये हैं। अब दूसरे विकासशील देशों से हमारे पास इसके निर्यात हेतु आर्डर भी आने लगे हैं जो कि हमारे देश के आर्थिक विकास के लिए एक बेहतरीन अवसर है।

देश की आधारभूत संरचना को मजबूती देने हेतु 'प्रधानमंत्री गति शक्ति मास्टर प्लान' की शुरुआत की गई है जिसके अंतर्गत सभी बड़े नगरों को छोटे शहरों के साथ जोड़ा जाएगा जिससे माल की आवाजाही में सुविधा होगी।

कुल मिलाकर भारत ने सुधार की प्रक्रिया में बहुत बेहतर कार्य किये हैं तथा विश्व आर्थिक मंच से वैश्विक निवेशकों को भारत में निवेश के लिए आमंत्रित करने का यह अच्छा अवसर था जिसका लाभ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने उठाया। इससे आने वाले वक्त में भारत की आर्थिक गति को बल मिलेगा तथा ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

A visit to Lotus Temple

Recently, I was in Delhi with my fast friend Abhimanyu. Our night stay was in a hotel room which was situated in Paharganj area of Delhi. At night, we planned a visit to Lotus Temple. About 8 o'clock in morning, we checked out from our hotel and took a ride of a blue and violet line metro service of DMRC to reach nearest metro station of Lotus Temple called 'Kalkaji Metro Station'. The day we had chosen to visit the temple was Sunday, so huge gathering of people and long queue were outside the entrance of the temple. After waiting for long time in queue, we both succeeded to enter the temple.

It had various trees and decorative plant of flowers. The main attraction of the whole temple compound was the Lotus shaped structure. There were many fountains around the temple which were enhancing the beauty of the place.

We clicked a lot of selfies, group photos and photos of the scenery around us to save this moment as a memory for a long time. There was a decorated Auditorium like scene filled with many benches which were for devotees and meditators to pray and also several lamps which were lightened at the time of worship.

There was also a museum which showcases the importance and history



The Lotus temple actually was a shrine and meditation place of 'Bahai Faith'. It was built in 1986. The design of the temple was influenced by the national flower of India 'Lotus' so it's called Lotus temple. The temple had spacious and elegant compound with lawn and beautifully tiled pedestrian.

of this temple and 'bahai faith'. The temple was designed by Iranian architect. Around 3 o'clock, we walked out from the temple and took a ride of the same metro line to reach our stay.



Ashutosh Kumar
Roll - 69
Session - 2020-22

लफ़्ज़ आजाद हैं

-अवनीकान्त अनु

अनसुना है पर बोल आजाद हैं,
गुमसुम-सा हूँ पर सोच आजाद है,
ठहरा हूँ, घुट रहा हूँ पर इरादे बेबाक है।
क्यों कोई कैद रहे समाज की बुने इन जंजीरों में,
क्यों कोई मौन रहे
शोर करती सोच की इस समंदर में,
दौड़ती भागती हार की इन लकीरों में
कई ख़्वाब दिखाए थे,
सोचा था सब होंगे सच
पर ये जख्म बड़े हरजाई थे,
उड़ा ले गये आँखों से जो दुनिया
एक बसाई थी,
पैर जमीन पर खड़े थे लेकिन
हौसलों की चाल लड़खड़ाई थी।

Education is Power

Sugandha Priyadarshni

Roll - 100

Session - 2020-22



Education means an overall and all round development of a person. It is a tool by which we can get what we desire. Power means to have enough courage to do something or to act. Education gives people that power of ability and courage to change their lives and the lives of others. It is the most empowering force in the world. It creates knowledge, builds confidence and breaks down all the barriers to opportunity.

It gives us power to judge and speak frankly about what is right and what is wrong. It gives us the power to make decisions of your own.

Through education of life and learning, we can enlighten ourselves and plunge into the infinite source of knowledge and power as "Buddha" did. Education doesn't only make us successful but also a valuable person. A person with value and education is the best. Without values we are mere animals, not intellectuals .

I personally believe that education is the key to power.

Without education we are unable to act according to the power we have. It is seen worldwide that an educated mother knows well about her child and that's why the child has the least possibility of getting malnutrition.

Mahatma Gandhi also said, " If you want your nation to be progressive then you must educate your women." Henry Johnson Jr. said that "Education is Liberation and Knowledge Is Power". Nobel Prize winner Nelson Mandela also said that " Education is the most powerful weapon which you can use to change the world."

Thus, I say that without education we are unable to build our future better than the present. Every educated person is powerful but every powerful person need not to be educated. It is truly said that "A pen is mightier than a sword."

चार कविताएं : नदी

सुधाकर रवि

रौल - 29

सत्र - 2020-22



नदी : एक

नदी किनारे ही मानव ने बसाई थी अपनी बस्ती
नदी किनारे ही किया था सभ्यता का निर्माण
और धीरे-धीरे फैलता गया पूरे
धरा पर उनका संसार
पर आज नदी
दूर भागती जा रही है इसानों से
सूखती जा रही है,
नदी सूखती जा रही है.

या विलीन होती जा रही है

सभ्यता ?

क्या इंसान में इंसान
शेष बचा है ?

नदी : दो

एक लड़की ने बांग्ला में पूछा कि
'क्या नाम है?'
मैंने बिना समझे सकुचाते हुए कहा
'ठीक हूँ'
फिर दोनों चुप रहें,
खोजने में एक-दूसरे को
समझ में आने वाले शब्द।
एक भाषा जानते हुए
आप प्यार नहीं कर सकते,
एक भाषा जानकर आप सिर्फ
यह बता सकते हैं कि
नदी का रंग नीला है या मटमैला।
नदी कहाँ ज़्यादा
गहरी है , कहाँ कम
कई भाषाएं जाने बिना संभव नहीं।

नदी : तीन

पति से मार खाई हुई स्त्री ,
जब रात दूसरे पहर रोती है, अकेले
रात की नीरवता करती हुई भंग
कोई नहीं आता चुप कराने
सिवाय नदी के
एक ही धरा पर बहती हुई नदी
बंटती है कई-कई देशों के बीच
बहती है कई-कई नामों से
जन्म से मृत्यु तक एक ही स्त्री
रहती है कई-कई पुरुषों के अधीन
कई-कई संबंधों में बंध कर
नदी और स्त्री की नियति एक ही है
चुपचाप बहते जाना, चुपचाप सहते जाना

नदी : चार

पितरों के पिंड हाथ में उठाए लोग
खोजते रहते हैं तपती रेत में नदी
विष्णु के पैर में फट पड़ती हैं दरारें
कृष्ण के चरण स्पर्श कर,
यमुना तो पा जाती है मोक्ष
जानकी के श्राप से धंसी रहती है
फल्गु जमीन के भीतर ही
बिना पानी के नहीं मिल पाता
पितरों को रत्ती भर मोक्ष
यह नदी होने का सौभाग्य भी है
और श्राप भी
कि पानी पर तैरता रहता है
राम सेतु का पत्थर
लेकिन सरयू में डूब जाते हैं
मर्यादा पुरुषोत्तम राम

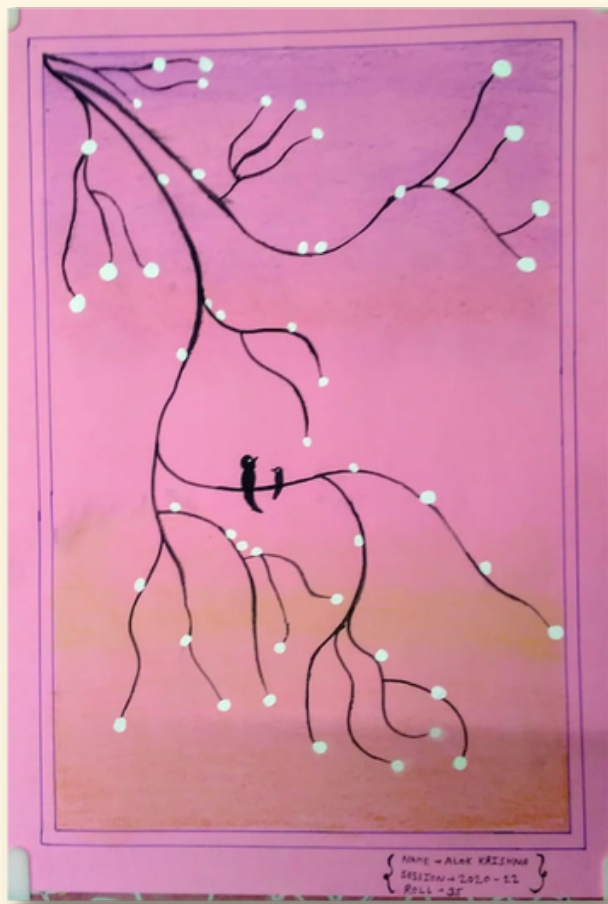


निधि वर्मा
रौल - 61

आर्ट : अनुप्रिया वर्मा



अनुप्रिया वर्मा
रौल - 21



आर्ट : कीर्ति कुमारी



आर्ट : आलोक कृष्णा

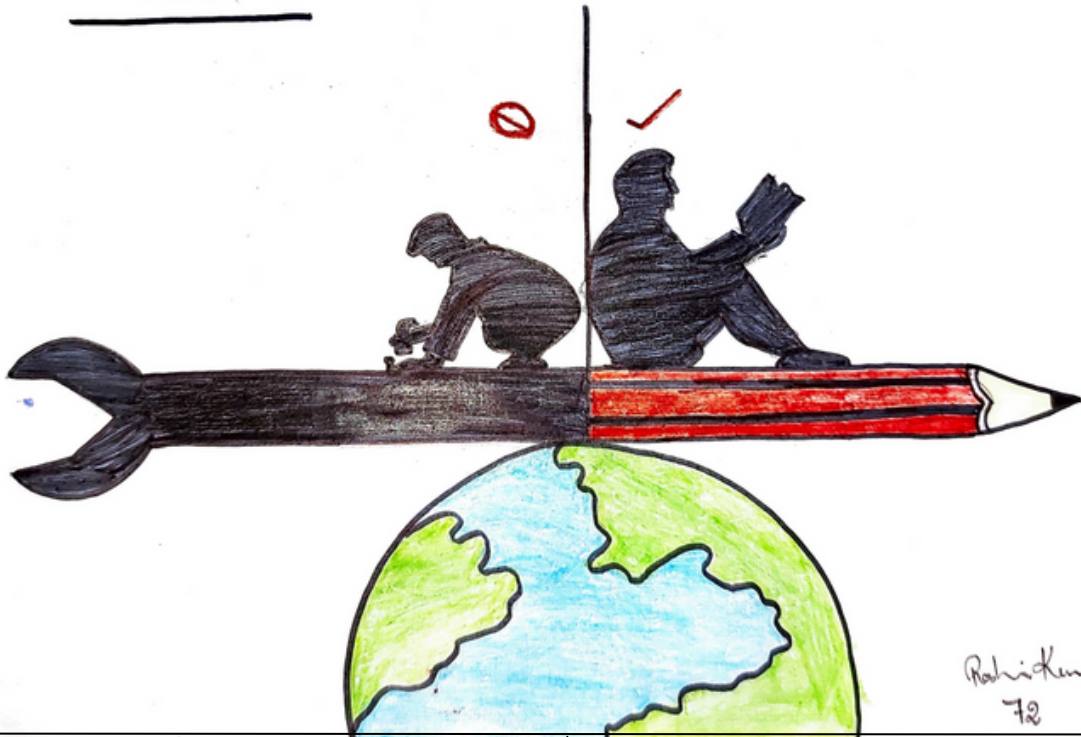


आर्ट : नीरजा कुमारी



नीरजा कुमारी
रौल - 96

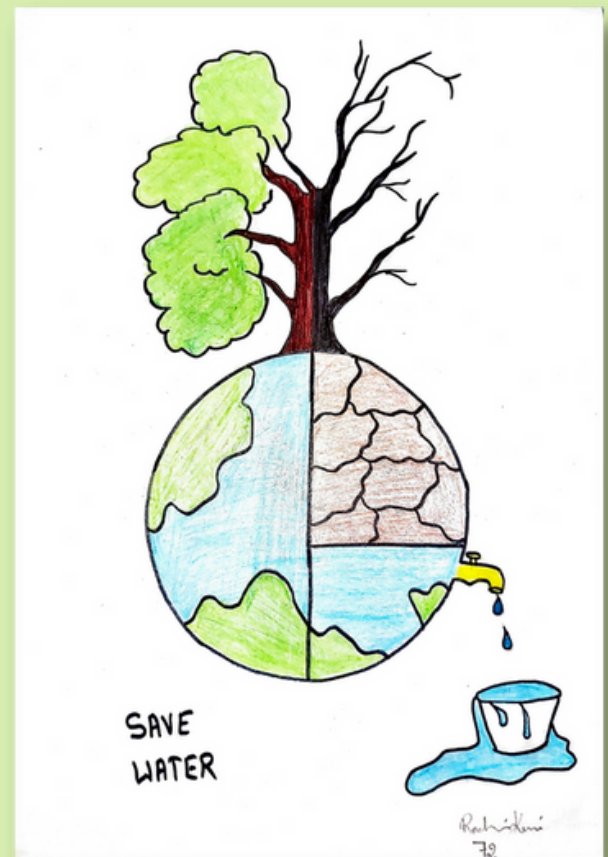
STOP CHILD
LABOUR



Rohini Kumari
72



Koshani K
Roll No-72

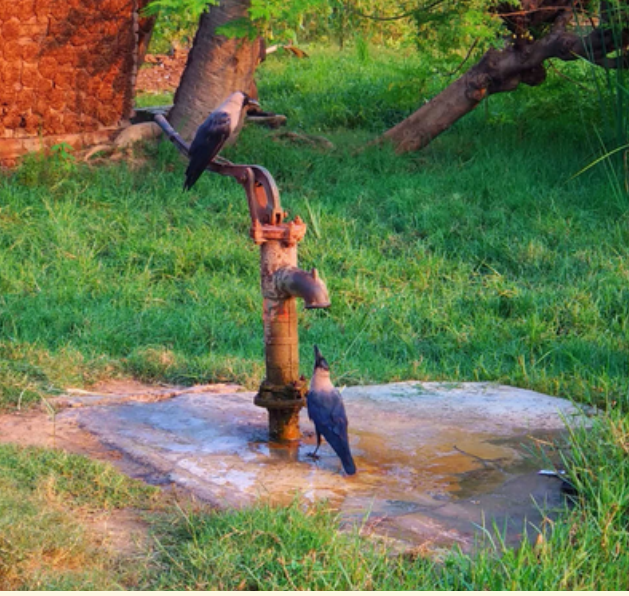


SAVE
WATER

Rohini
72

आर्ट : रौशनी कुमारी

फोटोग्राफी



बिन पानी सब सुन
फोटो - सुधाकर रवि



हम पंछी उन्मुक्त गगन के
फोटो - भास्कर प्रियंबुद



ओ री चिड़िया, अंगना में फिर आजा रे
फोटो - अभिषेक कुमार 87



मेघ आएँ बन ठन के संवर के
फोटो - रौशन कुमार



ये खुला आसमाँ, ये हसीं वादियाँ
फोटो - जूही बाला कर्ण

फोटोग्राफी



हम पंछी उन्मुक्त गगन के, पिंजर बंद ना रह पाएंगे
फोटो - निधि वर्मा



घर को जब लौट रहे हो बादल
फोटो - आनंद कुमार



मेरी भी आभा है इसमें
फोटो - प्रशांत कुमार



दूर कहीं छाह तो है
फोटो - रवि कुमार



फोटो - राहुल कुमार

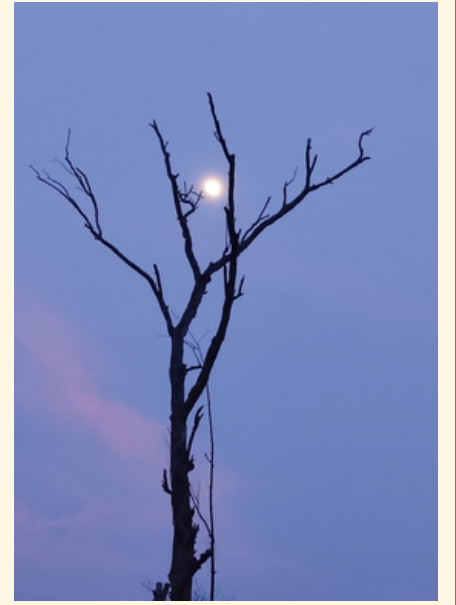
फोटोग्राफी



फोटो - राजकिरण कुमार पटेल



फोटो - आशीष कुमार



फोटो - आशीष रंजन



फोटो - सत्री राज



फोटो - कमलेश कुमार

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया - 823001



महाविद्यालय मुख्य भवन(प्रशासनिक)



सुजाता छात्रावास



गौतम छात्रावास



स्वतंत्रता दिवस समारोह - 2021



शिक्षक दिवस समारोह - 2021



शैक्षणिक परिभ्रमण - गेहलौर घाटी

खेल महोत्सव - 2021



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस - 2022



शैक्षणिक परिभ्रमण : विश्व शांति स्तूप व जंगल सफारी, राजगीर



'अत्त दीप' का यह अंक आपको कैसा लगा

इसके बारे में राय / टिप्पणी / समीक्षा / सुझाव जरूर दें।

व्हाट्सएप्प - 8804335009

ई-मेल - ctegayapatrika@gmail.com